UNIVERSAL LIBRARY

OU_182649

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No H81.08/C49S Accession No G.H.656

Author चतुर्वेदी, नर्मदेश्वर।

Title संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ।

This book should be returned on or before the date last marked below

संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ

संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ

संपादक
नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

साहित्य भवन लिमिटेड
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण : सन् १९५५ ईस्वी

ढाई रुपया

मुद्रक : रामआसरे कक्कड़, हिंदी-साहित्य प्रेस, इलाहाबाद

यह ग्रंथ उसे अर्पित सप्रेम,
जिसका जीवन-संगीत मधुर
सुख-सपनों-सा अति पास - दूर ।

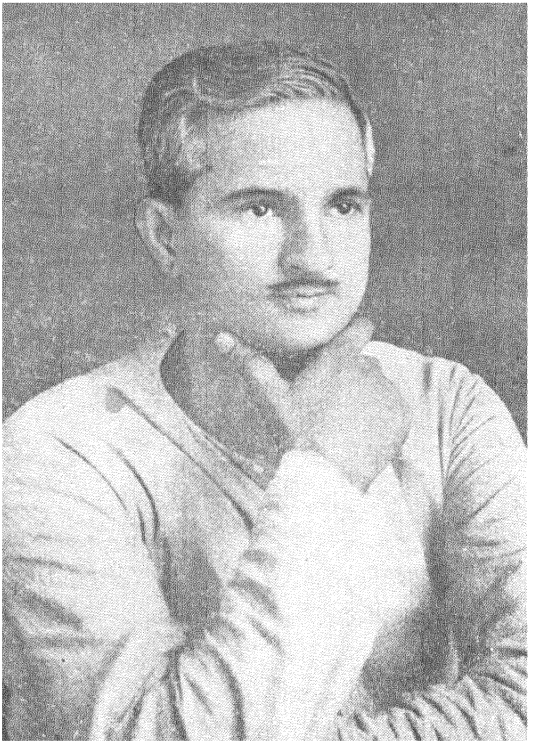

नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

आभार-प्रदर्शन

'संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ' को तैयार करने में मेरे मित्रों और शुभचिंतकों ने जिस उत्साह एवं उदारता से अपना सुझाव तथा सहयोग दिया, उसके लिए मैं हृदय से उनका आभारी हूँ। भोलानाथजी तिवारी और श्याममनोहर जी पांडेय विशेष रूप से मेरे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। परंतु श्री जगन्नाथ प्रसाद बदौआ 'गुरु' की सहायता के बिना यह कार्य कठिन हो जाता; उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। श्रीमती पुष्पा कौशिक द्वारा निर्मित '[illegible]' का चित्र उपयोग करने के लिए मुझे देकर श्री मुलायमचन्दजी जैन, जबलपुर ने अपनी सहृदयता का परिचय दिया। इसके लिए अपने मनोभाव प्रकट करने की मुझे छूट नहीं है। पुष्पा बहन के लिए मैं मंगल-कामना करता हूँ। इनके अतिरिक्त मैं उन सभी लेखकों और संपादकों का उपकृत हूँ, जिनकी पुस्तकों अथवा कृतियों का मैंने उपयोग किया है।

विजया
सं० २०१२

नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

विषय-सूचनिका

१. विहंगावलोकन	... ...	११
२. हिंदुस्तानी संगीत का विकास	...	१७
३. अमीर ख़ुसरो	... ...	३६
४. गोपाल नायक	... ...	४३
५. हरिदास	... ...	४६
६. बैजू बावरा	... ...	५६
७. तानसेन	... ...	८३
८. कवि-परिचय :	... ...	१४१
अमीर ख़ुसरो	... ...	१४३
गोपाल नायक	... ...	१४५
हरिदास	... ...	१४७
बैजू बावरा	... ...	१५०
तानसेन	... ...	१५२
९. आधार ग्रंथ-परिचय	... ...	१५७
१०. परिशिष्ट	... ...	१६१
अमीर ख़ुसरो	... ...	१६३
तानसेन	... ...	१६३
११. संक्षिप्त सहायक ग्रंथ-सूची	...	१६४
१२. पाठ संबंधी भूल-सुधार ...	...	१६५

विहंगावलोकन

यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने कविता का परिचय संगीत के अंतर्गत दिया है। परंतु आज का भौतिकवादी विचारक संगीत को कविता की तुलना में निम्न स्थान देते हैं। वास्तव में, दोनों ही अमूर्त कलाएँ हैं। संगीत में नाद को महत्व प्राप्त है तो कविता में शब्द (भाषा) को। फिर भी, संगीत में नाद ही सब कुछ नहीं है। अंतराल उसकी एक अनिवार्य शृंखला है। इसी प्रकार, कविता में भी शब्द (भाषा) के साथ-साथ रसात्मक आनंद की अनुभूति की महत्ता है और रसात्मक आनंद की यह अनुभूति आत्म-प्रसार द्वारा तादात्म्य स्थापित करने में है जो सामान्य सुख-दुख से भिन्न स्तर की वस्तु है।

भारतीय जीवन एव परंपरा में काव्य तथा संगीत का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ईसा पूर्व सातवीं शताब्दी के प्रसिद्ध मनीषी याज्ञवल्क्य की उक्ति के अनुसार,

वीना-वादन तत्त्वज्ञः श्रुति जाति विशारदः।
तालज्ञश्चा प्रयासेन मोक्ष मार्गं च गच्छति॥

यहाँ संगीत को केवल लौकिक सुख का ही साधन नहीं माना गया है, अपितु मुक्ति-मार्ग का आलंबन तक स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार, काव्य को 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कहा गया है, साथ ही कवि को 'कविर्मनीषी परभूः स्वयंभूः' का पद प्राप्त है।

'संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ' में अमीर ख़ुसरो, गोपाल नायक, हरिदास, बैजूबावरा और तानसेन की कविताएँ अकारादि क्रम से संगृहीत हैं। इन कवियों का समय तेरहवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक पड़ता है। इन्हें बहुधा संगीतज्ञ रूप में ही स्मरण किया जाता है। इनमें से अधिक से अधिक ख़ुसरो और हरिदास की चर्चा हिंदी साहित्य में यत्र-तत्र मिल जाया करती है। परंतु अन्य तीन का उल्लेख भूले-भटके ही पाया जाता है। हिंदी साहित्य के भक्ति-काल में काव्य और संगीत का अभूतपूर्व गठबंधन हो गया था। अवतारी भगवान

की लीला करते-करते लीला-गान भी होने लग जाता था। इसी कारण, काव्य-रचना में भी पद शैली का ही प्राधान्य था। इस प्रवृत्ति को जयदेव कृत 'गीत गोविंद' और चैतन्य की भक्तिधारा ने प्रेरणा एवं प्रश्रय प्रदान किया। उस काल की यह एक विशेषता थी जिसमें शृंगार, प्रेम और भक्ति की त्रिवेनी बह निकली और रसिक तथा सहृदय समाज उल्लासपूर्वक उसमें गोते लगाने लगा। परंतु सभी पद-रचयिता न तो गायक थे और न सभी गायक पद-रचयिता। फिर, सभी गायकों का संगीतज्ञ होना भी अनिवार्य न था। प्रस्तुत संग्रह में जिन कवियों की कविताएँ संगृहीत हैं, वे संगीतज्ञ कोटि के हैं और इन रचनाओं में पदों का ही बाहुल्य है। परंतु यति की विलक्षणता और लंबी शब्द-योजना से प्रतीत होता है कि ये पद गाने के लिए ही लिखे गये थे। इसी कारण, इन्हें पद न कहकर ध्रुपद कहने की प्रवृत्ति होती है। इसके अतिरिक्त अधिकांश पदों में भक्ति-तत्त्व की प्रचुरता पायी जाती है। ऐसे पदों को भक्ति-काव्य की कोटि में रखना समीचीन जान पड़ता है।

हिंदी पद-रचना के मूल स्रोत के बारे मे मतैक्य नहीं है। परंतु वज्र-गीतियों तथा चर्यापदों में इसके उद्गम का संकेत मिलता है। ये गेय पद संगीतज्ञों के प्रबंध के ही समान हैं। इसी के आधार पर संभवतः नाथमुनि द्वारा संगृहीत 'नाळायिर प्रबंधम्' का नामकरण हुआ है। अनुमान होता है कि गीतगोविंदकार जयदेव अवश्य ही उक्त स्रोतों से प्रभावित हुए होंगे।

ख़ुसरो नामक तीन व्यक्तियों का पता चलता है। अमीर ख़ुसरो, ख़ुसरो खां और मीर ख़ुसरो। अमीर ख़ुसरो का समय ख़िलज़ी काल में पड़ता है। वास्तव में, 'अमीर' शब्द उसकी पदवी है। सुलतान जलालुद्दीन फिरोज़शाह ख़ुसरो को सदैव 'अमीर' कहा करता था। उसे 'अमीर-उश्-शुअरा' भी कहा जाता था। उसके धर्मगुरु शेख़ निज़ामुद्दीन ने उसे 'तुर्कुल्ला' की उपाधि दी थी। सुलतान जलालुद्दीन ख़िलजी ने 'मलिक उन नुदमा' का ख़िताब दिया था। सुप्रसिद्ध जीवनी लेखक दौलतशाह समरकंदी ने उसे 'खातिम कलाम' की उपाधि दी थी। जनता द्वारा उसे 'तूतिये हिंद' की पदवी मिली

थी। उनकी 'सुलतान-उश्-शुअरा' की पदवी उसे फ़ारसी कविता के सुयोग्य निर्णायकों द्वारा मिली थी।

ख़ुसरो खां शाहजहाँ के समकालीन हैं और मीर ख़ुसरो को हम औरंगज़ेब के समय में पाते हैं। इनमें से अमीर ख़ुसरो सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इनकी हिंदी रचनाओं में मुकरियाँ, पहेलियाँ और दोहे आदि प्रसिद्ध हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि ये रचनाएँ इनकी नहीं हो सकतीं। यद्यपि इनसे पहले मसूद साद बिन सलामन हिंदी में रचना कर चुके थे। फिर भी 'दिवाचये कलाम' के अनुसार उस समय हिंदी कविता अपनी प्रारंभिक अवस्था में थी और फ़ारसी की तुलना में उसके प्रति उपेक्षा का भाव था। इसलिए जो हिंदी कविताएँ उन्होंने रची होंगी, वे उनकी दृष्टि में कोई 'ख़ास अहमियत' नहीं रखती होंगी। जहाँ तक पता है उनके समय में अथवा उसके बहुत बाद तक इनका कोई संग्रह न था। 'उरफ़ातुल आशिक़ीनी' के आधार पर शिबली साहब को भी उनकी हिंदी रचनाएँ होने पर विश्वास था। इनमें से अधिकतर मौखिक परंपरा से ही प्राप्त हैं। अठारहवीं शताब्दी के उर्दू शायर मीर तक़ी 'मीर' को बतलाया जाता है कि उन्होंने अपनी पुस्तक 'निकात शुअरा' में लिखा है कि उनके जीवन काल में ख़ुसरो की हिंदी रचनाएँ दिल्ली में गायी जाती थीं। संवत् १९७८ में काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा 'ख़ुसरो की हिंदी कविता प्रकाशित हुई। ख़ुसरो का हिंदी में लिखना संभव था, क्योंकि उनकी मां संभवतः हिंदू घराने की थी, अतः उनकी मातृभाषा हिंदी थी।[1] संभव है उन्होंने हिंदी में भी कुछ रचनाएँ की हों, जो कालांतर मौखिक परंपरा में होने के कारण, अपने मूल रूप में न रह गयी हों और उनके अनुकरण में संख्यावृद्धि भी हुई हो। कभी-कभी यह भी अनुमान होता है कि अन्य दोनों ख़ुसरो की हिंदी रचनाएँ भी इधर की उधर हो गयी होंगी। जो हो, इसे स्पष्ट करने का अभी हमारे पास कोई पुष्ट प्रमाण अथवा साधन नहीं है।

'मानिक सोहिल' नामक किसी संस्कृत पुस्तक के अनुसार ख़ुसरो ने

[1] डा० महम्मद वहीद मिर्ज़ा : अमीर ख़ुसरो, पृ० ३२१

'जगत उस्ताद' गोपाल नायक को हराकर 'नायक' का पद प्राप्त किया था। 'नायक' का पद सर्वोच्च माना जाता है। इससे घट कर क्रमशः पंडित, गुनी, गंधर्व और गाइन का पद है, जिनका प्रयोग प्रस्तुत संग्रह में स्थान-स्थान पर हुआ है। कैप्टन विलर्ड ने अपनी खोज के आधार पर इनमें कलावंत, कौवाल और धारी भी जोड़ दिया है। उक्त ग्रंथ का फ़ारसी अनुवाद आलमगीर के समय में 'राग दर्पन' नाम से अमीर फ़क़ीरुल्ला ने किया था। परंतु उस समय के गोपाल नायक नामक किसी ऐसे व्यक्ति का पता नहीं चलता। इस नाम से प्रसिद्ध व्यक्ति का पता अकबर के समय में चलता है।[1] वास्तव में, उक्त प्रतिद्वंदिता ख़ुसरो और गोपाल नायक के बीच न होकर बैजूबावरा और गोपालनायक के साथ हुई थी, जिसकी पुष्टि संगृहीत रचनाओं से होती है।[2]

अमीर ख़ुसरो का काव्य और संगीत विषयक ज्ञान व्यापक तथा गहरा था। उन्होंने अपने संबंध में स्वयं एक स्थल पर लिखा है,

पा सुखश गुफ़्तम के मन दर हर दो मानी कामिलम।
हर दोरा संज़ीदा बर वज़ने के आं बेहतर बुअद॥[3]

इससे स्पष्ट हो जाता है कि वे अपने को काव्य और संगीत दोनों का ही अधिकारी मानते थे।

ख़ुसरो को अपने देश पर उचित गर्व था। 'एज़ाज़ ख़ुसरवी', (भाग २, पृ० १८०) के अनुसार ख़ुसरो ने एक स्थान पर लिखा है कि

किता दुरुस्त सवद कुम्रियाने बाला रा
कि मुर्ग़ चूं बुअद अंदर बाहर हिंदुस्तां॥

---

[1] देखिये पृ० ४७, पद ८

[2] बैजू बावरा : पद ३०-३६, पृ० ६८-६६, ७१-७२ और तानसेन : पद १२५, पृ० ११२

[3] अरबा अनासिर दवावीने ख़ुसरो, पृ० ४५६-५७ जो नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ में मौजूद बतलाया जाता है

अर्थात् हवा में उड़नेवाली कुम्रियों (पंछियों) को मालूम पड़ जाय कि हिंदुस्तानी बाग़े-बहार में कैसी-कैसी चिड़ियाँ हैं।

उन दिनो ईरान और ख़ुरासान से पधारे संगीतज्ञों से प्रतिद्वंदिता हुआ करती थी जिसमें प्रायः भारतीय ही विजयी हुआ करते थे। नवाब वाज़िदअली शाह ने अपनी पुस्तक 'सौतुल मुबारक' में ख़ुसरो का नायक होना स्वीकार किया है। किंतु वे उन्हें 'नायके ख्याल' मानते हैं, 'नायके ध्रुपद' नहीं जिसके लिए उनकी प्रसिद्धि है।

गोपाल नायक को ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा यदि अलाउद्दीन ख़िलज़ी का समकालीन सिद्ध किया जा सके तो उनके साथ ख़ुसरो की प्रतिद्वंदिता भी संभव हो सकेगी। इसी प्रकार, कुछ अधिक रचनाएँ मिलने पर यह परखना सुगम हो जायेगा कि उनकी भक्तिपरक रचनाओं पर दाक्षिणात्य भक्तिधारा का कहाँ तक और कितना प्रभाव है। परंतु प्रस्तुत संग्रह की एक रचना (पद ८, पृ० ४७) से यही पता चलता है कि गोपाल नायक अकबर के ही समसामयिक थे।

हरिदास नाम के साथ-साथ किसी-किसी पद में वंश परिचायक 'डागुर' शब्द भी जुड़ा है जिससे यह अनुमान होता है कि वे जाट जातीय ठाकुर रहे होंगे। यह भी संभव हो सकता है कि हरिदास और हरिदास डागुर दो भिन्न-भिन्न व्यक्ति हों, क्योंकि कुछ विद्वान उन्हें सारस्वत ब्राह्मण बतलाते हैं। इनके पदों में राधा-भाव लिये एक सच्चे भक्त हृदय के उद्गार हैं। स्वामी जी के १२६ ध्रुपदों में से १८ सिद्धांतपरक हैं और शेष राधाकृष्ण के निकुंज-विहार से संबंध रखते हैं।

बैजू बावरा के भक्तिपरक पदों में निर्गुण भक्तिधारा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में लक्षित होता है।

तानसेन के पद अच्छी संख्या में उपलब्ध हैं। इनकी एक रचना 'संगीत सार रागमाला' प्रसिद्ध है, जिसका उपयोग श्री कृष्णानंद व्यासदेव ने किया था। इनमें भावों को विविधता और विभिन्न चित्रों की झलक है। भावक्षेत्र में एक ओर जहाँ शृंगारपरक पदों में केलि और विरह-वर्णन है वहाँ चित्रण के क्षेत्र में रूप-रंग, बाल लीला तथा मान लीला के दर्शन होते

हैं। इसी प्रकार, कहीं पर धार्मिक एवं ऐतिहासिक व्यक्तियों की चर्चा है तो कहीं पर प्रसिद्ध स्थानों का उल्लेख। वर्तमान हैदराबाद को उसके पुराने नाम भाग-नगर की संज्ञा प्राप्त है। सांस्कृतिक दृष्टि से हिंदू संस्कार का प्रभाव स्पष्ट है। शकुन विचार, प्रथा-पद्धति और ईद तथा दशहरा आदि आदि की झाँकी मिलती है। इनकी भक्ति-भावना में सगुण-निर्गुण का समान आदर है। 'दरब' (द्रव्य) का मोह इन्हें हेय लगता है। युद्ध का चित्रण करते समय ये भूषण की याद दिलाते हैं। कहीं-कहीं युद्धों के प्रतीक द्वारा संगीत की महत्ता प्रदर्शित करते हैं। सामाजिक दृष्टि से सौत की मनोवृत्ति का परिचय मिलता है। भाषा के क्षेत्र में ये अरबी को 'भाषा-मणि' ठहराते हैं। इनके एक पद में ख़ुसरो का अनुसरण करते हुए हिंदी और फ़ारसी दोनों का ही प्रयोग साथ-साथ किया गया मिलता है। अपने एक पद में ये ख़ानख़ाना की चर्चा अत्यंत आदरपूर्वक करते हैं। इनके अकबर की प्रशस्ति और आत्मश्लाघा वाले पदों में दरबारी हवा का स्पर्श विदित होता है।

भाषा और पाठ के प्रसंग में अभी इतना ही कहा जा सकता है कि जब तक पाठ का अंतिम रूप निर्धारित न हो जाय तब तक इस पर विचार तो किया जाय, किंतु अपना निर्णय स्थगित रखा जाय। यों तो अधिकांश पदों की भाषा ब्रजभाषा ही है जो उस युग की विशेषता की दृष्टि से भी स्वाभाविक है।

इसमें संदेह नहीं कि यह साहित्य वर्ग, जाति और धर्म के भेद-भाव को स्वीकार नहीं करता। इस कारण, यह साहित्य भारतीय एकता और सांस्कृतिक उदारता का प्रतीक है।

प्रस्तुत संग्रह से आशा की जा सकती है कि यह हिंदी साहित्य के एक विस्मृतप्राय उपेक्षित, किंतु महत्त्वपूर्ण अंग के अध्ययन की ओर साहित्य प्रेमियों को उन्मुख करने में समर्थ सिद्ध होगा। आवश्यकता इस बात की है कि सहृदयता पूर्वक इसकी परख एवं परीक्षा की जाय।

अमीर खुसरो

अपना घर भला और आप भली, न किसी के जाइए, न एतना दुख पाइए।

ग़राज नाक़े दाने तां उफ़ताद ख़ुसरो ग़रक शूद ख़ूब शूद मस्ते चरा बालाए चाहे तो बुरा ज़रद ॥१॥*

अस्थाई संचाई सुल-नीजा अंतरा अरो बधावा आवो गावो सोहलरा ख़ुसरो लोग बुलावो।

कोठ बा कोठ दीयरे बारूनी जाम दी पीर मिलावो ॥२॥

री मैं धाउं पाउं हजरत ख़्वाज़दीन शकरगंज सुलतान मशायख़ महबूब इलाही ॥

निज़ामदीन औलिया अमीर ख़ुसरो के बल बल जाहीं ॥३॥

हज़रत निज़ामदीन औलिया माई ॥

निसदिन चिराक देहली ख़ुसरो अमीर बलि बलि जाई ॥४॥

हज़रत महबूब इलाही निज़ामदीन औलिया जर जरी ज़रबख़्श।

ख़्वाजा क़ुतुबदीन शेख़ फ़रीद शकरगंज अमीर ख़ुसरो गंजबख़्श ॥५॥

*अगर उनकी आलोचना करने वालों से ख़ुसरो गिर पड़ा और डूब गया तो अच्छा हुआ क्योंकि कोई मस्त किस तरह तेरे कुएं के ऊपर से गुज़र सकता है ?

गोपाल नायक

अत गत मंत्र गंम् मम गंम् मगं मम गम मग ममग अत गत मंत्र गाइया ॥
लै लोक भू में कमल रे हरि को लरे संतो लरे मकरंद अइया उदध चंद धरो
मन में अत गत मंत्र गाइया ॥
तड़तक झुमण जुग लरे ततकाल निरत अपार रे अधार दे धरु गावत
नायक गोपाल रे राजाराम चतुर भये अइया रे अत गत मंत्र गाइया ॥१॥

अरि दल मल रे जोधा नर दल भीम करन समान ॥
तड़तक झुमण जुग लरे ततकाल निरत अपार रे धारु गावत
नायक गोपाल रे ते ऐया ऐया आइया आइया आ मानर ॥२॥

कहावे गुनी ज्यों साधे नाद शबद जाल कर थोक गावै ॥
मार्ग देशी कर मूर्छना गुन उपजे मति सिद्ध गुरु साध चावै
सो पंचन मध दर पावै ॥
उक्ति जुक्ति भक्ति मुक्ति गुप्त होवै ध्यान लगावै ॥
तब गोपाल नायक के अष्ट सिद्ध नव निद्ध जगत मध पावै ॥३॥

कांधे कामरी गो अलाप के नाचे जमुना तीर नाचे जमुना तीर पीछरे पांचरे
लेति नाचि लोई मांगवा ॥
भुअ आली मृदंग बांसरी बजावै गोपाल बैन बतरस ले अनंद ले मुराद मलवा ॥४॥

गिरधर गदाधर चक्रधर गोपाल माधव गरुड़पति गरुड़गामी मुकुंद
माखन हारी लीया ॥

ए ए यानें ए ए या तीया तीय तीय तीया तीया ईया ॥
जग उधरन जानकी रवन कृष्ण केसी मथन काली नाथन
विश्व पाय भक्तन सुखकारी जीया ॥
पम मगम मगसा मपधसा ए नाम गीत कूं गाइए सोतो सार है
संसार सागर भनत गोपाल नाम कृपा शिख तीया ॥५॥

जय सरस्वती गनेश महादेव शक्ति सूर्य सब देव
देहो मोय विद्या वर कंठ पाठ ।
भैरव मालकोश हिंडाल दीपक श्री मेघ मूर्तिवंत
हृदय रहे ठाठ ।
सप्त स्वर तीन ग्राम अकइस मूर्छना बाइस सुर्न
उनचास कोट ताल लाग डाट ।
गोपाल नायक हो सब लायक आहत अनाहत शब्द सों ध्याओ
नाद ईश्वर बसे मो घाट ॥६॥

झुकाय झुमकत झमक गहे कर वार अड़न अल्लट रे ॥
भुज परचंड ओ बलवंड डंड अडं डडं डनखंड आखंड खंड खंडन अटल्ल रे ॥
धारु गावत नायक गोपाल छत्र बनस ग्राम झुझरो रेते अइय याउ ए ए
याइ तानतो याइया इया आ अलल रे ॥७

दिल्लीपति नरेन्द्र अकबर साह जाकों डर डरे धरती पुहूप माल हलायो ॥
दल साज चतुरंग सैना अगाध जहाँ गुन ठहों चहूँ विद्याधर
आय आय नाद भेद गायो ॥

गुनी जन जनत केतो को दियो अघाय तुअ प्रताप सुन धायो ॥
कहत नायक गोपाल तुम चिरंजीव रहो साह देत करोरन आवत
धाय धाय मृग माला पहरायो ॥८॥

प्रथम आदि वोंकार तीन ग्राम चवदे सुर जब पावत गुनी जन कर कर विचार ॥
रोही अवरोही अस्थाई संचाई चारों बानी गुवरहारी खंडारी डागुरी नोहार ॥
उनचास कोट तान अकइस मुरछना उरपति रप बाइस सुरत गावत आकार ॥
भनत गोपाल जानत संगीत पंडित अति रिसाल नेम बृच्छ लेत दरन मुरन
यह विद्या अपरंपार ॥९॥

प्रथम नाद वोंकार तीन ग्राम सप्त सुर गावत गुणी जन कर विचार ॥
रोही अवरोही अस्थायी संचाई चारों बानी भेद लय सहित उचार ॥
उनचास कोट तान अकइस मुरछान बाइस सुरत गावत आकार ॥
भनत गोपाल नायक अति रिसाल नेम बरस लेत अठारह भार ॥१०॥

लग गुरु समझ धर रे ज्यों कहे ग्रंथन गुरुन प्रमान ॥
जेहि लग तेही गुरु लग गुरु बिंअक अंछर लख सोई उलट धर रे
ज्यों कहे ग्रंथन गुरुन प्रमान ॥
मगन नगन जगन तगन भगन सगन यगन न जान
छंद बंध प्रबंधन संगीत मत गोपाल नायक करत बिनान ॥११॥

हरिदास

आई नार री तूं कौन के रस बस मिस कर ॥
और दिनन में एक ही बार तूं अब जात हो पनिया भरन को
आजहूं केइ बेर आई गई एसे कहा भये हैं नंद के हर ॥
जो तूं सास ननद की कान न करत आपन को लहकर ॥
हरिदास डागर ताहि बरजत तूं अब कहि भइ है तूं अति निडर ॥१॥

आज की बानक मोहन तेरी प्यारी बिहारी मो पै बरनी न जाय ॥
इनकी स्यामता उनकी गौरता जैसे सेत बन रही मानों ज्यों भुयंगा धाय ॥
तिहारो पीतांबर उनको नील निचोल ज्यों ससि कुंजन घन बिजली चमकाय ॥
हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी की सोभा निरखत ज्यों मन जोरे कोट
कवि पार न पाय ॥२॥

एसो मोरो बतीयन पर मन ए अरुझे ए रहे एरी बस कहौ कैसी करूँ ॥
कहा कहों अंखियन की रीत बस भई स्याम छबि निरखि संग नहीं छबि
फिरत न नहीं करूँ ॥
नैन मुंद रही सनमुख धनी मानत नाहीं काहू की हेरी ॥
दास हरि मन बचन कापै कहूँ पिय चाह से चितवत ही दरसन भई
प्रीतम मैं चेरी ॥३॥

एसो लियो नाद गढ़ महातंड रोही अवरोही अस्थाई संचाई महा विकट
निपट अत आगत ॥
छहो राग बुर्ज भए तीसो भार्या के कोट इकइस मुर्छना रंग बाइस सूरत के
कंगुरे तीय के नीके लागत ॥
सप्त स्वर सप्त पौर औडव खाडव के किवाड़ तामें करताल चलत गोला ओला

भयो ध्रुपद की चारो तुक चतुर दिशा में चुनेती दीनों एसेइ वाको कीनो नयो रंग
जल भरि राखे कंठ गुणी के रिसाल लासें गुन पागत ॥
हरिदास डागुर गुरुन गुरु ज्ञान कहे एसे जैसे लरे झगरे रचपचे अटुट टुट में
रीझ देत हीरा मोती रतन फल लागत ॥४॥

ए हरि मोसो न बिगारन को तोसों न संवारन को मोहि तोहि परी होड़ ।
कौन धों जीते कौन धों हारे परी बदि न छोड़ ॥
तुम माया बाजी पसारी बिबिध मोही मन मोको भूल्यो कोड़ ।
कह हरिदास हम जीते हारे तुम तउ न तोड़ ॥५॥

कबहुँ कबहुँ मन इत उत जात यातें कौन है अधिक सुख ।
बहु भांतिन तें घर आनि राखो नाहिं तो पावतो दुख ॥
कोटि काम लावण्य विहारी तामें मुंदचहा सब सुख लिये
रहत रुख ।
हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी दिन देखत रहों विचित्र मुख ॥६॥

काहू को वश नाहीं तुम्हारी कृपा से सब होय बिहारी बिहारनि ।
और मिथ्या प्रपंच काहे को भाखिये सो तो है हारनि ॥
जाहि तुम सों हित तासों तुम हित करो सब सुखकारनि ।
हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी प्राणनि के आधारनि ॥७॥

गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज पायो न प्रसाद साधु मंडली
जाय के
धायो न धमकि वृंदा विपिन कुंजन में रह्यो न शरण जाय विट्ठलेश राय के ।
नाथ जू न देखि छक्यो रूप हूँ छबीलो छवि सिंह पौरि पर्यो नाहीं सीसहू नवाय के
कहे हरिदास तोहि लाजहू न आवे जिय जनम गंवायो न कमायो कछु आय के ॥८॥

चन्दन खोर अंग अंग चढ़ाय अबीर लिए ऐंडों ऐंडों डोलत पनघट
हो आपन मन भाए ।।
बरबस पर धन कंठ लगाए तोहि सुख भए कहा होत है उनके दुख पाये
और न मानत तेरे भाए ।।
कबहूँ तिलक मुद्रा देत कबहूँ बागे बनाए नैनन नेह जनावत बन में गाय चराए ।।
हरिदास डागुर के प्रभु इन तिय नेह जनावन बैन बजाए ।।९।।

ज्ञान मदमाते जे नर निश दिना तिनको कबहूँ न होत खुमारी ।।
सत के प्याला भर भर पीवत रसना सवाद लेत ध्यान धरत
जाकों लागि रहत जिय तारी ।।
मनक रसायन तन करो भाटी पांचो आत्मा अग्नि जारी ।।
हरिदास डागुर के प्रभु ध्यान धरत ही मानो स्वात बूंद डारी ।।१०।।

ज्योंही ज्योंही तुम राखत हो त्योंही त्योंही रहियत है हो हरि ।
और अचर के पाइ धरी सु तो कहो कौन के पंड भरि ।।
यद्यपि हों अनभायो कियो चाहों कैसे करि सकों जो तुम राखो पकरि ।
हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी पिंजरा के जनावर लों तरफराइ रह्यो
उड़िबे की किन कूं करि ।।११।।

तरैया नाद महानद को मुरछना गमक नीर सुरत अगाध तान तरंग ताल तरल
वही अलापन ओड़व खाड़व पूरण धार ।।
आरोही अवरोही दोउ कुल पुर अंस न्यास ग्राह ग्रह तान भंवर सरोज वादी
विवादी सिवार ।।
नौका अवाज पर राग रागणी पथिक चढ़त उतारत गुनी जन वार पार ।।
हरिदास डागुर उत्तम नायक धारु धुरपद छंद गुण वल्ली पत पतार संगीत
गीत अधार ।।१२।।

तान तंरग है सप्त सुर रंग जिन लगाम नसुध अलाप ।।
मुरछना गज गाह ताल तरल अदभुत गत हयकल की ले धुरापन ।।
धारु धुरपद काव्य सज जु ताल सवार गज गमक निडेशन ।।
हरिदास डागुर उत्तम नायक जो गुन लहे गरुवाये मन ।।१३।।

देखो इन लोगन की लावनि ।।
बूझत नाहीं हरि चरण कमल कों मिथ्या जनम गंवावनि ।।
जब जमदूत आइ घेरत है करत आपनी भावनि ।।
कहे हरिदास तबहिं चिरंजीवहु कुंजबिहारी चितावनि ।।१४।।

पायो मनोहर श्याम सुन्दर सुरति सुख मानो रली ।
नव नेह अति रस रंग बाढ्यो दान दे उठि घर चली ।।
कहत श्री हरिदास नागर कामिनी गुण सागरी ।
जिन रसिक श्री हरिराय मोहे अधिक चातुर नागरी ।।१५।।

पीवो श्री भागवत सुधारस ।।
सावधान श्रवण पुट भरि भरि श्री गोपाल बिमल जस ।।
निगम कलपतरु को फल परम मृदुल आनन्द लस ।।
कठिन ज्ञान गुठली नाहिं जामे भरम जाल को निपट नस ।।
अरथ धरम अरु काम मोक्ष पद प्रेम भक्ति कों कनक कस ।।
काम क्रोध मद लोभ गलित भय संत शिरोमणि सर्वस ।।
परम हंस कुल भूषण श्री शुक बदन कमल तें पर्‌यो खस ।।
कहे हरिदास परम यह सुन्दर जो न पीवै सो महा पस ।।१६।।

प्रभु जी दीन बचन प्रतिपारो ।।
भक्त हेत खंभते प्रकटे नृसिंह रूप जु धारो ।।

जै जैकार भयो त्रिभुवन में हरिनाकुश नख उदर बिदारो ॥
हरिदास प्रभु तुम चिरजीवो सब संतन को ताप निवारो ॥१७॥

प्रिया प्रिय के उठबे की छवि बरणी न जाइ सबते न्यारे ।
मानो घोस रे निइ कटोरे होवन भये न्यारे ॥
बार लटपटे मानो भौंर यूथ लरत परस्पर कमल दलनि पर खंजरीट शोभा न्यारे ।
हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी पर कोटि कोटि अनंग कोटि ब्रह्मांड वारि डारे ॥१८॥

प्यारी आगे चली आगे गहवर वन भीतर जहां बोली कोयल री ॥
अति ही विचित्र पुष्प पत्रन की सोभा रुचिरु चीर संवारी तहां तुव सोइल री ॥
घरी घरी पल पल तेरो ही कहानी तुव मग जोइल री ॥
श्री हरिदास के स्वामि श्यामा कुंज बिहारी कामरस मोहल री ॥१९॥

बनी गंध कहा कोउ जाने मेरी सी तेरी सो राधे ॥
बिच बिच संत पितरातें सोहत फूल को करि सके तिहारी सों राधे ॥
बैठे रसिक संवारन बारन कोमल कर ककई सों राधे ॥
हरिदास के स्वामी स्यामा नखसिख लों गुथन हीं सो राधे ॥२०॥

भर भर धर धर आवत गागर नागर नारि री कौन के रस मिस केरे ॥
और ही दिनन में एक ही बेर जावत पनियां भरन आज केउ बेर आई गई एसे कहां भये नंद के हेरे ॥
जो तूं अब सास ननद की कान करत तो पावै है कुल डरे ॥
हरिदास डागुर प्रभु के कहे ते मेरे नैन प्रान सब गए डरे ॥२१॥

रोम रोम रसना जो होती तउ तोरे गुणन बखाने न जात ॥
कहां कहो एक जीभ सखो री बात की बात बात ॥
भानु अमित और ससीहू अमित भए औ जुवतिन की जात ॥
हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कहत प्यारी तूं राख तो प्राण जात ॥२२॥

सुफल जनम तेरा रे मिटे चौरासी का फेरा ।
कर दरसन गिरिधरन राज को सुफल जनम नेरा ॥
पूरब देश में पुरी जो मथुरा गोकुल का नेरा ।
सीतल जल ठकुरानी घाट का जहाँ वैष्णव का डेरा ॥
सुंदर मंदिर सात सरूप के देवल उंचेरा ।
ध्वजा फहर के नौबत बाजे घड़धी घड़धी सवेरा ॥
नर नारी हिल मिल के आवैं गुण गावैं हरि केरा ।
दरसन पावै आनन्द आवै तरे भवसागर बेरा ॥
हरि हरि करतां हरे सकल दुख सुख होय अधकेरा ।
कृपा करो हरिदास के ऊपर राखो चरणन नेरा ॥२३॥

सेवा सेवा करत सेवे तेंतीसो कोट महादेव तुव नाम जप तप पार्वतीपत
पतित पावनि पातिगहर तेनु गन केसे सुमरत ॥
त्रइलोक नाथ शंभु शंकर कर तरसुल धरे तपोभूत त्रपुरारी मानो महेश देश देश के
नरेस को धावत जोइ जोइ मांगत सोइ सोइ पावत है हरिदास डागर होत सुरत ॥२४॥

सोध सों न्हाय बैठी पहिरि पट सुन्दर जहां फुलवारी तहां सुकवति अलके ॥
सोभा कल नख करि केस संवारति मनो उडगन में उडपति झलके ॥
बिबिध सिंगारु लिए आगे ठाढ़ि प्रिय सखि भरि आयो आनन्द रतिपति दलके ॥
हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी छबि निरखत मलके ॥२५॥

हरि के नाम को आलस कत करत है रे काल फिरत सर सांधे ॥
बेर कुबेर न जानत चढ़्यो रहत है कांधे ॥
हीरा बहुत जवाहर सचे कहा भयो हस्ती दर बांधे ॥
कहे हरिदास महल में बनिता बनि ठाड़ी भई कछु न चलत
जब आवत अंधकी आंधे ॥२६॥

म्हांरी राखो लाज मुरारी जी मोरा मन लागो हरि चरनांसु ॥
जिन चरना कूं कमला सेवे ब्रह्मा आदि गनेस जी ॥
सारद नारद श्री सुखदेवा सेस महेश फनीस जी ॥
सुरपत नरपत गणपत नायक रस पीये रसनासु जी ॥
ध्रुव तारे प्रहलाद उबारे राख लियो जतनासु जी ॥
चरन कंवल में चित बिलग्यो है पायो निगम भनासु जी ॥
जन हरिदास परम पद परसे रोम रोम रसनासु जी ॥२७॥

बैजू बावरा

अचल राज करो कोट बरस लों चिरंजीव रहो जसुमत तेरो लाल दरस देख
भये निहाल मैं जोगी सुख पायो मेरे जिय आनन्द भयो उर न समात है ॥
जौंलो ध्रुव धरन तारो जीवे तेरो राज दुलारो तौंलो रवि ससि सुमेर गगन पवन
पानि लोमंच की सी आर्बल होय यह अशीश दे जात है ॥
डिम डिम डमरू बजाए सिंगीनाद कर मुख से गाये महादेवजु दरसन पाए
अलख की छवि निरख मंद मंद मुसक्यात है ॥
पांच बार फेरी कर कछु श्रवण लागा मंत्र धर बैजूनाथ कैलास के वासी प्रेम मगन
नाचे तांडव लासीतकथंगा तकडूथुंगा निरतत अपने मन सुख पात है ॥१॥

अनंत ब्रह्मांड के नायक परब्रह्म श्री श्रीधर महाराज ॥
कृपासिंधु भक्तपाल सुखकरन कृपाल गरिब निवाज ॥
यह बिनती सुन लीजे तेरो अंत नहीं तूं अनंत पूजूं
तोहे बंधू भुज कर जाए दुख भाज ॥
बैजू प्रभु आदि अलख अगोचर निरंजन निराकार
भक्त काज कोटि कोटि रूप धरे संतन सिरताज ॥२॥

आंगन भीर भई व्रजपति के आज नंद महोत्सव आनंद भयो ।
हरद दूब दधि अक्षत रोरी ले छिरकत परस्पर गावत मंगलचार नयो ॥
ब्रह्मा ईश नारद सुर नर मुनि हरषित विमानन पुष्प बरस रंग ट्यो ।
धन धन बैजू संतन हित प्रगट नंद जशोदा ए सुख जो दयो ॥३॥

आज सखि लखि मनमोहनी मूरत माधुरी सुंदर चतुर सुजान कांन्ह ॥
सीस मुकुट श्रवण कुंडल घुंघुरवारी अलक झलक चलत चाल ठुनक ठुनक
अधरन मुरली बजाई तान ॥

भूली सुध बुध सब गृह काज डार दियो बिसरि गयो खान पान
लखि मनमोहन चतुर सुजान ॥
बैजू बावरी रावरी कर डारी मोहे न सोहात आन त्याग दई कुल कान ॥४॥

आज सपने में सांवरी सलोनी सूरत देखि सैनन करि मोंसो बात ॥
तबतें मैं बहुत सुख पायो जागत भई परभात ॥
मधुर बचन बोल मदन मंत्र पढ़ डारी उन बिन छिन पल कछु न सोहात ॥
बैजू की ब्रज की नारी जंत्र तंत्र लिखि सारी कल न परत गात सब दिन रात ॥५॥

आजु रच्यो करतार दोउ जग होय प्रगट्यो उत श्री कमलापति
इत श्री नंद जी के नंदन ॥
उत सुरन सुख करन इत भक्तन दुख हरन निरगुण सरगुण
दोउ सरूप एक ही बंदन ॥
उत विष्णु बैकुंठ नाथ इत कृष्ण ब्रज के नाथ मोहनी मोहे ईश
इत मोहनी गोपी ईश गज द्रोपदी काटे कष्ट फंदन ॥
उत गदा पद्मधर इत मुरली मुकुटधर बैजू प्रभु को ध्यान धरो
जनम मरण जाय सब दंदन ॥६॥

आदि परब्रह्म देवनारायण निरंजन निरंकार सोइ साकार ॥
वाही ते त्रइलोक रचना रज सत तम पंच भूत वाही ते
अठाइस तत्व जगत पसार ॥
वही आदि वही अंत वही चराचर मधु भर पूर रहो संसार ॥
बैजू प्रभु करे सो होय करता अकरता सकल कोट कोट ब्रह्मांड
एक एक रोम प्रति ताहि भजो बारबार ॥७॥

आदेश कर गुरु कों जो गुरुन के गुरु कों ब्रह्म
गुरु कों तासों सप्त सुर तीन ग्राम आवे सुर भर कों ।

इकइस मुरछना उनचास कोटि तान अस्थाई
संचाई अलंकार बैजू प्रभु के चरण धर को ॥८॥

ए आज आयो आयो सुरजवंश छत्रपत राजाराम लंका नगर जीत
मन इंछा फल पायो आनंद भयो ।
आनंद भयो मेरे आली जीवन जनम सुफल हुवो चित चायो ।।
कोउ सुकृत मेरो उदै प्रगट्यो प्राप्त चार फल धर्मार्थ काम मोक्ष
निज चरन शरण दासन दास कहवायो ।।
अनेक पतित उधारे रघुवर गीध ब्याध गज गनिका गौतम नार
खेचर भूचर निशिचर अजामेल बैकुंठ पठायो ।।
जाकों रटत शिव ब्रह्मादिक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार
बैजू बावरे के प्रभु कूं नारद तुंवर गुणी गंधर्व हाहा हूहू गायो ।।९।।

ए आयो आयो मेरे गृह नंद को नंदन मन इंछा फल पायो ।।
कहा कहों मेरे भाग की महिमा अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदारथ पायो ।।
अनेक पतित उधारे गिरिधर भक्तन के मन भायो ।।
बैजू बावरे रावरे कहावत चरन कमल चित लायो ।।१०।।

एजु नाद दरियाव तापै तन जहाज कीनें उमड़ि फिर लागे री चोंप ढरन ।।
सुर के बरदवान कीने अचरा के बैन तापे गुणी लागे तान तरन ॥
गीत संगीत जुगल बंध त्रेवट ताके लागे भार भरन ॥
कहत आधीन प्रबीन सागर समुद्र उतरे पार बैजू लागे चरन ॥११॥

ए बंसी नाद सुर साध के बजाई प्रवीन कान्ह सप्त स्वर तान मधुरे धुनि ॥
श्रवण सुनत कछु सुध न रही आली भनक परी मेरे कान सुनि सुनि ॥
तन मन रोम रोम व्याकुल भइरी जीत लिए गंधर्व नारद मुनि गुनि ॥
बैजू के प्रभु नर नारी पशु पंछी मोहे और मोहे सुर नर मुनि ॥१२॥

ए ब्रह्म तेरे ही ग्यान ध्यान सुमरन रहत जप तप संजम भक्ति बैहार ॥
तूंही तन तूंही मन तूंही राम में रम रहो तूहीं सब जग करतार ॥
तूंही आदि तूंही मध्य तूंही अंत तूंही तंत तूंही साधु तूंही संत ॥
तूंही सर्व व्याप रहो संसार ॥
तूंही रज तूंही तामस तूंही भक्तन कही अनेक होत भर रहो
निरंजन निराकार बैजू तूंही सार ॥१३॥

एरी अब आनंद भयो री ब्रज में श्रीकृष्ण जनम लियो आज ॥
शुभ घरी शुभ दिन महूरत प्रगट भये ब्रजराज ॥
ब्रह्मा बेद पढ़त महादेव दर्शन आए नाचत गोपी ग्वार
नारद बीन बजाए स्वर साज ॥
बैजू नंद महोछव देख मगन भए पूजे मन इंछा सुर नर मुनि काज ॥१४॥

एसे बहुत चले नए नए हुनर तिन छिन सीखत रहत ही विद्याधर ॥
बैजू कहे बात जिय नाहीं समझत को धनवंत भयो धरन पर ॥१५॥

एहो ज्ञान रंगे ध्यान रंगे मन रंगे सब अंगन रंगे ॥
प्रथम राम कृष्ण रंगे रहीम करीम रंगे घट घट ब्रह्म रंगे
रोम रोम मन रंगे हरि संग रंग रंगे ॥
जप रंगे तप रंगे तीरथ व्रत नेम रंगे सर्वमयी अंग अंग रंगे ॥
जीव जन्तु पन्नग पशु एक ईश्वर रंग रंगे सुर नर मुनि संग रंगे
बैजू प्रभु कृष्ण रंग रंगे ॥१६॥

कर पे गुलफा धरे तिय दुचित अनमनी कर के सिंगार बिरहन ह्वै बैठी री ॥
पिय पिय रट लागी मग जोहत मोहत रंग उमंग भरी आलस अंग अंग
मरोरत ह्वै के ऐंठी री ॥

नख सिख लों आभूषन भूषन जगमग रह्यो पिय आवन की उछाह नाहिंन पल
नेक लेटी री ॥
बैजू प्रभु मनमानी आय गए वाहि छिन धन धन भाग सुहाग नार
अंग अंग भेंटी री ॥१६॥

कहा कहूँ उन बिन मन जरो जात है अंगन बरतें कर मन कियो है बिगार ॥
वह मूरत सूरत बिन देखे भावै न मोहें घर द्वार ॥
इत उत देखत कछु न सोहावत बिरथा लगत संसार ॥
बैर करत है दुरजन सब बैजू न भावै मन पिय के अचरज भयो है ब्यौहार ॥१७॥

कहा तुम गावत हो गायन नाद विद्या अति अपरंपार ॥
गीत प्रबंध चारु धुरपद को कहो कौन प्रमान केते गुणी रच पच हार ॥
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मुरछना बाइस सुरत उनचास कोट
तान की कसौटी कलान को संभार ॥
कहत बैजू बावरे ताकी दुरन मुरन रोही अवरोही अलाप अस्थाई संचाई
प्रथम ओंकार ॥१८॥

काहे कूं भटकत फिरत रे मन जपो हरि नाम जासों काम ॥
तीरथ ब्रत नेम धर्म पट कर्म तज भए एक नाम ॥
कलिकाल और नाहीं एक रह्यो हरि ब्योहार वही जप वही तप वही है धाम ॥
कहे बैजू बावरे सुन हो गुनी जन सांचो संसार मध एक ही है राम ॥१९॥

काहे को गरब करत गुणी कहायो रे ।
गीत छंद धोवा माठा नीके गाय सुनायो रे ॥
गीत संगीत जुगल बंध एते राग काहे को गायो रे ।
कहे बैजू बावरे सुन हो गोपाल नायक झगरत जनम गंवायो रे ॥२०॥

कुंजन मध रच्यो रास अदभुत गत लिए गोपाल
कुंडल की झलक देख कोटि मदन ठठक्यो ।
अधर तो सुरंग रंग बाँसरी सुहाय संग
टेढ़ी छबि देख मेरो मन अटक्यो ॥
एरी अब देखो जाय ऐसे सो कहा बसाय
अलकन की गत निरख शेषनाग सटक्यो ।
निरतत संगीत री तत तत थेई तत तत थेई
त्रिभंगी अंगी रंगी चाल देख इंद्र धनुष पटक्यो ॥
रुनक झुनक नूपुर ठुनक रुन झुन रुन
झनन ननन सनन ननन बंसी बाजे मंद मुख सों मटक्यो ।
रति विलास सुख की रास भनत बैजू गोपाल
यह स्वरूप दरस परस वृंदाबन को सटक्यो ॥२१॥

चंद भाल सीस गंग गोरी अरधंग ललाट भस्म मुंडमाल कर पिनाक रैया ॥
महादेव महाजती अमरामन रैया त्रिलोचन नीलकंठ अंधक रिपु रैया ॥
शंकर शंभु त्रिपुरारि डिमरु डिमडिम बजैया ॥
नाचत तांडव कैलाशपत रीझत विष्णु रिझैया ॥
बैजू नायक संगीत निरतत देवपति रैया तिए ऐया ऐया ऐया
आयो आयो आयो ऐया ॥२२॥

जय सरस्वती गंगा गणेश ब्रह्मा विष्णु महेश शक्ति सूरज सर्व देव ध्यावै ॥
सप्त स्वर तीन ग्राम इकइस मुरछना उनचास कोट तान देही आवै ॥
उरपति रप लाग डाट राग रागणी पुत्रबधू सहित कंठ समावै ॥
कहे बैजू बावरे सर्व देव दया करो राग रंग तान ताल लय अक्षर गावै ॥२३॥

जहां लगि लगन लालन सो तहां लगि चित ललचाउं ॥
कौन मंत्र मोहन पढ़ डारो अपने हरि बस कर पाउं ॥

हा हा करौं हरि को कैसे देखों सांवरी सूरत हृदे ल्याउं ।।
बैजू बावरे रावरी कृपा तें तन मन धन वार बलि बलि जाउं ।।२४।।

जाको बैजंती माला ताके मृगछाला जाके मुरली अधर डंवरू ताके कर रे ।।
जाके जटा जूट गंग त्रिशूल ताके शंख चक्र गदा पद्म रूंड मुंडमाला
जाके पीतांबर पट रे ।।
बृषभ वाहन ताके गौरी अरधंग गरुड़गामी गोपीनाथ हरिहर रट रे ।।
बैजू प्रभु हरिहर निश दिन ध्यान धर छाड़ दे जग की सब खटपट रे ।।२५।।

जागत भैरो जोती स्वरूप किरन तें प्रगट्यो तिमिर घट्यो शशि भयो मंद ।।
दिनकर दिन लायो सबके प्रफुलन कों बढ़ बढ़ कियो अनंद ।।
जग चक्षु जोति प्रकास प्रतच्छ देव जगवंद ।।
बैजू बावरे रावरे कहावत काटो जनम मरन के फंद ।।२६।।

जै काली कल्याणी खप्रधारणीं गिरजा घनस्यामा चंडी चामुंडा छत्रधारिणीं ।।
जग जननी ज्वालामुखी आदि जोत अनंता देवा अन्नपूर्णा आनन्दी तरन तारिणीं ।।
जोगिणी जय रक्षा करनी विन्दुवासनीं ललिता बहुचरा भवानी असुरदलनीं
महिषासुर मारणी ।।
हिम गिरि हिंगलाज रानी काश्मीरी सारदा कामरु कमक्षा तुलजा
बैजू भक्त सुख कारिणी ।।२७।।

जै माधव मुकुंद मुरार मधुसूदन मदनमोहन मन रंजन मन भावन ।।
जगतपति जगन्नाथ जगजीवन जगबंदन जगपावन जग प्रगटावन ।।
कृष्ण केशव करुनानाथ कंसारि कंस काल कालीनाग नाथन काम जलावन ।।
बैकुंठनाथ बिहारी बद्री बामन बिष्णु वल्लभ बराह बिठल
बैजू बावरे प्राण जीयावन ।।२८।।

जोगी जती सती संन्यासी अवधूत जोग अडंबर भावै तुझ भेख धरे ॥
जप तप तें संजम जम कत दुख हरे करत सब दुख हरे ॥
मन सुमरन ज्ञान ध्यान चित न हरि हरि केर कहे बैजू बावरे
रसना रटत नाम जातें पाप सबही टरे ॥२९॥

जोबन गर्ब सखि जिन कीजे रह्यो न काहू पै और न रहेगो ॥
रावण कुंभकरण हिरणांकशु बड़े बड़े छत्रपति सूर ढयेगो ॥
मधुर रसना से पिय संग बोल ले आगे पाछे कोई न कहेगो ॥
बैजू के साधे सप्त सुर बाजे पीगरे पथर मांझ ताल ढयेगो ॥३०॥

तान गजराज ज्ञान कींनो महावत त्रेवट घंटा बांध ताल अंकुस भर ॥
खरज पाखण्ड री तीन ग्राम सकल अधार धुरन मुरन रन सों जीत
मारत सब एक एक पर ॥
गीत नाद की असावरी धुरपत परबंध तुपक त्रेवट तिलाणा चतुरंग
प्यारे सोहत भूपर ॥
कहे बैजू नायक उक्त जुक्त की बुध वजीर मन राजा राज करत
हरि को ध्यान धर ॥३१

तार सुर के भेद गुनी जन की संगति रहै तो कछु पावै ॥
सीखत सुनत रहे सदा ही ढरनी मुरनि मुद्रा प्रमान सो आवै ॥
आपुही गावै आपुही बजावै तान गीतन के व्यौरे समझावै ॥
बैजू के प्रभु रस बस कर लोने तबहीं रीझ रिझावै ॥३२॥

तीन भिखारी भानुजा की धूप भिखारन चन्द्रमा बीचे री जाकी चांदनी बीचे री
रुकमणी बीचे री जाकी राधिका बीचे री जनकसुता आधीन भई तेरी ॥
इन्द्रप री पग धो धो पीवे बिजरी से उजरी कनोडी भई रहे री ॥
कहे बैजू बावरे सुनो हो गोपाल लाल ऐसी त्रिया कौन सी
जोविधना संवारी ॥३३

तूं आदि भवानी जग जानी सर्बानी सर्ब कला दे विद्या बरदानी ॥
अंबे जगदंबे असुर संघारनी तरन तारनी तान ताल
शुद्ध राग रंग अच्छर दे बानी ॥
सप्त स्वर तीन ग्राम इकइस मुरछना उनचास कोट तान
तिनके लच्छन मोरे जीय में आनी ॥
बैजू बावरो रावरो सेवक यह मांगे नाद विद्या मूरतमान राग
मेरे गरे में समानी ॥३४॥

तेरे मन में केतो गुण रे जेतो होय तेतो प्रकास कर रे ॥
कहूँ तोसे बार बार मूरख मन रे जोई सुर आवे सोई र र रे ।
गांधार को धैवत पंचम को रिपभ खरज को भर रे ॥
कहे बैजू बावरे सुन हो गोपाल नायक नाद विद्या अथाह काहूसों न अर रे ॥३५॥

तेरे मन में केतो गुण रे जेतो होय तेतो प्रकास कर रे ॥
हम जाने तुम सुरे पुरे सोई सुर आवे सोई भर रे ॥
पाहन पिगरावे हिरण बुलावे ज्यों बरसे मेह सरसुती वर रे ॥
कहे बैजू बावरे सुन हो गोपाल नायक अरहु न कर रे धाय
गुनीयन के पायन पर रे ॥३६॥

तोसों लागी रहे पिय सुंदर मन चल चल चतुर उठ नारी ॥
मान गुमान करति जोबन को गर्ब तोंहि वहीं आ वहीं चल तूं आभूषन संवारी ॥
तोरी न मानी बात वेतो कहूं जात जानत हो लछन सब पहिचान
उत पर नारिन सों परम सुख पायउ कठिन होत दूती गंवारी ॥
इत गुरु जन की लाजबे आतुर ब्रजराज बैजू के प्रभु सों मिलोगी
तबहीं सब सौतन के मन मारी ॥३७॥

त्रस्ना कों तजि देहु क्षमा को भजन करहु मद को जीत लेहु नित दया हिय में धारि पाप सों राखो दूर चित सत्य बचन मुख बोल साधु पदवी जीय धारो ।

सत पुरुषन के सेवन करो नम्रता अति बिस्तारो सर्व गुण सों आप गुप्त
विद्वज्जनन की सेवा करो यामें होवै निस्तारो ॥
मान अपमान त्यागो काम क्रोध दुरजन तें भागो ज्ञान ध्यान अनुरागो
हरि नाम उचारो ॥
कोमल बचन मुख भाखो एक ब्रह्म सब जग राखो बैजू प्रभु को घरी पल छिन
निश दिन रटना रटो तातें होय जग उधारो ॥३८॥

दशहरा मुबारक होय तुम कूं संतत संपत और सहित समझाउं ॥
गीत गाय गाय आनंद बधाए राजाराम रहस रहस कर गाउं ॥
लंका जीत राम घर आए सीता मंगल मिल सखि सोहेला सुनाउं ॥
बैजू प्रभु घर आज बधावा भक्ति दान बर पाउं ॥३९॥

दीनों करतार तुम्हें राज साज की सकल सोभा एसी नाह और कोउ जानी ॥
साहब सुजान समझ तान की राखत हो तुम्ह गुनी आय गावत
ए नीकी सुध बानी ॥
जानत है नीके भाग आपन बैजू रहत है रीझ जगत में तुमारी अमीर राव रानी ॥
देत हो दान सनमान दुख दारिद्र विडयन हमरे कारन कियो तुमहूं कों
अब साहिब फिरा नसानी ॥४०॥

धायो रे सज कर दल रामचंद्र लंका नगर ॥
सप्त उदधि त्रसित सेस कमठ कलमलानो महि डगमग
उठत धूर गगन थकित छिपत दिनकर ॥
अरिन दर दरेर चढ़ो महाबली ऐसो सुरो पुरो अडं डडं डन अखंड खंडन नर वर ॥
बैजू प्रभु चले जीत कनकपुरी घर घर निशान नौबत बाजत आयो है
रघुबंस भूषन वर ॥४१॥

नाद पार किनहूं न पायो रचपच नर जनम गंवायो ॥
गगन बंद पवन मंद सप्त सुरन छायो पट रे दीपक गायो ॥
काहे को दीवरो काहे की बाती रूपे के दीवरो सोने की बाती
एकइस मुरछना जोत देखायो ॥
आरोही अवरोही बाइस सुरत प्रकास नायक बैजू दीपक गायो ॥४२॥

नाद ब्रह्म अपरंपार किनहूं न पायो पार सीखत पंडित कहायो गीत संगीत
गुनी जन मर जीया ह्वै न गलायो ॥
सात सप्तक गुप्त प्रगट तीन सप्तक गोपाल गायो ब्रह्मा बेद उचरायो
सारंग बीरायो मोतिन माल पहरायो ॥
गरब धर पार चलो बार उलट ठहरायो देश देश के गुनी सकल सृष्टि महामुनी
तेउ रचपच गयो भेद नहीं पायो ॥
तिनही लुकायो मृग बोलायो गर को हार गोपाल ही दिवायो ॥४३॥

नाद ब्रह्म को अगाध ब्योरो जानत गुनी जन बखानत याको
कोउ न पार पाइया ॥
सप्त सुर तीन ग्राम अकइस मुरछना उरपति रप लाग डाट
राग छतीसो तियाइया आइ आइया ।
रोही अवरोही बाइस सुरत उनचास कोट तान के बिधि गाइया ॥
कहै नायक बैजू मृदंग भेद ताल ध्याय संगीत मत कहे तियाइया ए गेया ॥४४॥

नाद समुद्र पार नहीं पायो सीखत पंडित कहायो धारु धुरपद
धोवा माठा जुगन लों गायो ॥
प्रथम नाद बेद भयो ब्रह्मा बेद उचरायो सारद नारद तुंवर
गंधर्व हा हा हू हू गायो ॥
ब्रह्मा बिष्णु रुद्र चायो हनुमत मत भरत भायो सुर नर मुनि रच पचायो
शिव सनकादिक गायो ॥

कहै बैजू बावरे सुनो हो गोपाल लाल सारंग बौरायो पत्थर मध
डूबे ताल पाहन पीगलायो ॥४५॥

नाम में रूप नाम में विद्या नाम में जप तप संजम रंजन ॥
नाम में ज्ञान ध्यान नाम में सुमरन नाम तिहारो दुख भंजन ॥
नामहीं तें जल पाखान तारे नाम ही प्रहलाद दुख गए दंदन ॥
नाम ही अजामेल बैकुंठ सिधारे बैजू नाम पवित्र मज्जन ॥४६॥

नित लीजिय नाम बनवारी स्याम हरि भक्त पूरन काम कृष्ण बिष्णु जगतारन ॥
जग निस्तारन जन प्रतिपालन कंसासुर मारन संत उधारन
भुवन के भार उतारन ॥
मछ कछ बराह नरहर वामन परसराम राम हलधर नारायण बुध कलंकी
नाना बिध बपु धारन ॥
बैजू के प्रभु एकनी अनेक होय बहु रूप बहु भेष धरे अपने सेवक के
जनम मरण निवारन ॥४७॥

निरंजन निरंकार परब्रह्म परमेश्वर एक ही अनेक होन व्याप्यो विश्वंभर ॥
अलख जोत अबिनाशी जोती रूप जगतारन जगन्नाथ जगतपति
जगजीवन जगधर ॥
वाही में सब जीव जंतु सुर नर मुनि गुनि ज्ञानि नाभि कमल तें
ब्रह्मा प्रगटायो श्री सतरूपा मन्वन्तर ॥
कहे बैजू वही ब्रह्म वही विराट रूप वही आप अवतार भए चौबीस बपुधर ॥४८॥

नैनन कों नहिं परत हैं कल कमलनयन बिन देखे जादोनाथ ब्रजराज ॥
कालिंदी के तीर भारी भई भीर बलबीर बासदेव बनवारी के कारन
तज दई लोक लाज ॥

व्याकुल मलिन बदन सदन की न सुधि रही बुधि हर लीनी
कीनी बावरी सी सरी न एको काज ॥
काहे को देर करी हरि मेरी बेर बैजू को बेगि मिलो प्रभु मनमोहन माधो
सुख निधान सिरताज ॥४६॥

पंच दस साधो गुनि चतुरदिस दरिया ॥
द्वादस बिन घन विचित्र पिंग के गरजे सप्त ध्याय तिरीया ॥
सप्त स्वर तीन ग्राम अकइस मुरछना बाइस सुरत स्वरीया ॥
उरपति रप लाग डाट अति अनाघात धिरीया ॥
आतक खातक स्वरांतक ओडव खाडव संपूर्ण बैजू करीया ॥
उरपति रप लाग डाट अति अनाघात धिरीया ॥५०॥

पंछिनि मनि गरुड़ गजन मनि एरावत दिनन मनि दिवाकर ॥
गीतन मनि संगीत बनन मनि वृन्दावन तरु मनि कल्पतर ॥
नरन मनि नारायण तारन मन ध्रुव तीरथ मनि गंगा देवन मनि संकर ॥
नारिन मनि उरवसी पुष्पन मनि कमल दास बैजू मनि मुख मुरलीधर ॥५१॥

प्रजापति द्विजपति आदिदेवपते जगतपति ब्रह्मा ॥
सावित्रीपति चारु निगमपति हंसबाहनपति ब्रह्मा ॥
षट्दर्शनपति भृगुपति कहिएत चतुराननपति चतुर करमा ॥
करि उक्त जुक्त जाचक जन बैजू नित उठ करे परकरमा ॥५२॥

प्रथम आदि शिव शक्ति नाद परमेश्वर नारद तुंवर सरस्वती फणपति रे ।
अनाहत आदि नाद गुण सागर स्वरूप ब्रह्मा बिष्णु महेस लछमन रे ॥
आदि धरणी शेष आदि चंद्र सूर्य आदि पवन पानी आदि अनगन रे ।
आदि बैजू के प्रभु कर गुरु प्रसाद सुध बुध मत गुन गन रे ॥५३॥

प्रथम ॐ कार टेरो ब्रह्म चतुरानन जाकों अक्षर सब रंग भरपूर रह्यो
बानी तारन तरन ॥
अलख अपार अगम निगम रहत करत राग रंग उर धार धरन ॥
गुन गुनरहित सरगुण निरगुन सब जग अधारन ॥
बैजू प्रभु आदि जोत निरंजन निराकार सूक्ष्म विराट रूप घट घट
व्याप रही नारी नरन ॥५४॥

प्रथम उठ प्रात ही हरि हरि हरि हरि हर रे मन मेरे याते होवै सुफल अष्ट जाम ॥
यह लोक परलोक के स्वामी वैकुंठ होवे विश्राम ॥
दीन दयाल कृपाल भक्तवत्सल भक्त जनन अभिराम ॥
बैजू बावरो रावरो कहाय के अब काहे कूं भटकत चौरासी लख धाम धाम ॥५५॥

प्रथम नाद मूल तें उचरे ताल बंधान सो गावै ॥
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मुर्छना बाइस सुरत उनचास कोट तान लावै ॥
अंस ग्रह न्यास विक्रत द्वादश भेद सों भरत संगीत हनुमत जतावै ॥
कहे बैजू बावरे सुन हो गोपाल नायक ऐसी विद्या सो को लरे पाहन पिघलावै ॥५६॥

प्रथम नाद मूल तें उचरे ताल बंधान सो गावै जो आवै सो परे ।
सप्त स्वर तीन ग्राम इकइस मुर्छना बाइस सुरत उनचास कोट तान सम भरे ॥
उरपति रप लाग डाट अंस न्यास ग्रह आतक खातक स्वरांतक
ओडव खाडव उचरे ॥
कहे बैजू बावरे सुनो हो गोपाल यह विद्या अपरंपार गुण चरचा सों लरे ॥५७॥

प्रथम नाम गणेश को लीजिए जा सुमरे होए सिद्धि काम ।
जय गिरिजानंदन जगवंदन लंबोदर तोहि जपत आवे रिद्धि सिद्धि होय सुखधाम ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि पाये सुख विश्राम ।
कहे बैजू बावरो निश दिन सुमिरो नाद विद्या प्राप्त होय लिए नाम ॥५८॥

प्रथम नाम लीजिए प्रात ही हरि हरि हरि हरि हरि हरि निशि दिन घरि घरि
पल पल अष्टजाम ॥
जशोदा नंद आनंदकंद मधुसूदन बालमुकुंद भक्तवछल जन विश्राम ॥
दामोदर दयासिंधु भक्तबत्सल भगवान बैकुंठपति बृन्दावन धाम ॥
बनवारी बैजू प्रभु बद्रीनाथ बिठल विष्णु वामन ब्रज विश्राम ॥२६॥

प्रथम भैरवनी के बस प्यारे भए रवि के उदै आए राम किरिया खात ॥
विभस भए देखियत गात उदै सकार कौन तिय ललित वचन बोलत हो तुतरात ॥
बेला बेर बीत गई आली आस पूज गई देव गरीब निवाज काको भो संगम
खटपट भई रात ॥
दे सीख सुघर तीय सु आ वस्त्र पहर खड़ी सुघराई जानि परात ॥
हम असावरी सारी रैनन तुम देव गंधारी गावत गुजरी सुन बीतो परभात ॥
तोड़ी हमसों प्रीत जौनपुर बसत है नवल तीय सी देख उने जाय लाचार हो
बहादुर हैं रात ॥
जंगल जंगल ढूँढ़त हारी झिझवट जिन करो मेरे प्यारे आस जोत बिहात ॥
सारंगनैनी पास जावो मधु माधवी वर हंसनी सामंत प्यारे बृन्दावन
मध इहां लंक दहात ॥
धन धन श्री मूल तान मंत्र पढ़ डाल्यो अभी मैं पलक छिन निरखत तुमको पूरी या
बड़ भाग गात ॥
जै श्री वाको पूरब पूरे पुन्य फल जाको पूरवा लखात ॥
भाग वाने दई है काम की श्री महराज गोरी गोरा टकरात ॥
एमन होत कल्याण को चाहत भूपाल बड़े हमीर पूरो
रात को मो दीयत कर छाया पग डगमगात ॥
ऐंड़ात जंभात वही नायक हो जु कान्हर बागे केसरी कंठमाल
कौस्तुभ मणि गहना बोल सुहात ॥
वाके दरबार में गए बहार करन हिंडोरे पांच में बसत हो भंवर नाम कहात ॥

बिहागत भई मेरी खंभा पकर ठाढ़ि रहत बरज्यो दुख बीती मेरी कासे कहूँ बात ।।
सो रटना लागी स्याम मेरी जो जो बतियां करार कर गए सोहनी मोहनी
कर घात ।।
मोहिं अहीरी जान गोकुल ग्वालिन चाल चलत चलत छांद कहि जात ॥
कपोल कहां पीक लागी जानिहै जु जानि दीपक चंद प्रकास भए लीलांबर
ओढ़ आए कालि गए अवधि दे रात ॥
ए घनस्याम मौला नटवर नर है वाही के गोड़े पग धरात ।।
बांके श्री बिहारी लहर लोम पहाड़ पै कंकन गड़ात खंडिता नायिका की बात ॥
बैजू बावरी रावरो हितु तिहारी राग सागर गावत तिल तिलक सिर मांझ देखात ॥६०॥

प्यारे तूंहीं ब्रह्म तूंहीं विष्णु तूंही रुद्र तूंही शिव शक्ति तूंहीं सूर्य तूंहीं गणेश ॥
जल थल पवन पानि तूंही तेज तूंही आकाश तूंही अग्नि तूंही
जोत तूंही सुरेश ॥
तूंही उंच तूंही नीच तूंही है सबहींन के बीच तूंही चंद तूंही दिनेश ॥
तूंही एक तूंही अनेक गुरु चेला तूंही अलेख बैजू बावरो तोही सुमिरत
तोंहि तें कटत कलेश ॥६१॥

प्यारे बिन भर आए दोउ नैन ॥
जबतें स्याम गवन कीनों गोकुल तें नाहिं परत री चैन ॥
लगे न भूख प्यास न निद्रा मुख आवत नहिं बैन ॥
बैजू प्रभु कोई आन मिलावै वाकी बलिहार चरन रैन ॥६२॥

बंसीधर पिनाकधर गिरिवरधर गंगाधर चन्द्रमा लीलाधर हो हो हरिहर ॥
सुधाधर विषधर धरनीधर शेषधर चक्रधर त्रिशूलधर नरहरि शिवशंकर ॥
रमाधर उमाधर मुकुटधर जटाधर भस्मधर कुंकुमधर पीतांबरधर व्याघ्रांबरधर ॥
नंदीधर गरुड़धर कैलासधर बैकुंठधर कहै बैजू बावरे सुनहु गुनीजन निशदिन
हरिहर ध्यान उर धर रे ॥६३॥

बरनन को करि सकत हरि के गुणानुवाद शेष सहस्त्र मुक पावत नाहीं पार ॥
सनक सनंदन सनातन सनतकुमार ब्रह्मा शिव व्यास सारद नारद हा हा हू हू
गंधर्व गावत नित नित नाम सार ॥
सुर नर मुनि सब रच गए पच गए वाको मरम भेद कोउ न जानत अपरंपार ॥
बैजू बावरे प्रभु भक्तबछल हैं सब जग के करतार ॥६४॥

बावरे के संग साथ बावरी सी भई मैं बापहू बिबाह दीनी बावरो सो जान के ॥
जानिहू न जात कौन गुरु कौन नाथ लीलाधारी लीनो भेष सर्प विष
लपटान के ॥
त्रिशूल खपर हात नैनां जो अघात जात आडंबर बाघबर सिंगी पुरी आन के ॥
बैजू बावरे कापै कीजे रोष अपने करम दोष जीवै मेरा भोलानाथ
भाल मैं जो लीनों मान के ॥६५॥

बोलियो न डोलियो ले आउं हूँ प्यारी को सुन हो सुघर वर अबहीं मैं जाउं हूँ ॥
मानिनी मनाय के तिहारे पास ल्याय के मधुर बुलाय के तो चरण गहाउं हूँ ॥
सुन री सुंदर नार काहे करत एती रार मदन डारत मार चलत पत बुझाउं हूं ॥
मेरी सीख मान कर मान न करो तुम एसे बैजू प्रभु प्यारे सो बहियां गहाउं हूं ॥६६॥

मन में जोति प्रकास बारले दीयरा रे सारंग ।
अनाहत आदि नाद बेदांग गुणकार संगीत साधंग ॥
आदि नाम कूंमार रे सत संगत सों नारद तुंवर सरस्वती साधंग ।
भनत बैजू बावरे नायक गोपाल लाल सब गुणियन में असाधंग ॥६७॥

मुरली बजाय रिझाय लई मुख मोहन तें गोपी रीझि रही
रस तानन सों सुध बुध सब बिसराई ।
धुन सुन मन मोहे मगन भई देखत हरि आनन ॥

जीव जंतु पशु पंछी सुर नर मुनि मोह लिए सब प्रानन ॥
बैजू बनवारी मुरली अधर धारी वृन्दावनचंद बस किए सुनत ही कानन ॥ ८॥

मेरे तो कृष्ण नाम अधार जिन रच्यो जग पसार लोभ तृस्ना
काम क्रोध तजो जंजार ॥
जिन रच्यो आदि अंत भुव अकास त्रइलोक निरंजन साकार
निश्चय कर जपो श्री हरि मुरार ॥
जुग जुग भक्त हेत अवतार लेत हैं भक्तन प्रान अधार ॥
बैजू बावरे प्रभु को चरन सरन गहिए मनुष जनम नहीं बारबार ॥६६॥

मेरे नहीं आए हो नंद लला जाओ क्यों न तिनके गृह जिनके रस बस भए
रहे सुख वाही रैन जागे ॥
धन धन भाग सुहागनि सरस सुंदर तिया रंग अंग आभूषण रंग देखि
ब्रज भूप प्रेम पागे ॥
तुमहो गोपाल जु बाल जात अहीर बेपीर पर नारिन सों हित चित री
तुमरे नैना लागे ॥
बैजू प्रभु निडर ढीठ लंगर डगर डगर घर घर फिरत छैल लागे जावक चिन्ह
रस चाखे मदन तें सुख सदन देखो बदन ढिले बागे ॥७०॥

मोहन जागो मनोहर मधुसूदन मदनमोहन मुरारी माधो मुकुंद मन भावन ॥
जागो जागो जान राय जगतपति जगजीवन जादोनाथ जगदानंद जगत
सुख प्रेम बढ़ावन ॥
जागिए जु कान्ह कुंवर के बल कल्याण राय जागिये श्री कृष्ण चन्द्र
प्रेमानन्द पावन ॥
जगत के जगैया तुम प्रभु बैजू के स्वामी बलिराम कृष्ण जु के भैया पाप नसावन ॥७१॥

रंग रंग के अनेक रंग रंगे विधना ताको वार न पार ॥
पशु पंछी सुर नर मुनि परमहंस भांत भांत के भांडे बनाए
स्वेत पीत श्याम रक्त है करतार ॥
तूंही आदि अंत तूंही तूंही सबमें रम रह्यो तोहीं तें सब जग बिस्तार ॥
एक ही अनेक होय व्याप रहो घट घट बैजू प्रभु निरंजन वही साकार ॥७२॥

राग रंग सुध मुद्रा सुध अक्षर सुध छंद पइयत है सांचो गुरुन सों पावे लेख ॥
सुर भेद ताल भेद बिचार के साधे ध्याय ताल ध्याय वाद्य नृत्य
प्रकीरन संगीत शास्त्र को देख ॥
धारु धुरपत प्रबंध छंद गीत गुनी मात्रा चतुरंग त्रेवट तिलानी देस बिदेस
भाषा संस्कृत बिसेख ॥
कहे बैजू बावरे सुन हो गोपाल नायक हिरन बोलावे पाहन पिगलावे
तेरी लाख मेरी एक ॥७३॥

री जाको जोगी मुनि जग जपत रिद्ध सिद्ध ऋषि जपत गुणी गंधर्व नारद सारद
जपत अष्ट जाम री ।
चद्र सूर्य जपत इंद्र पवन पानि अग्नि बरुन सुर नर मुनि पशु पतंग
जपत कर परनाम री ॥
सती जती सूर बीर जपत असुर अखिल विश्व विश्वंभर जाको नाम सबको
विश्राम री ॥
ब्रह्मादिक सनकादिक जपत शिव पार्वतादि तोंही तोंही बैजू जपत ब्रह्मा को
सुखधाम री ॥७४॥

विद्या सोइ क्यों न गाइए जामें मिल हेरी नंद लाल ॥
बृंदावन सघन कुंज रमित नाचत रास बाजे मृदंग
ताकट तक तक धुमकट तक गावत बिबिध दे दे ताल ॥

सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मुरछना प्रमान बंसी मध टेरत तान
थकित सुर मुनि बिमान रखत है कुसुम माल ॥
बैजू प्रभु के साधे तीन लोक मोह लियो ब्रह्मा महादेव ध्यान थकित
चंद्र सूर्य पवन पानि सेस पताल ॥७५॥

विद्या सोइ भली जामें पइयत हे री लाल ॥
कुंज भवन में आय बैठ रीझ दई मृगछाल ॥
गुप्त सप्त प्रगट छतीस डांडी बांध आयो नायक गोपाल ॥
बैजू के गाये ते सप्त सुर भूल गए पींगरे पाखान बूड़े ताल ॥७६॥

संसार तारन तूंही बिधाता तिहूँ लोक पृथ्वी नमोनमो संसार तारन ॥
असुर संघारन रावन मारे लंका गढ़ जारन तूंही बिधाता तिहूँ लोक
पृथ्वी नमो नमो संसार तारन ॥
कुंभकरन इंद्रजीत हिरण्य हिरण्याक्ष रक्तबीज महिषासुर भस्मासुर मारन ॥
दंतवक्र शिशुपाल कंस केसी अघा बघा बैजू प्रभु किए उधारन ॥७७॥

समझ सोच ले मूरख निदान रे जग में दोय दिन के है तेरे अभिमान रे ॥
आदि अंत वोही सबको प्रान रे कर ध्यान रे हरि उर अंतर घट घट में समान रे ॥
जल थल भूमि अकास रे सब ठौर जाको प्रकास रे जाकी धरो नित आस रे
सोइ है बैकुंठ निवास रे ॥
और बिकार दुबिधा तज रे हरि भज रे बैजू चरन प्रभु होय रज रे
गोपाल भजत जलज रे ॥७८॥

सुंदर अति नवीन प्रबीन महा चतुर तार मृगनैनी मनहरनी चंपक बरनी बार ॥
केसरी कटि कदली जंघ नाभि सरोज श्रीफल उरोज चंद्रबदनी शुक नासिका भौंह
धनुष काम ढार ॥
अंग अंग सुध पद्मनी भंवर गुंजत सुबास आवत क्रोध नहीं सांत सरूप
कृस नाहिं दबी जात बारन के भार ॥

धन धन जाको भाग तोसों तिया ता घर बैजू प्रभु रस बस कर लीने
काम जाल डार ॥७६॥

सुंदर मृगनैनी का मन ऋत मानत पति संग ॥
भुज पर सीस कपोल दशन मध कुच पर कंचुकी तंग ॥
जांघन पर जांघ मुख तंबोल अधरन पर टपकत रंग ॥
यह भांतन के सुख दे सुख ले रंग बाल बैजू केल अंग ॥८०॥

सुफल जनम भयो री आनंद गोकुलचंद बखत बलिबंस उजियारो ॥
नीके दिन नीकी घरी मुहूरत शुभ योग प्रगटे बड़े भाग नंद दुलारो ॥
एक नाचत एक मंगल गावत एक मृदंग बीन एक घन शिखर उचारो ॥
एक हरद दूब दधि अछत रोरी ले छिरकत बैजू करत कोलाहल भारो ॥८१॥

हरि नाम बोल ले सुगना तेरो जनम सुफल सब होय ॥
एक दिन प्रान पींजरा तें जब उड़ जायगो तब कछु न बस चलिहै
हरि के चरण चित पोय ॥
बृथा जनम जात है तेरो तन के पातक ले धोय ॥
बैजू प्रभु परम कृपाल दयाल है पतित पावन है सोय ॥८२॥

हरि प्रेम रस छके छके अजहूं न मन अघाए ॥
बिरह बावरी रहत निस दिन आनंद उर न समाए ॥
सोवत जागत बिहरत हरि हरि याही छिन छिन चित लाए ॥
बैजू बावरे प्रभु को ध्यावत और नहीं मन भाए ॥८३॥

हित करे तासों ना कर रार गरब न कीज्ये रे गुनी ।।
गर्ब किए कछु हाथ न आवै भरम गमावत क्यों अपुनी ॥
गीत छंद धारु धोवा माठा प्रबंध चर्चा घनी ।।
कहे बैजू नायक सुनिए गोपाल लाल रचपच गए मुरार मुनी ।।८४।।

तानसेन

अति अलसाने में जाने पिय अनत रंगे जु रंगे हो रंग राग के ।।
रीझ हेत काहू पै रीझ कैसे बात जानत रस के वर खाई आज
भंवर काहू बाग के ।।
दोप तिहारो नहीं दोप काहू तिया को तुम सिखाई सीख अनुराग के ।।
तानसेन प्रभु तुम बहु नायक बात कहा बनावो सुधारो पंच पाग के ॥१॥

अनत रितु मान आए पिय भोर ही मेरे ।।
मोहिं तो सुध भूल गई री मोहन मुख हेरे ।।
जिय की और सों मुंह की हमसों कहत हैं टेरे ।।
तानसेन प्रभु ताहि पै सिधारीएतु अमन रह्यो जिन तन नेरे ।।२।।

अनहद शब्द उपज्यो मो घट में ताको ध्यान करु अष्ट जाम ।।
खरज रिपभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषाद पावै ज्यों अति अभिराम ।।
अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदारथ पाए जब प्रगट्यो नाद ब्रह्म
सहस रूप अनंदधाम ।।
धन धन जोती सरूप आचरज कर और परसें तानसेन कंठ ठाम ।।३।।

अब मैं आगम पायो री माई री पिय के आवन की सो कुच भुज फरकीली और
आंख वाही कागवा सगुनवा सुनाई ।।
नीके सगुन सब होत हैं मन इंछा पूजु नैनन की तानसेन मिले मोहे
सुखदाई ॥४।।

अब मैं राम राम कह टेरों ।।
मेरे मन लागो उनहीं सीतापति पद हेरो ।।

चरन सरोज श्रवन मन मेरो भुज अंकुस सुख केरो ॥
तानसेन प्रभु तुम हो नायक इन तरवन पर फेरो ॥५॥

अरुन बरुन सरस्वती गुप्त प्रगट होत चंद्र किरण जोति आकाश पर छुवत भुज तेनी
तैसे बन बन तेहु मिलन चली लाल अति रंग भीनी ॥
भागिरथी तुंरो भगत तारन सरगउ धारण साराणी ॥
सब भू अपावन पै धार तीरथ प्रयाग वे तारी जलोधापति धरनी तरनी ॥
तो लों उतपति नर नारी ब्रह्मा बिष्णु मकर न्हावत करत अस्तुत गावत भर
नाद तानसेन गुणी ॥६॥

आइए जु कैसे आवन पाये भले हे आये मेरे नवल लाल ॥
तुम हो चतुर सुजान वृझत सब गुण निधान महा ज्ञान मूरत हो अति रसाल ॥
हम सों अवध बद अनत विरम है एसी न कीजे दीन दयाल ॥
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक दीजिए दरस कीजिए निहाल ॥७॥

आज कहां तज बैठी है भूषन एसे अंग कछु अरसीले ॥
बोलत बोल रुखाई लिये तुम कहे कुढंग किये अहसीले ॥
क्यों न कहो दुख प्राण पिया सो अंसुअन रहे भर भर नैन लजीले ॥
तानसेन सुख होवे जिनके तिनके मन भावन छैल छबीले ॥८॥

आज कान्ह बृंदाबन मुरली बजाई सुखदाई है ॥
स्वर्ग लोक नर लोक पताल लोक सब सुन धुन सुध बिसराई है ॥
सप्त सुर तीनग्राम इकइस मूरछनाबाइस सुर्तउनचास कोट तान रंध्रन में छाई है ॥
तानसेन के प्रभु रस बस कर लीने व्रज बधू घर छोड़ स्याम जू पै आई है ॥९॥

आज बन बन मुरली बजावत सुधि सिधि सुध तान के लेवैया ॥
कांधे कमरिया हाथ लकुटिया टेढे ही टेढे आवत नंद को कुंवर कन्हैया ।

सांवरी सूरत माधुरी मूरत बृंदावन के बसैया ।।
तानसेन प्रभु बनवारी गिरधारी ब्रज बिहारी बलि जु के भैया ।।१०।।

आज बजाई मुरली मनोहर ने सुध न रही री कछु मो तन मन में ।।
हौं जमुना जल भरन जात ही कान्ह ठाढ़ोरी बृंदावन में ।।
सुध न रही री कछु गठन की अंगन में भूली काम काज सब घरन में ।।
तानसेन के प्रभु तुम बहुनायक मेरो मन मोह्यो आली मदन मोहन में ।।११।।

आज मेरे भाग जागे पिव भोर ही सुध लई ।।
इतनी भई निहाल पिय तुम पै बल बल गई ।।
तन मन प्रान तुमहीं निसदिन तुमरे रंग रँग गई ।।
तानसेन प्रभु तुम चतुर शिरोमणि रस बस तिहारे भई ।।१२।।

आज हरि लिए और अन होली गइया एक ही लकुट हो हांको ।।
क्यों क्यों रीकी नो मोहन तुम सोई त्यों अनुराग हम पर देखत मुखा को ।।
हम जो मनावत कहूँ जो तुम मानत बतिया गडवां की ।।
तृण नहीं चरत बछरा नहीं चोखत हम कहां जाने कहे कहां की ।।
तानसेन प्रभु बेग दरस दीजै सब मंतर पढ़ आंकी ।।१३।।

आदि देव महीसुर गौरी ईश बिरूप आछै गंगा जटा जूट ।।
यह अनुचर वंदन कर मांगत तुअ पग प्रसाद तें पाउं राग
विस्तार तान उनचास छूट ।।
तुअ समान और नाहीं अबिगत अबिनासी ह्वै रहे भुवलोक अध अटूट ।।
भोलानाथ भस्म भूषन गंग शिखर डिम डिम डंवरू बाजे ।।
तानसेन सेवक को दीजे अन धन दूध पूत अखूट ।।१४।।

आनंद भयो आज आयो बिजै कर घर घर मंगल चार ॥
अनेक गज तुरंग साजे नौबत नगारे बाजे गज तुरंग साजे स्वार ॥
तन बित न घन शिखर नाना बिध बाजत सुरपति के द्वार ॥
ब्रह्मा बेद पढ़े नारद मुनि गावै राजा रामचंद्र जू के बार ॥
तानसेन कहे सुनो साह अकबर दशहरा सुफल भई तिथि वार ॥१५॥

ओंकार ब्रह्मा उचारो चारहू मानन तार करन सप्त प्रमान ॥
सप्त स्वर तीन ग्राम इकइस मूर्छना बाइस सुरत उनचास कोट तान ॥
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई असंन्यास ग्रह जान ॥
औडव खाडव सुर संपूरन तानसेन गुरु ज्ञान उर आन ॥१६॥

इंदु से बदन नैन खंजन से कंठ कोकिल बचन सुहाई ॥
नासा कीर अधर बिद्रुम दाड़िम दसन दमकाई ॥
श्रीफल उरोजन ग्रीव कपोत बैनी नागन सी सुखदाई ॥
कटि केहरि कदली जंघ पद सरोज पद्मा सी तानसेन एसी ते बल बल जाई ॥१७॥

इत भान उत साह अकबर दो दरस ज्यों देखे सोई होत पवित्र इंद और जन
मंद सुर के बर पावै गुपत आनंद ॥
वे तिमिरहरन ए दुःखभंजन ताकि सोहे करियत साह दिनों मकरंद ॥
वह सहस किरन प्रकाश कीनों अति बुध श्रेष्ठ मयाधर जगबंद ॥
तानसेन कहे कहां लों अस्तुत करे काटन हार विकार दुख दंद ॥१८॥

ईद मुबारक होवै जम जम नित नित तुम कूं मेहरबान ॥
सकल विद्या गुन निधान अति ही आनंद करो देत गुणीन कूं आदर मान ॥
जुग जुग जीवो कोट बरस जी देवो करो नित दान ॥
तानसेन कहे सुनो साह अकबर चहूँ चक राज करो मरदन महा मरदान ॥१९॥

ए आज बांसरी बजाई बन मध कौन ढंग कौन रंग फूकि फूंकि ॥
सुनत श्रवण सुधि रही नहीं तन की भई है बावरी बृंदाबन दिशि हेरि
फूकि फूकि ॥
ब्रह्मा बेद पढ़त भूले शिव समाध मांह डोले सुर नर मुनि मोहे देवांगना देखे
लुकि लुकि ॥
सप्त स्वर तीन ग्राम इकइस मूरछना ले तानसेन प्रभु मुरली बजावत बोलत
मोर को कला कुहुकि कुहुकि ॥२ ॥

ए आज भोरही आए हैं कान्ह गुर्जरी के धाम ॥
सप्त सुर सों गावत तानन मुरली में गुर्जरी नाम ॥
उरपति रप लागडाट आतक खातक स्वरांतक ओडव खाडव सो रिझावत बाम ॥
तानसेन प्रभु नित प्रात आंनद देत घर घर गोकुल गाम ॥२१॥

ए आयो आयो मेरे गृह छत्रपति अकबर मन भयो करम जगायो ॥
पाछलो पुन्य मेरो प्रगट भयो यातें अर्थ धर्म काम मोक्ष चारो फल पायो ॥
काहू की न इंछा रही तेरे दरस देखे पाप तज धर्म राज अचल कर पठायो ॥
तानसेन कहे यह सुनो छत्रपति अकबर जीवन जनम सुफल कर पायो ॥२२॥

ए आयो आयो रे बलबंड साह आयो छत्रपति अकबर ॥
सप्त दीप और अष्ट दिसा नर नरेंद्र घर घर थर थर डर ॥
निसदिन कर एक छिन पावे बरनन पावे लंका नगर ॥
जहाँ तहाँ जीतत फिरत सुनियत हे जलाल दीन महमद को लश्कर ॥
साह हुमायूं को नंदन चंदन एक तेग जोधा अकबर ॥
तानसेन को निहाल कीज्ये दीज्ये कोट नजर जरी नजर कमर ॥२३॥

ए ईश्वर मोहीं को जानत गत जो बितत बिना देखे तुअ दरस ॥
एक निमख पै नाहन निरखन में सांस अकुलात कछु न सोहात मन
नैन दोउ जात तरस ॥

भव भंजन मन रंजन काटत दुख दंद फंद एसो जग में ब्याप रहो सरस ।।
तूंही आदि तूंही अंत तारन तरन तानसेन तूंही अरस परस ।।२४।।

एक कर दर्पन एक कर कजरा अचरा गहे सुधारत ।।
ललना एक काजल में दूर करन उठत मोर मुख कमल परत सीसफुल
अति बिराजत ।।
गगन जरत की उपमा जीय भई मेरे जानवेउ दूर रहे सकुचात लजात ।।
जे कहियत है मानो फुर दुरुत हीं तानसेन देखत दुख भाजत ।।२५।।

एकदंत गजबदन बिनायक बिघ्न बिनासन है सुखदाई ।।
लंबोदर गजानन जगबंदन शिव सुत ढुंढीराज सब बरदाई ।।
गौरी सुत गणेश मुशक बाहन फरसाधर शंकर सुवन रिद्ध सिद्ध नव निद्ध दाई ।।
तानसेन तेरी अस्तुत करत काटे कलेश प्रथम बंदन करत दंद मिट जाई ।।२६।।

एक बल निरंकार दूजे बल चंद सूज तीजे बल लोक चौथे बल प्रकाश ।।
पंच बल भूत आतम छठए बल नारायण सप्तए बल सागर अष्ट भुजिन
नव बल नव कुली नाग दशए बल अवतार प्रगाश ।।
ग्यारह बल रुद्र एकादशी बारह बल वामन तेरहे बल त्रईलोक चौदहवां बल
दे विद्या पचास ।।
पनरे बल तिथि सोरह बल सिंगार सत्रह बल सत्यावती अठारह बल वनस्पति
उनवीस बल पिनाकधर बीस बल लक्ष्मी अकइस बल तानसेन प्रगाश ।।२७।।

ए तुम सज साज दल चढ़त जब भूप पर भार होत
थर थरात देश देश के गढ़पति सुन धाक धर हरात ।।
जाके चढ़ें तें खुर रेनु उड़त गगन छिप जात खलबल परत सिंहहू पै
बाजत निशान जब शब्द घहरात ।।
देव दानव और राव रुनो भाज गए सब पाताल लों कमठ पीठ कलमलात ।।

सहस सहसकुन फाटकहि चूर चूर भयो थरहरात ॥
महाराजन्मणि राजाराम रामचंद्र की असवारी होत ॥
अश्वदल गजदल पयदल सुन सुन अकबकात धक धकात ॥
एसो सुरो पूरो तप तेज वो सो वोही दूजो नाहीं मेरे जान तानसेन गुनी जन को
अजाचक कीनो वाकी सुरत मूरत पर खल बल जात ॥२८॥

एकदंत मंत लंबोदर फिरत जाहे बिराजे ॥
गणेश गौरीसुत महा मुनि महिमा सागर गुरु गन नाथ अविघन राजे ॥
हे रंब गन दीपक तूंही महातुर उग्र तप बट चंद्रमा सों छविनायक जगत से
सिरताजे ॥
तानसेन को प्रसाद दीजे सकल बुध नव निध के सदा दायक लायक जगत
के सरे काजे ॥२९॥

ए दारु पिलाव कलाली तानसेन कूं खुमारी भई अंत बिहाली ।
दुवा साह जलाल की प्याला भर भर पिवाउं हो लाल दुलाली ॥३०॥

ए मन जब लग नैन प्रान तब लग जीयत सब काहू को दीदार ॥
जब लग जिए तब लग कीजिए राग रंग घरी घरी पल पल छिन छिन
जात न लागे वार ॥
साच ही बोलत साच ही तोलत साच ही कीजे बनज बिहार ॥
तानसेन के प्रभु साच ही में रम रहे यातें समझ बूझ देखिए जग
सपनो संसार ॥३१॥

ए मन तूं जो अपनो सुख चाहत है घरी घरी पल पल छिन छिन
सुमर ले श्रीराम नाम ॥
जो जग जप तप नेम धर्म ब्रत संजम ज्ञान ध्यान गहे दृढ़ हरि चरनन बिश्राम ॥
और उपाय नाहीं कलिजुग में कृष्ण कृष्ण कहत होय आराम ॥
तानसेन प्रभु को चरन सरन गह ले जासों पावै बैकुंठ धाम ॥३२॥

ए मेरे भाग जागे पिय भोरहू सुध लई ।।
मैं इतनो भलो मनावत हूँ बलमा हो तुम पर बल गई ।।
अधर न अंजन महावर भाल मत गत और भई ।।
तानसेन के प्रभु ठाढ़े रहौ बलैया लैहों कहाँ पै तिय नई ।।३३।।

ए री अब आनंद भयो री लालन आए री मेरे महल ।।
तत बितत धन शिखर मृदंग बजावो तार तानसेन की गावो करेगी सहल ।।३४।।

एरी अब लुक भाज जाइबो सनमुख होय पीयारे सों रंग भरी कीजिए बतियाँ ।।
मान सिख मेरी काहू कूं मत न लीजिए छाड़ यह हठ चल लिपट लाग लाल की छतियाँ ।।
देख तूं एसी फुलवारी सी हो रही कर अपबस सुंदर में मनाय रही रतियाँ ।।
कब के जोवत बाट प्रानेश्वर प्यारो जान बूझ के काहे को तानसेन प्रभु सो घतियाँ ।।३५।।

एरी आली आज शुभ दिन गावहु मंगल चार ।।
चौक पुरावो मृदंग बजावो रिझावो बंधावो बांधो बंदनवार ।।
गुनी गंधर्ब अपसरा किन्नर बीन रबाब बजे करतार ।।
धन घरी धन पल मुहूरत तानसेन प्रभु पर वलिहार ।।३६।।

एरी गंवार ग्वार तूं कहा जाने रोगी पीन को मरम ।।
कांध कामरी और हाथ लकुट लिए ताकों जिय कहा होत नरम ।।
कटि सोहै पीत बसन डारो फिरत याही तें जानि जात तेरो धरम ।।
तानसेन कहे शबरी को जूठो खायो ताके जिय कहा होत सरम ।।३७।।

एरी तूं अंग अंग रंग रानी अनहो सयानी रितु पिय मन मानी ।।
सोलह कला समानी बोलत अमृत बानी तेरो मुख देखे चंद जोतहू लजानी ।।
कटि केहर कदली जंघ नारा का पर कोट वारों श्रीफल उरोजन की छबि आनी ।।
तानसेन कहे प्रभु दोउ चिरजीवी रहो तेरो नेह रहे जौलों गंग जमुन पानी ।।३८।।

एरी हम जात रही डगरी डगरी पहै सगरी सीस धरे गगरी ।।
हमहू देख दौरो एकटक गोरी अनट कीनी सगरी ।।
जमुना जान देइ ना जल को नाहन फिरे नगरी ।।
मुरली अधर धरे ठाढ़ी पग री अचगरी बातें करत हंसी की
अहो जशोदा सुनो कान्ह की कीरति बिगुरी तानसेन प्रभु सबन तें अगुवाए सो ढीट
कोइ नाहिंन या जगरी ।।३९।।

एरी हो रीझ देख भोरही उठ के प्यारी कजरारे दृग दोउ कर सों लागे मलन ।।
पुनि या छबि सो ऐंडात जंभात नीर बही मानो कमल मध ते अलक सुत छुटे
लागे चलन ।।
चंद्रबदनी मृगनैनी बिन देखे घरी पलकन ।।
तानसेन देख रीझ मगन भए सुंदर नार अबलन ।।४०।।

ए सखि नंदकुमार बालापन में मेरो मन हर लीनो ।।
जिय अकुलात और नैनन सो नीर जात मेरे हिय को दुख दीनो ।।
सांवरो सलोनो स्याम बाट रोक ठाढ़ो भयो मोको बुलाय पास
अधरन को रस लीनो ।।
नैनन सों नैना मिलाय हदै सो हदै लगाय तानसेन बंसी बजाय
जादू सो कीनो ।।४१।।

एही सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूरछना गीत छंद धोवा माठा प्रबंध त्रे वट तान ।।
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई बादी बिवादी संबादी अनबादी जान ।।

खरज ऋषभ गांधार मध्य पंचम धैवत निषाद तान आन ॥
सारे गम पधनी सानी धप मगेर सा तानसेन कह्यो ग्रंथ प्रमान ॥४२॥

कटाच्छ बाट देत कर पल्लम बस्तर लाए अंजन सुधार ॥
अंजन किए चाहत एक कर दरपन लिए बदन निहार ॥
कटि केहर कदली जंघ शुक नासा पै बार ॥
तानसेन के प्रभु एसी प्यारी सुंदर निरख बलिहार ॥४३॥

कठिनाई पिय को री निहार गेहरा नहीं भावै रही नित उदास ॥
सबन समान मेरे जान आली अरध उरध दोउ सांस ॥
मोहे जगत रैन चैन नहीं नैनन तातें सुपनेनहू में कहा सो भई सुपनेनहू आस ॥
तानसेन प्रभु समझ समझ कियो भोग बिलास ॥४४॥

कराल बदनी काली त्रिसूल खपर मोहै चंडी असुर संघारन कारन ॥
महिषासुर मर्दनी इंद्रानी महेश्वरी मेनकात्मज उमा कात्यायनी भैरी
तरन तारन ॥
नारायणी निरग्रंथा काश्मीर अस्थानी शिवा रुद्रानी अपरंपारन ॥
नग्रकोट रानी महिमा तुअ जानि तानसेन निसदिन सुमरत संकट निवारन ॥४५॥

कृष्ण केशव कमलनयन केसी दलन कान्हर करतार सुरन के बरन करुणानिधि
कुंजबिहारी काम कंदन किशोर ॥
जोग ध्याजो तरु जनार्दन मकुन्द माधो रंगनाथ रागी के सरन छोर ॥
पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम प्रहलाद उधारन महाबली जोधा नहीं और ॥
तानसेन प्रभु भक्तन रक्षो करो अनत अकोर जन चितवत कोर ॥
रच पच बिरंच साह अकबर कीनो दीनो त्रइलोकनाथ माथे भाग भरो अभार ॥
मेरी अवनी धारन अधार निरा नाम निरा अदभुत सोई प्रतच्छ धन
दीदार पायन पर कर संसार जुहार ॥

गरीब निवाज साहन सिरताज दायक छाजत राज सब काज आज कोउ नाहीं
संसार मे कियो बिचार ॥
तानसेन कहे उनचास कोट सुधाकर करे करतार और कर कौन सकत जलाल-
दीन महमद को फिर अब अवतार ॥४६॥

कहो जी तुम कौन हो कहांते आए कहाँ कित ह्वै जावोगे सबेरे ॥
हम तुमको पहचानत नाहिंन मेरे घर आवत दरेरे ॥
लाल पाग पीतांबर सोहत और बनमाल गरेरे ॥
तानसेन के प्रभु नेक ज्यों ठाढ़े रहे सब सखियन मिल हेरे ॥४७॥

कानन मुद्रा मुंडमाला गरे भस्म बिराजे अंग ॥
कर त्रिशूल चंद्रमा लिलाट पारबती अरधंग ॥
बृषभ बाहन सीस जट सोहत जटा जूट गंग तरंग ॥
त्रइ लोचन त्रिशूल खपर डंवरू लिए तानसेन तान गावत रंग ॥४८॥

कान्ह ते अब घर झगरो पसारो कैसे होय निरबारो ॥
यह सब घेरो करन है तेरो रस अनरस कौन मंत्र पढ़ डारो ॥
मुरली बजाय कीनी सब बोरी लाज दर्द तज अपने में बिसारो ॥
तानसेन के प्रभु कहत तुमही सों तुम जीतो हम हारो ॥४९॥

काशी काश्मीर कामरु करणाटक बूंदी बुंदेलखंड मालवा मुलतान मेवात खुरासान
बलख बुखारनो कुल मंड ॥
बीजापुर बंग दवद कसान रुमखाम भरत सम डंड ॥
कहत तानसेन सुनो हुमायूं के नंद जलालदीन अकबर जाके डर डरत ब्रह्मंड ॥५०॥

कुबज्या को राजरी न्यावरो जासे गोविंद बोल बोले ॥
त्रइलोकनाथ हित कर चाहै सो क्यों ने ऐंडी बेंडी डोले ॥

जग जीवन के सुहाग माती री माई तातें बतियां घड़ घड़ छोले ॥
वाको उतर बूझत जासे तानसेन बिरह कबहूँ हिय डोले ॥५१॥

कुबज्या ते काहे न मंगल गावै मंगल गावै ॥
त्रइलोक के ठाकुर सो तेरे द्वारे आवै ॥
धन तेरो भाग सोहाग री नारी तोही सो चित चावै ॥
तानसेन प्रभु पूरब पुन्य ते रसबस कर अपनावै ॥५२॥

केते रतन जगत में ऊते प्रगट किए प्रथम कामधेन सुर बिधने बनाए ॥
फुन कीने बिष बारुनी अमी औ सुधाकर चारो खान चिरावनी पर बाजी
बिरथ तें पाए ॥
धनुष धन्वंतर ढरन मुरन गज श्री मणि रंभा छंद धारु धुरपद गायन ले बसाये ॥
तानसेन कहें कंबु कंठते हुमायूं को नंदन कल्पवृत्त अकबर पारख पाए ॥५३॥

कैसे आछे सोभत लाल कैसी मुकुट सीस कटि किंकनी नूपुर रुनक झुनक ठनकन
चाप धरत चाल चलत गज गयंद की ॥
काछ कटि कांधे कामर गर सोहे बैजंती माल मृगमद तिलक ललाट कोट काम
लजित भए अधर मुरली बजत चित फंद की ॥
सांवरे सलोने गात शोभा कछ कहो न जात चितवन नैनन बिसाल रबि ससि की
जोत भई मंद सी ॥
तानसेन के प्रभु अंगना में खेलत सब ब्रज जन आनंद मुदित जय बोलत
बृंदाबन चंद की ॥५४॥

कौन भरम भूल्यो रे मन अज्ञानी सीखत न राग रंग तान अच्छर सुध बानी ॥
और स्वारथ सो जनम गंवायो विद्या बात अधिक सयानी ॥
जे साधु गुनी भए तिनको न गुन की मत ठानी ॥
बिलास के प्रभू को जो भलो चाहते तो मिलहो तानसेन गुरु ज्ञानी ॥५५॥

कौन दिशा है अजहूं न आये सखि हरि न आए ॥
और जो जान जिय ध्यान मेरे रसना नाम लयो री मानों उनहीं सो मिलाए ॥
मृगमद घनसार कुंक चंदन नहीं ले आये एसों को कृपा करो प्रभु तुम
हमहूं मंगल गाए ॥
मलया चंदन छुद्र घंटिकी इनहीं लेवत लाए ॥
तानसेन प्रभु वेग दरस दीजे हम हो मंगल गाए ॥५६॥

कौन सों रीत मान सांची कहो मन भावन ।
निसि के जागे अनुरागे आए ही झुकन लागे
तब झूम झूम आये हो मोहें रिझावन ॥
बचन बनावत बैन नहीं आवत कहे देत नैन बैन दरसावन ॥
तानसेन के प्रभु वहीं सिधारो जहाँ सारी रैन रहे रति रंग जगावन ॥५७॥

खरज साधे गाऊँ मैं श्रवनन सुनहुं सुनाउं ॥
बेद पढ़ाऊं जोइ जोइ कहे सोइ सोइ उचराऊं ॥
भैरव मालकोश हिंडोल दीपक श्री राग मेघ सुर हो ले आऊं ॥
तानसेन कहे सुन हो सुघर नर यह विद्या पार नहीं पाऊं ॥५८॥

गाए मेरे सब दुख देखे ते आप दरस ॥
अष्ट सिद्ध नव निद्ध देत हो पलक मधन धन कंचन जात बरस ॥
एकन को गज तुरंग एक न को भूषन एकन को बस्तर देहो सरस ॥
तानसेन कहे राजा राम सकल काज पूरन गुनियन के दारिद्र जात परस ॥५९॥

गावत सुघर गुनी गंधर्ब सुध मुद्रा संगत सो नाद ।
सुश्रुति कला ध्वनि मूरछना पूरन लगे तब राग की सवाद ॥
रंग लिप्त रस रूप लय ताल काल लय समान वर रहे इंद महानाद ।
तानसेन कहे ग्राम तान अलंकार सब समझ कीजे गुनियन सों संवाद ॥६०॥

गोबर्द्धन गिरिधर गोपाल गदाधर गरुड़पति गरुणगामी गोबिंद गोपीनाथ ।।
एनन राजा महाराजा गजानन जे बिद्या जगदीस ॥
सस्वर सों गाऊं बजाऊं सब राग रागणी पुत्र बधुन सहित छतीस ॥
बाइस सुरत अकइस मूरछना उनचास कोट तान आवै जगदीस ॥
तानसेन को दीज्यें छह राग छतीस रागणी ताल लय संगीत मत
सो होय कंठ प्रबेस ।।६१॥

गोबिंदे गोपाल गरुणगामी गोपीनाथ गोबरधनधारी गोप मन रंजन ।।
बंसीधारी गिरधारी कुंजबिहारी बहु रूपधारी कंसारी मुरारी गर्व
प्रहारी दुष्ट गंजन ॥
मधुसूदन माधव मधुरापति मुक्तेश्वर मन भावन दुख भंजन ।।
बासुदेव बिठल बनवारी बद्रीनाथ बौद्ध रूप बिष्णु तानसेन भक्त मन मंजन ॥६२॥

घर घर तें ब्रज बनिता जो बन निकसी आज कंचन थार भर भर नग नोछावर
करन लाल की ।।
सप्त सुर ले गावत कंठ कोकला लाजत उपजत अति रसाल गमक तान ताल की ॥
मदन महोछव साज समाज गोपिन बृंद मिल चलत चाल मराल की ।।
तानसेन प्रभु रसबस कर लीनो तिरछी चितवन मदन गोपाल की ।।६३॥

चंद्रबदनी मृगनयनी ता मध तारका गंग पुतरी कालिंदी इह बिधि डोरे बनाय कीनी
तिरबेनी ।।
छूटी पोत कंठ दीपक मुख को जोत होत तामें गुप्त प्रगट सरस्वती मिली एन मेनी॥
सुंदर रूप अनुपम सोभा त्रिभुवन पाप ताप हरनी करत सुख चैनी ।।
तानसेन को करो निरमल तूं दाता भक्त जनन की बैकुंठ कीने सैनी ।।६४॥

चंद्रबदनी मृगनयनी हंसगमनी चली है पूजन महादेव ।।
कर लिए अग्र थार पोहपन के गुंथे हार मुख दीयरा जराए देवन में देव महादेव ।।

सोलह सिंगार बतीसों आभरन सज नखसिख सुंदरताई छबि बरनी न जाई
ह्वै निरमल मंजन कर सेव ॥
तानसेन कहहै धूप दीप पुष्प पत्र नैवेद्य ले ध्यान लगाय हर हर हर
आदि देव ।।६५॥

चटक चित्र मित्रहूँ मिल तज मल नवल चित चढ़त रूप रंग भरत जगत मन हरत ॥
प्रथम ही आभा आदरत फुन अरतन कूक करत बड़ी बड़ी बार परत ।।
रस ढरत लटपटात थर थरात बेर समद ह्वै लरत एक मारत मरत एको
बस रत हेरत रोर दारिद्र इनकों दरत ।।
वही ज्ञान जी में धरत परसत संसार नित तार मन में याते फूलन परत ॥
तानसेन कहत अकबर अल्ला भर के नाम गाए एक दरसनही सुरत निरत ।।६६।।

चढ़ो चिरंजीव साह अकबर साहनसाह बादसाह तखत बैठो छत्र फिरे निसान ॥
दिल्लीपति तुम नबी जी को नायब अति सुंदर सुलतान ।।
चारों देस लिए कर जोर कमान राजा राव उमराव सब मानत तेरी आन ॥
कहें मियां तानसेन सुनियो महाज्ञान तुम से तुमही और नाहीं दूजो गुनी जनन
के राखत मान ।।६७।।

चरन तक आए हो पीर अता तुमारे द्वार ॥
करतार तुम सब बिध कीनो निस्तारबे को राग ताल तानसेन सो आज ॥६८॥

चलो जाय पूछिए हरि के समाचार जसोदा के आंगन कछु तो लगी है री भीर ॥
पिया पेते पाती आई बांचीहू न परे उनको कहा हमारी पीर ।।
आवन कह गए अवधहूँ बीती अब कैसे जिय धरिए धीर ।।
तानसेन प्रभु मधुबन को बिरम रहे कबधों मिलिहै जे हरे है चीर ॥६९।।

चलो नहीं जात अंग भीजे जात प्रसेद मांझ पुलकित गात जानी समझी न बात है ।।
पीया बिन जात जरो अंगन थहरात सब आन को रंग कछु आन भयो जात है ॥
आंसू चले जान प्यारी लीन सी देखात हेरी तेरी दसा देखि मेरो हियो हहरात है ॥
नेक निहारै मन मोहन को रूप आली तानसेन प्रभु रोम रोम दरसात है ॥७०॥

छत्रपति मान राजा चिरंजीव रहो जौलों ध्रुव मेरु तारो ॥
चहूँ देश ते गुनीजन आवत तुम पे धावत पावत मन इंछा सबही को जग उजियारो ॥
तुमसे जो नहीं और कासे जाय कहूँ दौर वही आज कीरत करे मो परेछा करन हारे ॥
देत करोरन गुनी जनन को अजाचक कीए तानसेन प्रतिपारो ॥७१॥

जनम योहीं गंवायो बावरी अब गहे न हरि के चरन ॥
हो जानो पीय जोबन थिर रहेगो भूली याही भरमन ॥
लख चौरासी भटकत भटकत सरन सुमेर पायो मनुष्य धर्मन ॥
तानसेन के प्रभु सुमरन कर ले सुध चित करमन ॥७२॥

जब करता करम करे तो सब कुछ पावै नाद विद्या सुध संगत आवै ॥
जान बूझ भूलो फिरे रे क्यों न वोही नाम जा सुमरत ही सुर तान गावै ॥
जे नर मुनि गुनि पच पच हारे बिना कदर कोउ न बतावै ॥
तानसेन प्रभु निसि वासर अब तेरो नाम ध्यावै ॥७३॥

जलथल भई और जहां तहां इत उत जित तित नित नित तूंही भर रहो साहन साह सतार रब ॥
तोसों और नहीं दूजो तोसों तूंही दूजो तोसो तूंही नरेस तूंही दीन तूंही दानी तूंही धनी तेरी सरब ॥

नाम ना जपत ना संजम ना तीरथ व्रत लुबधो दरब ॥
तानसेन को साहब दुखियन को दुख दूर करनहार भंजब न गरबीन को गरब ॥७४॥

जा दिन तें लगत हम कूं आली री सुनो भवन जब तें प्रीतम परदेस गवन कीनो ॥
घरी घरी पल पल छिन छिन बरस से बीतत उन बिन बिरह अति दुख दीनो ॥
सुंदर श्याम मनोहर मूरत वाने मेरी मन हर लीनो ॥
तानसेन प्रभु बेग दरस देहो तेरे रंग में निस दिन भीनो ॥७५॥

जिन करो मोसें झूठी झूठी बतियां तिहारी प्रतीत मोहिं नेक नहीं आवत ॥
वे तो लंगर कान्ह नहीं छाड़े अपनी बानसौतिन के ग्रह जावत ॥
मेरे प्रतच्छ आय लाखन सौंहै खवावत पग परस परस निज चूक छमा करावत ॥
बार बार को रिसावन तानसेन ए नाहीं सोहावत ॥७६॥

जे गुण बिबेक कर साधे तें चतुर अति प्रबीन है रहत नीको ॥
तिनमें सुध संगत अति बहुत पइयत है ताल तान की गहन हीं को ॥
सप्त सुर तीन ग्राम मूरछना श्रुति कोट तान ओडव खाडव संपूरन ही को ॥
बादी संवादी अनबादी बिबादी अंसन्यास तानसेन समझ जी को ॥७७॥

जे गुनीजन गुरु पावै गावै नीकी तान गुन सों रिझावै ॥
जब बजावै बीन अच्छी नीकी परमान सोच समझ तान लेत
ध्यान धरत जिया में जब सुर संगत पावै दुरन मुरन सों वाको समझ आवे ॥
सप्त तीन अकइस बाइसो लागडाट खुली मुंदी दरसावै ॥
सप्त ध्याय संगीत मत करके तब तानसेन प्रभु को रिझावै ॥७८॥

जेइ जेइ बचन कहत हौं री तोसों तेइ तेइ बचन तूं मान ले सयान ॥
मेरे कहे तूं उठ चल री ललना धरे ही रहेगो तेरे जिय को गुमान ॥

कल न लागे और तें तेरी तेरो है जीवन प्रान ॥
तानसेन तेरी कहां लों अस्तुति करे क्यों तूं जान हो रही अजान ॥७६॥

जै जै कर पूजो धोलागढ़ की रानी ने ॥
पान सोपारी धजा नारियल पहले भेंट भवानी ने ॥
तेल फुलेल अरगजा अंबर ले चढ़ावो बाकूबानी ने ॥
तानसेन यह प्रसाद मांगत दीजे बुध और बानी ने ॥
ब्रह्मा बेद पढ़े तेरे द्वारे शंकर ध्यान समानी ने ॥
बीरबल बंश ब्राह्मन कुल तारन तानसेन बरदानी ने ॥८०॥

जै गंगा जग तारनी जग जननी पाप हरनी बेद बरनी बैकुंठ निसानी ॥
भागीरथी विष्णुपदा पवित्रा त्रिपथगा जाह्नवी जग पावनी जग जानी ॥
ईस सीस मध बिराजत त्रइलोक पावन किए जीव जत खग मृग
सुर नर मुनि मानी ॥
तानसेन प्रभु तेरी अस्तुत करे तूं दाता भक्त जनन की मुक्त को बरदानी ॥८१॥

जै शारदा भवानी भारती बिद्यादानी महाबाकूबानी तेहि ध्यावै ॥
सुर नर मुनि मनि तोहिं कूं त्रिभुवन जानि जो जाकी मन इंछा
सोई सोई पुजावै ॥
मंगला बुध दानी ज्ञान को निधानी बीणा पुस्तक धारनी प्रथम तोहिं गावै ॥
तानसेन तेरी अस्तुत कहां लों सप्त स्वर तीन ग्राम राग रंग लय अक्षर आवै ॥८२॥

जै सूरज जग चक्षु जग बंदन जग त्राता जगत करता जगन्नाथ ॥
आदित्य सबिता अरक खग पूषा भानु दिवाकर जग कारज होय तेरे हाथ ॥
ज्ञान ध्यान जप तप तीरथ व्रत संजम नेम धर्म कर्म सब उदै होय सनाथ ॥
तानसेन पै प्रभु कृपा कीजिए राग रंग स्वरन सों निसि दिन गाऊं तेरो गाथ ॥८३॥

जोबन के जोर तोर कैसे समझाय राखूं मेरो कह्यो मान प्यारी आज तेरो दावरी ॥
तन मन धन नोछावर करहूँ बीत गई रैन तासों छूट गयो चावरी ॥
लाल मनावत तूं नहीं मानत उठ री गंवार नार घने समझावरी ॥
तानसेन कहें प्रभु से तजो मान हाथ से गंवाय लाल फेर पछतावेरी ॥८४॥

ज्ञानपति महेश बिद्यापति गणेश पृथ्वीपति नरेश बलपति हनुमान ॥
सरितापति सागर गिरवरपति सुमेर राजनपति इंद्र धर्मनपति दान ॥
बाजनपति मृदंग पत्रनपति पान पंछिनपति गरुड़ भक्तनपति कान्ह ॥
साहनपति साह दिल्लीपति पातसाह तानसेनपति अकबर अर्जुनपति बान ॥८५॥

ज्ञानवंत को रस अगम बुध देनी तूं सबही अंगन मानि हंसबाहनी गिरा
महाबाकबानी ॥
जेहि तोहि ध्यावै मन इंछा फल पावै साधक कंठ प्रानी करत बखानी ॥
तोसो तूंही और नाहीं विद्या दानी जे साधे आराधे त्रिहूं लोक जग जानी ॥
तानसेन को दीज्ये राग रंग बर बानी जौलों गंगा धरन ध्रुव पवन पानी ॥८६॥

टोडी रागणी अलापत गावत बीन बजावत उपवन मृगन रिझावत ॥
गांधार स्वर गृह प्रथम मूर्छना संपूर्ण तान सुनावत ॥
सप्त तान बाइसो अकइस उनचास को तान ताकों ब्योरो जनावत ॥
उज्वल बसन पहर केसर करपूर चर्चित रतनन आभूषन
तानसेन तानसाजत ॥८७॥

तखत बैठो और नर जग को कीनो निहाल ॥
छत्र चंवर ढरि ढारे मन मोती लगाए दिन दुलहा लाल ॥
बीजापुर भागनगर सेतबंध करनाटक लंक लाहौर तानसेन कहे एहो
जलालदीन जग कीने प्रतिपाल ॥८८॥

तखत बैठो महाबली ईश्वर होय अवतार ॥
देस देस के सेवा करत हैं बकसत कंचन थार ॥
जोइ आवत सोई फल पावत मन इंछा पूरन आधार ॥
तानसेन कहे साह जलालदीन अकबर ॥
गुनी जनन के काज करन को कियो करतार ॥८६॥

तन की तपत तबहीं मिटेगी मेरी जब प्यारे कूं दृष्टि भर देखूंगी ॥
जब दरस पाऊं प्रान पीतम को जनम जीतब सुफल अपनो लेखूंगीं ॥
अष्ट जाम मोहिं को ध्यान रहत वाको आली कोली भेटूंगी ॥
तानसेन प्रभु कोउ आन मिलावै ताके पांयन सीस टेकूंगी ॥९०॥

ताही बदो चतुर और जीवन गुन रूप जा बस करै प्राणपति प्यारे को ॥
जौलों न देखों एक घरी आली तानसेन प्रभु दस भारे को ॥९१॥

तिमिर हरन प्रभातकर दिनकर तेजसकर जन मन दृग मनि बिभाकर ॥
सहस किरन भसम करन पतंग गुपत में को मिहिरबान महा मात'ड महर ॥
तोहीं तें चंद तोहीं तें अग्नि पानि नाग तोहीं तें अनेक रंग तोहीं तें चोख तोहीं तें भोग गत तोहीं तें छूटत डर ॥
तेरे उगेतें सब जगे चंद्र भानु बिभावान सभी सबिता कबिता तानसेन यह बिनती करत जौलों तूं नित ही नित रहे जो तूं सुर तौलों रहे छत्र धरे साह अकबर ॥९२॥

तुअ समान को दूजो रच्यो नाहन गुण समर्थ न आयो है धर्मराज गरीब निवाज ॥
तुअ सम और कौन महाज्ञान गुण निधान दाता बिधाता रचपच बिरंच ज्ञात समाज ॥
भरन पोषन दुख दारिद्र हरन षट दरसन निवास सकल साज ॥
तानसेन कहे प्रभु हिंदू सुलतान भक्त उधारन भगवान ताने प्रगट कियो सकल गुन साज ॥९३॥

तुम हो गणपत देव बुधदाता सीस धरे गज सूंड ॥
जेइ जेइ धावै तेइ तेइ फल पावै चंदन लेप किये भुजदंड ॥
सिद्धेश्वरी नाम तुमारो कहियत जे विद्याधर तिन लोक मध सप्त दीप नव खंड ॥
तानसेन तुमको नित सुमिरत सुर नर मुनि गुनी गंधर्व पंडित ॥९४॥

तूंही ब्रह्म तूंही बिष्णु तूंही महादेव तूंही गुरु तूंही चेला ॥
तूंही सोना तूंही सोनार तूंही कसौटी कसनहार तूंही मंदिर तूंही मेला
तूंही अकेला ॥
तूंही रैन तूंही दिन तूंही पर्वत तूंही पाखान तूंही जल तूंही थल तूंही सों मेला ॥
तानसेन के प्रभु तूंही सबन में तूंही छैला तूंही अलबेला ॥९५॥

तूंही एक आदि निरंजन निराकार नाद रूप तेरो ही पसारो पुरो सब संसार ॥
अलख अव्यक्त जगा बिस्तारन कर तूंही एक पाक परवर अपरंपार ॥
जल थल धरनी धवल तूंही पूरन सकल महिमंडल तेरो ही अधार ॥
तानसेन को दुख दारिद्र दूर करो करता हरता तूं करतार । ९६।

तें कहूं देख्यो री नंद नंदन कान्ह मटुकी झटकि के पटकि गयो ॥
माखन चोरी चोरी मन लीन्हों कीन्हों नेकु न डर नट ज्यों उलटि के सटक गयो ॥
मारग रोक रहत खोरन में लजानो नैन सैन दे अटक गयो ।
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक रस गोरस ले गटक गयो ॥९७॥

तें कहूँ देख्यो री बनमाली आली बंसी बजाय मन ले गयो ॥
धुन सुन कल न परत निसि दिन उन बिन नैन तरसत बिन देखे टोना सों
जंत्र मंत्र कर गयो ॥
जब नहिं देखत छिन न सुहावत भावत नहिं गेह मेरे नयनन में अटक गयो ॥
तानसेन मैनन की मूरत कोटि बार डारों सांवरी सुरत जिय बस गयो ॥९८॥

तेरी आली रूप पिय के मन कों खेलौनो निसि दिन लिए रहत संग ॥
कबहूँ बागो बनाय कबहूँ बीरो खवाय कबहूँ निरख रीझ दिन दिन बढ़त तरंग ॥
तूंही तन तूंही मन तूंही कर रही पिय मन अरध ग ।
तानसेन प्रभु प्रबीन के चित चढ़ी एसे जैसे ईस सीस बसत गंग ॥९९॥

तेरे तो सरस्वती घट घट पूर रही नाम धरायो बाकूबानी ॥
जल थल मध पइयत जालपा भवानी यातें कहियत तोकूं सर्बानी ॥
कंट कटानी मृडानी सप्त दीप प्रमानी एसी नग्र कोट रानी ॥
तानसेन को प्रसाद दीज्ये भवानी दयानी कंठ पाठ ताल स्वर दे महरानी ॥१००॥

तेरे नयन लीने री जिन मोहे श्याम सलोने ।
अति ही दीर्घ बिसाल बिलोल कारे भारे पिय रस रिझाये कोने ॥
बदन जोत चंद्रहूते निर्मल कुच कठोर अति ठोने बोने ।
तानसेन प्रभु सों रतिमानी कंचन कसौटी कसीने ॥१०१॥

तोकों प्यारे पठई किधों तूं आपते आइए मनावन ॥
प्रानेसुर के मुख की बतियां एन होवे री होनी के जानत जैसी तूं मोसों री खागी बनावन ॥
या मुख की अब कान न करत हो अनमिल पिय सों कह्यो न परत तेरी भोंहे तनावन ॥
कहा कहों राजाराम सो तोसी री पठावै हमारे ग्रह बनावन ॥
तानसेन कहे आवत अपनी औरन को चित लावत मुँह की बात कहलावन ॥१०२॥

त्रिपुरारी गरीब निवाज निवाजन समरथ पुरि रह्यो सब धाय धाय ॥
जे तोहिं ध्यावै मन इंछा फल पावै तिहारो ही गुण गाय गाय ॥
सुर नर मुनि ध्यान धरतु हैं तिनहूँ के मन पाय पाय ॥
तानसेन के प्रभु तिहारी अस्तुति करूँ तिहारे ही मन भाय भाय ॥१०३॥

दया कर दयानी सो राग रंगत सो गाऊँ उत्तम बानी ।
जंबू दुर्गा भवानी राग तान ताल सहित सो अब होवै परम ज्ञानी ॥
उक्त जुक्त काव्य करत रिद्ध सिद्ध नव निद्ध आनंद दानी ॥
तानसेन प्रभु इतनों मांगत तुम पै सुख संपत बिद्या दे काशमीर रानी ॥१०४॥

दारु प्यावो कलाली अबहीं दारु प्यावो कलाली ।
तानसेन को खुमारी भई है अत बिहाली ॥
दुहाई साह जलाल की प्याला भर भर पिवावउ हो लाल दुलाली ॥१०५॥

दीजिए जू हमें ब्रज बसबो बांसरी न बसे बांसरी बसाय कान्ह हमें बिदा दीजिए ॥
बांसरी को टेर सुनत रहो न परत मोपै कान सुन सुन बन बसेरो कीजिए ॥
जेते उन सुर गाए तेते हम भेद लीने जहां राग तहां दाग रोम रोम छीजिए ॥
तानसेन के प्रभु माया कीनो मो पर अंग अंग चीर चीर सिंदूर मांग दीजिए ॥१०६॥

दीदार पुर नूर एसो जाहि दरस कों तरसत नैना मेरे लुबध रहे एसे जैसे चंद किरन पर चकोर ॥
एक पल अंतर रह न सकों रहौं तुव पांयन समीप तन मन धन जोबन बंदौं कर ॥
जाको अमृत बचन श्रवन सुन होत मेरे मन प्रान लेत झकोर ॥
एसो जो है तानसेन प्रभु सो दिन दिन सोतन सोव कोर ॥१०७॥

धन धन रूप तेरो बिरंच गुरु रचौ घेरदार घूँघटन मो चंद्र बदन
घूम घूम पगधर चलत चाल गज गत धरन को ॥
घटाटोप घूंघट गरे सोहें मुक्तमाल कटि किंकनी सुंदर बरनी घायल होत
लागत कुच कठोर श्रीफल से जंघ कदली मन मोहत संचरन को ॥
घेर आई चहूं ओर सभी सहेली रंभा सी लागत भुज मृनाल मृगनैनी मानो निसिकर किरन को ॥

तानसेन प्रभु मन हर लीनो घायल करत रसिकन को राजा महाराजा बस कर
लीनो गिरिधरन को ॥१०८॥

धन धन भाग सुहाग तेरो तूं पिय के मन भाई ॥
धन जोबन तेरो री चतुर सुघर नार जो पिय तेरी करे मुख सों बड़ाई ॥
धन जनम जीतब धन तरुनताई ते रसबस कर लिए पिय सुखदाई ॥
धन धन तानसेन प्रभु को रिझाय लीनों तूंही सबन में देत दिखाई ॥१०९॥

धन धन मेरे भाग भोर भए आए लालन सब निसि कहां जागे प्यारे ॥
आलसवंत जंभात जात मलिन गात सांची कहो बात नंददुलारे ॥
लटपटी पाग खुल रही पंचन सों अधरन पीक लीक धारे ॥
तानसेन के प्रभु तुम बहुनायक सांचे बोल सांझ के तिहारे ॥११०॥

धन भाग मेरी धन आवन धन धन पीत प्रेम भयो मन दरस देखत इन अंखियन
सों तन इन अंग संगतें बिरह गयो टर ॥
इन आनंदन आनंदी बांदी भई हों इन चरनन रहन कहत गर बगर अगसर ॥
जनम जीतब सुफल सखि मदनमोहन माया कीनी लीनी रसबस कर ॥
तानसेन प्रभु सुख के नैनन सैनन हाव भाव कटाछन सों मोह लीनी
जब मिट्यो दुख डर ॥१११॥

धरनी धरन अधरन दाता विधाता विश्व भरन पोषन ॥
भागवंत सो भाग तरन तारन भक्त जन कूं सकल सुख करन मोखन ॥
आदि अत तूंही रोम रोम रम रह्यो सबमें तूंही चर अचर थावर जंगम तोखन ॥
तानसेन तेरी अस्तुत कैसे करों अलख निरंजन निराकार ध्यान रहो तेरो दूरनहू
बोलन ॥११२॥

धीरे धीरे धीरे मन धीरे ही सब कुछ होय ॥
धीरे राज धीरे काज धीरे जोग धीरे ध्यान धीरे सुख समाज जोय ॥
धीरे तीरथ धीरे व्रत संजम धीरे ही करे सत्संग सेवा साध के बैठ मन को धीरे राखोय ॥
तानसेन कहें सुनो साह अकबर एतो बड़ो राज एती बड़ी बादसाही धीरे ही ते पाई सोय ॥११३॥

धौरी धूमर पीयरी काजर कहे कहे टेरे ॥
मोर मुकुट सीस श्रवण कुण्डल दछनपीतांबर फेरे ॥
ग्वाल बाल सखा मंडल में आवत व्रज नेरे ॥
तानसेन प्रभु मुख रज लपटानी जसुमति निरख मुख हेरे ॥११४॥

नगर नाद मध चक्र मत चौपर हाट बसायो ॥
सुर हाटी अक्षर जिनस लेत सुघरन हाथ बेंचायो ॥
सुर कोट बाल सुरत ले प्यादा गमक गस्त फिरायो ॥
सुनत भाव सब गुनियन मिल के तानसेन निरख मंगायो ॥११५॥

नमो रट शंकरदेवा मन रे वृषभ बाहन तपसी प्रबल ईश्वर महा जोग ईशान ॥
गंगाधर जटा जूट ललाट ससि सोहे हरि ध्यान ॥
नीलकण्ठ उर शेष कराल माला बिभूति भूषन गरल पान ॥
गौरी अरधंग डंवरू कर पिनाक पान ॥
धन धन धन महादेव गुण सागर आगर गावत तानसेन बिनान ॥११६॥

नवरंगी तेई अंग कीनो गुनी कौन सा रे आराधे जो जाने अकबर ॥
कौन बिद्या अत पूरो नर एसो कौन को पूरी
सरस्वती दृढ़ श्रवन अंगी वृषभवाहन सीस जटा
कर डंवरू त्रिशूल खपर चंद ललाट बाघंबर ॥

गंग अरधंग वर लिए मुंडमाला सोहै त्रइलोचन तूंही है हर हर ॥
और सुर नर मुनि गुनी गंधर्व जे तोहिं जपत हैं
दूसर तानसेन बलवाय भंवर बिसतर तापर हित
निवाजनो बात तानसेन को देहु इंछा भर ॥११७॥

नाद अगाध बहुत गए हैं साध सुर नर गुनी गंधर्व रचपच गए सिद्ध समार ॥
काहू न पायो पार कर कर थाके बिचार कवल अश्व तर शिव श्रवन धार
अंजनी नंदन कहे उचार सरस्वती तरन लागी हिय में दो तूंबा डार ॥
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना बाइस सुरत उनचास कोट तान असंन्यास
बिकृत धार ॥
छह राग छतीस रागणी ओडव के भेद सुध मुद्रा सुध बानी तानसेन करो बिनान
जाको सूम्फत न आरपार ॥११८॥

नाद अगाध संपूर्ण सोध साध समझ सोच ताल बिस्तार ओंकार ॥
सुर सवार सप्त सलिल सुर सुर सों संगत नाद विस्तार ॥
स्वर धाय राग ध्याय ताल ध्याय नृत्य ध्याय प्रकीर्ण प्रबंध मृदंग ध्याय
सप्त ध्याय बिचार ॥
गुनी गंधर्व सुर नर मुनि पच हारो केउ न पायो तानसेन अपरंपार ॥११९॥

नाद गढ़ मन राजा राज सजत छहों राग उमराव बैठे बूर्ज पर नीके रक्षा करत ॥
नाना राग रागणी छतीस तुपक भर भर धर सोई इकइस मूर्छना गीत
नाल धारु धोवा माठा पर माठा चतुरंग जंबू राग जल बैंत पारसी छंद रच्यो
शत जंजाल त्रेवट राग चंगो संगीत दारु तानन राजबांस ढांस झुमरा गोला भरत ॥
सप्त सुर सप्त पौर औड़व खाड़व किवाड़ आरोही अवरोही खाई बनाई कौल
तिलाना कोतवाल ध्रुवपद वजीर प्रबंध की निसानी आय लरबे को
धाय विद्या की लराई लरत ॥

तानसेन कहे एसो अगम अथाह जाको पार न पायो रचपच हारे
कहूं न लाग लगी कान पकर पकर धरत ॥ ॥१२०॥

नाद नगर बसायो सुरपति महल छायो उनचास कोट तान अच्छर विश्राम पायो ॥
गीत छंद तत बितत घन शिखर कंचन ताल काल के किवाड़ अलाप ताली
हीरा पै पाट नग लगे खरज जंजीर त्रेवट कुंजी तामें ध्रुवपद सो नग छिपायो ॥
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई जवार अरब खरब और करोर मन मिलाय
कंठ लायो ॥
जौहरी मीयां तानसेन गाहक जलालदीन जिन याको कोल कीनों अकबर
पारखी पायो ॥१२१॥

नाद समुद्र अथाह सुनियत है ताके सहल करन को लागें गुनियन के मन ॥
ओंकार को जहाज कीनो तीन ग्राम सप्त सुर लै लै ताल मूल तें बैठो
सौदागर बन ॥
अकइस मूरछना बाइस सुर तेतेहूं मलाह भए बन ठन ।
ओडव खाडव संपूरन को ध्यान बिदा दो अंग्रेजी सन ॥
अलाप की धमक सों उनचास कोट तान तुपक छूटत लागी तानसेन बजन ॥१२२॥

नाद समुद्र अपरंपार काहू न पायो पार अपार भेद ॥
केते गुणी गंधर्व यक्ष किन्नर रच पच हार रहे सुर नर मुनि गुनि चारों बेद ॥
सप्त सुर शब्द ब्रह्म निरंजन निरंकार निरभय भेष रच पच कर थाके खेद ॥
तानसेन जन आरती बिनय करत धन धन नाद अलख अभेद ॥१२३॥

नाद समुद्र परख न पायो सीखत पंडित कहायो धारु धुरपत मार जुगन ठगायो ॥
सप्त गुप्त सप्त प्रगट नायक गोपाल लायो ब्रह्मा बेद उचरायो सारंग बौरायो गायन
भाव तेरी मार जुगन ठगायो ॥

जित तित श्रेष्ठ गुनी ब्रह्म भेद रुद्र मुनि नें उपजत के गायो पाषान पिघलायो ॥
कहे प्रभु तानसेन जिन ही रच पच गायो तिनहीं रिझायो ॥१२४॥

नाद समुद्र पार नहिं पायो सुनियत गुनी कहायो प्रबंध छंद धारु धुरपत
मार्ग देसी द्वै बिधि गायो ॥
ब्रह्मा बेद उचरायो सारंग बौरायो भरथ मत कलिनाथ हनुमत मत सप्त ध्याय गायो ॥
अनेक सृष्टि रच गए पच गए ब्रह्मा बिष्णु रुद्र महा मुनि प्रसन्न भए सारंग
बौरायो ॥
सप्त प्रगट सप्त गुप्त नायक गोपाल ध्यायो तानसेन ताको बैजू पाखान
पिघलायो ॥१२५॥

नीके नीके सुर गाय राग देखाय प्रथम कपट तज रंग जुगत लाय ॥
बुधि सरसाय काव्य बनाय खुली मुंदी मुद्रा तान सुनाय ॥
उरपति रप लागडाट देखाय ॥
सप्त स्वर इकइस मूरछना ताको ब्योरो जनाय ॥
और संगीत रत्नाकर के सप्त ध्याय समुझाय ॥
तानसेन के प्रभु को रिझाय संगीत बिद्या दरसाय ॥
गुनिन सों गुण चरचा कर परमेसुर के धरिए पांय ॥१२६॥

नींद न आवत पिय बिन देखे मोरी आली कैसे परे अब चैन ॥
घरी घरी पल छिन योंही बीत जात रहत मारग जोहत नैन ॥
बिन देखे कल न परत है मानो मन मोहत है मैन ॥
अब कबधों मिल प्रान प्यारो यह प्रभु तानसैन ॥१२७॥

नील बरन बहरे दुकूल रही घटा सी कामिन दामन लगत माधो रैन ॥
जाको पचरंग किनारी सोई मेरे जान धनक भई बंद श्रम जल की और बोलत
कोकला बैन ॥

पुहपन के हार छूट रम रहे सोई बग पंथ एसी लागी मेरे नैन सैन ।
यह छवि देख रीझ तानसेन के प्रभु एसी लागत मानों मूरत मैन ।।१२७।।

नैन सलोने री तेरे नैनन हो हरि बस कियो ।
दीरघ जमाल बिमल बिलोल कटाछन भर रहे तापर कजरा दियो ।।
भौंहे धनुष और चंद सों बदन और कंचन सों तन तेरो कंवल कली सों उठो हियो ।
तानसेन प्रभु जान बूझ कर बोलबे को नेम लियो ।।१२८।।

परस्पर दंपति मिल करत सिंगार एक अंगोछा ले पोंछत मुख एक सुधारत पैंच पाग ।
सब निस जागे प्रेम रूप रस मध छके ताते झुक झुक गरे लाग लाग ।।
ले दर्पन आपस में निरखत प्यारी प्यारी ले बीन बजावत गावत राग ।
तानसेन प्रभु दोनों चिरंजीव रहो देत दरस भक्तन को धन धन भाग ।।१२९।।

पार नहीं पाइए गुण समुद्र अथाह कौन बिध तरिए कहा करिए कवन भांत जानिए ।
मन ज्ञान नेत्रन असुझ लागे सुर तान ताल किस तरह घट में आनिए ।।
जब उठत है ध्यान अति प्रान डरो जाय चरन धरो धाय कैसे गर ठानिए ।
कहे गुरु ज्ञान तानसेन सुरसती ध्यान धर अगस्त सों अचमानिए ।।१३०।।

प्रथम ही आनंद रच्यो नीकी घरी महूरत पंचो शब्द बजाए ।
देस देस के जाचक जेते आवत तेते पावत गज तुरंग नग दान मुक्ता बरसाए ।।
अष्टो धरन मध्य नाम जोति अरिन मारबे को बिधि ने बनाये ।
तानसेन कहे जुग जुग चिरंजीव रहो राजाराम तेरो जस तिहूं लोक छाए ।।१३१।।

प्रथम उठ भोर ही राधे कृष्ण कहो मन जाओ होवे सब सिद्ध काज ।
इहलोक परलोक के स्वामी ध्यान धरो ब्रजराज

पतित उधारन जन प्रतिपालन दीनदयाल नाम लेत जाय दुख भाज ।
तानसेन प्रभु को सुमिरो प्रात ही जग में रहे तेरी लाज ॥१३२॥

प्रथम नाद सुर साधे आराधे सोई गुनियन में गावे ।
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना तिनके ब्योरे तब कछु पावे ॥
आरोही अवरोही उलट पुलट के होत द्रुत मध्य बिलंबित आवे ।
तानसेन के प्रभु महा शाकुम्बादनी प्रसाद ते गान कंठ करावे ॥१३३॥

प्रथम नाद सुरसती गणपति बुध दाता ।
जाकी कृपा तें अन धन लछमी पालन करे राव जगन्नाता ॥
जोइ जोइ आवत मन फल पावत सब गुनियन को देत विधाता ।
तानसेन प्रभु जुग जुग जीवो चरन कमल रंगराता ॥१३४॥

प्रथम मंजन अंजन कर पहर चीर चार ।
आली जे दिल लेले कमल बहुतेहि आभूपन रूप सुधा कंठमाल रतन
मुक्तन के हार ॥
याही अति भायो दाद रद कटाच्छ गलामुन आलकें कन नाहन से पिय प्यार ।
तानसेन नग रतन जटित सोरह सिंगार किए नर लोक इंद्र लोकहूँ
नहीं नार ॥१३५॥

प्रभाकर भास्कर दिनकर दिवाकर भानु प्रगट बिहान ।
तेरे उदे ते पाप ताप छूटे कर्म धर्म प्रेम नेम होत गुरु ज्ञान औ ध्यान ॥
जगमगात जगत पर जग चक्षु जोति रूप करनय सुत जगत के प्रान ।
तानसेन के प्रभु उदे जगत कपाट खुलत दीजिए विद्या कृपा निधान ॥१३६॥

पाक मोहम्मद अल्ला रसूल तेरो ही नूर जहूर ।
धन धन परवरदिगार गुनहगार तूं कृपन तूं हीं जग रम रह्यो भरपूर ॥

बेंच न बेच गुन बेशुवे बेनमून अव्वल आखर तूंही निकट तूंही दूर।
जित देखूं तित तूंही तूंही व्याप रहो जल थल धरनी अकास तानसेन
तूंही हजूर ॥१३७॥

पीके आवन की सुनी प्रथम अस्नान कर मानो सकुच बादर से बरस ऊघर गए
ता मध बदन चंद से निरख री पूरन सेत वर यह मानों चांदनी निसि खेल रही।
फूलेल सने बार मानो रैन भीनीं सो लागत मांग मुक्ताहल और
आभूषन उद्गन से लागत इंद्र अपसरा की सोभा इन आगे ना
हिए एक तिल रही ॥
मुख मुसक्याइ देखत भुज बदन हरिन की सी मज्जन दसन
चमकत अधर पान लाली प्रतिबिंब देखियत ता मध मानो
रस है, गए काम मूरत की चोप में आप राप मिल रही।
तिलक दामन किनारी चंदन रस सो लागत अंजन नैन
नेह स्याम प्रगटी चरन महावर मानों कंवल पंखरी सी
लागत पड़ी मानो कुंज कोमल पराग कंचन पायल की
कला कंठ तानसेन गाय रही ॥१३८॥

प्यारे तूंही ब्रह्म तूंही बिष्णु तूंही रुद्र तूंही गुरु तूंही चेला।
तूंही जल तूंही थल तूंही प्रबल तूंही अबल तूंही छैल तूंही अलबेला ॥
तूंही ऊंच तूंही नीच पाप पुन्य तूंही बीच तूंही सो मेला।
तानसेन कहे प्रभु कहां लों बखानूं तूंही बहुत तूंही अकेला ॥१३९॥

प्यारे तूंही ब्रह्मा तूंही बिष्णु तूंही रुद्र तूंही शक्ति तूंही गणेश तूंही गौरा।
तूंही जल तूंही थल तूंही पवन तूंही आकास तूंही अधूरा तूंही पूरा ॥
तूंही छैल तूंही अलबेला तूंही रोवत तूंही हंसत तूंही उठत बैठत चलत
तूंही द्वरा।
तानसेन के प्रभु एक हो अनेक होय जग में व्याप रहो हजूरा ॥१४०॥

बर्ण में पवित्र ब्राह्मण पशुन पवित्र गऊ भोजन पवित्र घृत सार ।
जल में पवित्र गंगाजल देवन में पवित्र बिष्णु महेस तृन में पवित्र कुस तार ।।
धातु में पवित्र सोना पत्र में पवित्र तुलसी पत्र पुहपने पवित्र पारिजात पंछिन
में पवित्र हंस प्यार ।
कहे कविता नवरस में पवित्र तानसेन नाम में पवित्र हरिनाम उर धार ॥१४१॥

बरसाने तें आए अरसाने हम जाने जू लछन तिहारे पहचाने ।
कहूं कज्जर कहूं पीक लीक अनगन स्वभावन मोपै जात बखाने ॥
नयनन नींद ध्यान मन हृदय बसत तीय ताही के लगत गुन गाने ।
धन्य तेरो नेह तानसेन प्रभु ऐसे नटनागर को जल कर नाच नचाने ॥१४२॥

ब्रजराज सांवरे मुरली में गावत नीकी तान ।
धुन सुन थकित भए सुर नर मुनि देव गुनी गंधर्व चकित ह्वै जू बिमान ।।
उरपति रप लागडाट दुरन मुरन सुर प्रमान ।
तानसेन नैन सैन बैन दैन गायन करत राग रंग बंधान ॥१४३॥

ब्रह्मागत अपरंपार न पाऊं ।
पृथ्वी पार पतार ढंढोरा और गगन लों धाऊं रे जोलों न होय सुदिष्ट तुमारी
मन इंछा फल नहीं पाऊं ।।
तीरथ प्राग सुरसती त्रिवेनी सब तीरथ पोखर गुरु द्वार जाऊं ।
भागीरथी गोमती और गंगा तानसेन गावै हरी के द्वार चाऊं ॥१४४॥

वाक्वानी बराही बैष्णवी ब्राह्मी भैरवी दयाली दया कर दीजै ।
महेश्वरी मैनात्मजा सुरसरी पाप नासनी महामाया मृडानी तानसेन
सेवक पर सुदृष्ट कीजै ॥१४५॥

बागे बनाए आए हो पिय लटक पाग की चटक अटकत मन ।
लटक लटक चलत चाल मटक मटक मुसक्यात अलसाने सरसाने नैना री

नैना नींद न आवै निपट सोभत नेक छुब छुब तन ॥
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक रस बस कर लीनो तन मन धन ॥१४६॥

बाजे नीकी घुंघरिया ठुमकत चाल सहेली ।
अनुपम चाल चलत मतंग गत मानो पग परत बेली ॥
ज्यों जल में प्रतिबिंब देखियत चंद किरन तैसी नेह नवेली ।
ते रस बस कियो तानसेन प्रभु खानखाना पिय पाऊ अकेली ॥१४७॥

बादर आए री लाल पिया बिन लागे डरपावन ।
एक तो अंधेरी कारी बिजुरी चमकत उमर घुमर बरसावन ॥
जब ते पिया परदेस गवन कीनो तबतें बिरहा भयो मो तन तावन ।
सावन आयो अत झर लावत तानसेन न आए मन भावन ॥१४८॥

बादर उन्ह आये सो पिय बिन लागे डरपाए ।
एक तो अंधियारी कारी लागत डरावन तैसे ही अवधि बीतन लागे
अजहूं न आए ॥
दादुर पीक मोर सोर करन लागे बिरह तन लागे डराए ।
तानसेन के प्रभु तुम नीके जानो भली सुध लीनी भोरे धाए ॥१४९॥

बादर उन्ह आए सो पिय बिन लागे डराए ।
एसी अंधियारी कारी डरपावनी लागत जिय को भारी ते समै अवध बचन गए
हरि न पाए ॥
दादुर पिक मोर सोर करन लागे बिरही तन लागे डराए ।
तानसेन के प्रभु तुम नीके जानो भली सुध लीनो सुध सो अजहूं न आए ॥१५०॥

बानी चारो के ब्योरे सुन लीज्ये हो गुनी जन तब पावै यह बिद्या सार ।
राजा गुवरहार फौजदार खंडार दीवान डागुर बकसीनो हार ॥

अचल सुर पंचम और चल स्वर बाद करत रिषभ मध्यम धैवत निषाद गांधार ।
सप्त तीन अकइस बाइसो उनचास कोट तानसेन आधार ॥१५१॥

बिद्या में नाद बिकट शास्त्र न में न्याय बिकट गढ़ में लंका बिकट लोक में बिकट
सुरलोक देव बिकट हर जानिए ।
पशुन में बिकट सिंह मुनिन में बिकट दुर्वासा मणिन में बिकट कौस्तुभ मणि
पंच भूत में बिकट अग्नि मान ॥
पंछिन में बिकट गरुड़ उदधि बिकट छारो दिक अवतार बिकट नरसिंह मीन बिकट
मकर मीन बिकट संगीत प्रमान ।
कहत 'कबितान बरस' सुर बिकट नाभि गायत तान बिकट तानसेन जाको
सुजश बखान ॥१५२॥

बिरह की बेल बोइनि अंखियन मन में ।
सोच सोच जल अंसुअन पानी री दिन दिन होत चाह गई ॥
उलहन पातन नये सो बृंद पताल गई ।
तानसेन प्रभु तुमरे दरस बिन सब तन छीन भई ॥१५३॥

बेदन दरद दरि करो हज़रत मीरा अबर करो सुमरन हज़रत
इमाम काम मरसद सांचे हो तुम पीर ।
जो फल मांगे सो फल पाए राजपाट सुख तरीर ॥
तानसेन प्रभु रहीम करम कीजे पापन रहत शरीर ॥१५४॥

भक्त ज्ञान भक्तन की सेवा कर रे जब तेरी भक्ताई पूरन हो
सुमरन कर हरि को ।
कौन भरम भूलो भटकत फिरत अष्टजाम याद रख राम कृष्ण को
पार ब्रह्म परमेसुर को ॥
निरंजन और निराकार अलख जोत जगतपति भक्तबछल गिरिवर धर को ।

तानसेन के प्रभु ध्यान धर निसि दिन घरि घरि पल पल
छिन छिन वा विश्वंभर को ॥१२५॥

भांत भांत के भांड घड़े एसो बिधना कुंभार ।
एकन उत्तम न्यामत एकन मधम न्यामत एकन निकृष्ट न्यामत एकन राख्यो
खाली कर मिकदार ॥
एकन देत रीझत एकन लेत रीझत एकन करोरन दए एकन को हाथ पै खपर
देय मांगते भीख द्वार द्वार ।
एकन को नरक एकन को सरग देत तानसेन प्रभु रच्यो संसार ॥१२६॥

भोर भए भैरव गावत भर मुरली में श्रीवृंदावन मध बनवारी ।
सप्त स्वर तीन ग्राम अकइस मूरछना लागडाट उरपति रप धारी ॥
मधु माधवी भैरवी बंगाली बरारी सैंधवी यह भैरव की संग नारी ।
तानसेन के प्रभु तानन मानन मोह लीनी ब्रज नारी ॥१२७॥

भोर ही राग अलाप सुनाय के नीकी नीकी तान ॥
खरज रिषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषाद सप्त सुर गान ॥
उरपति रप लागडाट देसी मारग देखाय अर्धन्यास श्रुति मूर्छान ॥१२८॥

भोर ही भैरव राग अलापो अहो प्यारे बंसी में आन ।
खरज गांधार रिषभ पचम मध्यम निषाद धैवत तान ॥
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई ताल काल और मान ।
उरपति रप लागडाट देसी मारग तानसेन सुनो साह अकबर प्रमान ॥१२९॥

मंजन कर ग्रह चौकी नवन की दई बिछाय तापर बैठी प्यारी ।
अलक ठिग कपोल डार कच बिछुर रहे मानो फुलवारी ॥

जो तुम पै प्यारी किरनहु कर जूथ ता ढिग मुक्ता की जोत चंदहूं ते
उजियारी ।
रच पच बिरच बनाय बिधना संवारी लाह की अंगिया उदी सारी ।।
उनकी छबि न्यारी अनवट बिछुआ शब्द बोलत झनन झनन झनकारी ।
बाजूबंद पहुंची अवोस को हीरे जड़ित तामध मोती मानो लेते हस्त रंग
चंपक की चंदहार और काजर रे सुभेष बनो तिय को सिंगार ।।
पान खाए पीक डार ले दर्पन मुख निहार आइहे इंद्रबधु अनारत बसत सिंगार ।
सर्ग चली गरे हार अगन रिझय तानसेन प्रभु लेंहे करि कृपा बलिहार ॥१६०॥

मंदिर मणि दीपक काया मणि जीव रजनी मणि चंद्र दिन है जू भान ।
फूल मणि पंकज मणि कल्पवृक्ष विद्या मणि भोज विक्रम जनन मणि जान ॥
बेदन मणि सामबेद राजन मणि राजा राम आनंद मणि सुख निधान ।
सरित मणि गंगा बीर हनुमान गुनियन मणि तानसेन गुरुन मणि ज्ञान ॥१६१॥

मनमोहन मनमानी यातें तूं प्रवीण सयानी ।
सुंदर बदन चंद्रकला लजानी तोसी तूंही तिया और नहीं तिहूं लोक सानी ॥
तानसेन चिर चिर जीवो ऐसी प्रीत रही जौलों जमुन गंग पानी ॥१६२॥

मन ही मन में तू रार रही धर आप अपबस कर के सबन तें दुराय बिराय
कर सही सो अरगट परगट नैन बताय देत ।
प्रानेसुर की प्रीत अति गुपत कियो चाहे अत री तेरे दगपाल तें अनजान
जान लेत ॥
जौलों मैं न सिखाई तौंलो आई नेह नजर जनम जनम हित समेत ।
तानसेन प्रभु के रंग रँगे जे अरन बरन सेत असेत ॥१६३॥

मरग़ज़े बागे रात के जागे छूटे बदन अरसात ॥
जंभात बहियां गहन आगे आवत सकुचन लागत ॥

छियो छाड़ौं अंचरा सो हो झुकिए मैं आनि झुकावत ॥
लाख जो जतन करो तउ न बोलिहौं लाल ए तुम बातें करके लावत ॥
तानसेन प्रभु खन खन तुम हमहि रिझाए ए कहां पावत ॥१६४॥

महम्मद नबी हबी अल्लह के साह मर्दान अली बली मरद कुफ़र दारिद्र हरन हज़रत हसन चुज़रग इमाम ॥
संसार के साहब हुसेन सैयद सहज़ादे जे बलालदीन दीन पर्ण महम्मद बाकर करतार कीने मन घिते करन काम ॥
हज़रत जाफर सादक साचो सीदक इमाम मुसिकाजम हज़रत अली बिन मुसीर रजा जाको दरस देखें जाय दारिद्र दाम ॥
हज़रत तक़ी अलीन की हज़रत हसन असग़री इमाम महंमद मेंदी साहब जमान दे सुख संपत संतत राखो त्रिहूंलोक माम ॥
ख़्वाजा पीर निज़ामदीन औलिया तूं सत्तार परवरदिग़ार करीम रहीम दरीयाई पीर रोसन गाज़ी धाम ॥
हैदर रसूल ग़ौस कुतुबदीन अल्ला फक़ीर तानसेन को दीज्ये राग रंग तीन ग्राम ॥१६५॥

महा गनेस कहत सुख चैन ।
भेटतहूं न छाड़े भावै साथ थिरान लागे बिच कैन ॥
नाम लेत कटत पाप अन धन लछमी दैन ।
तानसेन सेवक पै कीजिए कृपा ज्यों कल्पवृक्ष कामधैन ॥१६६॥

महादेव आदिदेव दिवादेव महेश्वर ईश्वर हर ।
नीलकंठ गिरिजापति कैलासबासी शिवशंकर भोलानाथ गंगाधर ॥
रूप बहु रूप भयानक बाघंबर अंबर खपर त्रिसूल कर ।
तानसेन के प्रभु दीजे नाद बिद्या संगत सो गाऊं बजाऊं बीन कर धर ॥१६७॥

महादेव देव आदि देव महेसुर ईसर हर ।
शंभु शतकंठ ईस विरूप डवरू कर त्रिपुरार त्रिलोचन गंगाधर ॥
नीलकंठ भस्म भूषन बृषभ बाहन पारबती बर ।
जटा जूट बहु रूप शिव जो तांडव धरत तानसेन को दीजे सुख संपत बर ॥१६८॥

महादेव देव देवनपति सुर ईश्वर शंकर पारबतीपति दुखहरन ।
बामदेव आदिदेव जटा जूट धुरजटी डंवरू बाजत डिमडिम सब
सुखकरन ॥
रूप बहु भूतनाथ भुवनेश्वर भोलानाथ गौर बरन ।
तानसेन के प्रभु रीझत तुरत ही देत मन इंछा करे काज असरनसरन ॥१६९॥

महादेव देव देवनपति ईस सुरेस नीलकंठ शिव पचानन पारबतीपति दुखहरन ।
बामदेव महादेव जटा जूट गंग शिखर डिमडिम डंवरू बाजत रीझत
सुखकरन ॥
बृषभवाहन जटाजूट गंग शिखर बहु रूप द्रुम द्रुम डंवरू बाजे त्रिसूल धरन ॥
तानसेन शिवशंकर दया कीजे भोलानाथ जगत पोषन भरन ॥१७०॥

महामाया बादिनी सनमुख हूज्यै अब हूज्यै हो ।
याहीं ते त्रिभुवन मानी याते तूं भवानी जो जाके मन इंछा सोइ सोइ पज्ये हो ॥
रिद्ध सिद्ध तबही पाइए मात जब तुम्र चरन छूज्यै हो ।
तानसेन यह प्रसाद मांगत जहां तहां जुरत फुरत तहां तहां रस रंग की करतु
जै हो ॥१७१॥

माइ री महा कठिन भयो मिल बिछुरे की पीर ।
घरी घरी पल छिन जुग से बीतन लागे नैनन भर भर आवत नीर ॥
जब से प्यारो भयो न्यारो कल ना परत मेरी बीर ।
तानसेन के प्रभु बेग आवन कीनों जियरा धरत नहीं धीर ॥१७२॥

माता जालपा भवानी जाके नगर लोक नर लोक भुव लोक इंद्र लोक त्रिभुवन
मांनी मर्वानी सकल जगत जानी और दारिद्र मो हरनी महारानी ।
जे मन बच करम कर तुमकूं ध्यावे तिन कूं बुध दानी एसी प्रसिद्ध महावाकू
नानी ॥
असुरन दलमलन अंब आदि शक्ति सुर नर रटत रहत गुनी ज्ञानी ।
तानसेन सो मनमानी करम कर तूं दया कर दयानी तान ताल अछर दे सारदा
भवानी ॥१७३॥

मानों सिधु धूंधर वारे दार डार छतरी बनाए है ।
टीका कीने जात चारों विध खंजन नेन मीन मृग को लजाए है ॥
नासा कीर दसन दाड़म कुच श्रीफल से दरसाए है ।
तानसेन प्रभु को रस बस कर लीने चंद्र बदन दिखाए है ॥१७४॥

मुरारि त्रिभुवनपते इंद्र सुरपते सेष नाग है फनपते ।
छीर उदधि सलिलपते कौस्तुभमनि रतनपते दिनकर दिनपते कमलापते ॥
ससि उडुगनपते हनुमान बलनपते नारद भजनपते साजन मृदंग बीनपते ।
चिर चिरंजी रहो साह अकबर नरनपते तानसेन तालनपते ॥१७५॥

मुरलिया कैसे बाजे रस सानी सरजि धों करे अमृत बानी ।
अति ही नाद अगाड़ ताल मूल जिन धारे एसो रंग कहां तें उपजत एसी स्यानी ॥
सत स्वर तीन ग्राम अकईस मूर्छना बह गावत सब गानी ।
तानसेन के प्रभु मुरली अधर धरे जाकी सुरलोक राजधानी ॥१७६॥

मुरली की धुन सुन चकित भई सब ब्रज की नारी सुध न रही कछु
आपन तन मन घर की ।
छुक छुक कर रीझ रीझ कर लेत बलाई कान्हर हर की ॥

एसे सुरतें बजावत जामें नीके सात सप्तक तान विरह भरी सुर की।
जिनहूं सुन्यो तिनहूं सुख पायो तानसेन प्रभु तान राधावर की। १७७॥

मुरली बजायो रिझायो मनमोहन मधुर स्वर तान।
सप्त तान अकइस बाइसो लागडाट और मान॥
ठाट भेद खिलपत आतक खातक स्वरांतक ओडव खोडव पूर्ण आन।
तानसेन प्रभु संगीत गत ले नृतत कर हो सुगान॥१७८॥

मुरली बजावे आप न गावे नैन न्यारे नचावे यह सबही तियन के मन
को रिझावे।
दूर दूर आवे पनघट काहू के घट न दुरावें रसना प्रेम जनावें॥
मोहिनी मूरत सांवरी सूरत देखत हो मन ललचावे।
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक सबहिन के मन भावे॥१७९॥

मेरे मन बौराय राखो इन गोविंद नैनन।
हों पाछे पछताय रही वे तो अंतरजामी स्वामी कहियत हैं मन बस कीनो मैनन॥
सूरत ठगोरी मोहे ठग जो चले सो पीर हरन चिए मो तन सूझे इन नैनन।
तानसेन को प्रभु सुख सागर सुनो वे देखे ही निहचे चैन न॥१८०॥

मेरे मन मांह हरि नाम जिन रच्यो अखिल धाम काम क्रोध तज लोभ बह्यो
जात संसार।
जिन रच्यो स्वर्ग मृत्यु और पाताल निरंजन सोई साकार निस दिन जप ले श्री मुरार।
दीनबंधु दीनानाथ काटत दुख दंद फंद ताहि घरी पल छिन न बिसार॥
तानसेन कहे निरमल रहिए भजिए भगवान मानुष जनम नहीं बारंबार॥१८१॥

मेरो मन मोह लीनों सुंदर नैन रैन चैन परत नाहीं बनवारी।
मेरे तो एक ध्यान तुमारो तुमरी गति तुमही जाने अवगत गत गिरधारी॥

जप तप नेम कछु न जानूं नागर नंदकिशोर अब तो कोटिन कोटि जतन कर हारी ।
प्रानप्यारे दरस दीजै सुख संपत आनंद कीजे तानसेन सरन तेरे एहो
कुंजबिहारी ॥१८२।

मैं तोहे पूछूं गायन बजायन कौन गुरु ज्ञान संगी कौन मूछंना कौन सुर
कौन ग्राम बिस्तार ।
कौन मूल तान कौन प्रथम उचार कौन गुरु को प्रकार ॥
कहां राग बसत कहां रंगत संगत कौन नाड़ी में पवन धार ।
कहां तीव्र चोव्र नेम बरस उरपति रप लागडाट आतक खातक ओडव
खाडव संपूर्ण तानसेन तत बितत घन शिव्वर तार ॥१८३॥

मोर मुकुट पीत बसन सोहत मोहत नवल छैल नंदलाल ।
जमुना के तट तट नट ज्यों नाचत गावत तान रसाल ॥
तन मन धन नोछावर करहूं व.रूं मोतिन थाल ।
तानसेन प्रभु तुमरे दरस कूं सुंदर रूप गोपाल ॥१८४॥

मोसों अवधि बद गए गुंसाई रहे कवन भांत ।
रैन दिना मग जोवत जात एसी कौन तिय जेह रीझाय कीनो मात ॥
अंजन धर भाल महावर नवल तिया ललचात ।
तानसेन प्रभु वहीं सिधारो जहां जागे सारी रात ॥१८५॥

मोसों जे अवधि बद गए सांझ के भोर ही अए ।
एसा काहू चतुर नार तुम रसबस किए एसे नेह नए ॥
अधरन अंजन भाल महावर तिज तिलक ठए ।
तानसेन प्रभु जावोजो जावो नई नार रंगए ॥१८६॥

मोसों ज्यों अवध बद गए सांझ को यहां आए भोर भए ।
एसी को चतुर सुघर नार जिन तुम बिरमाए एसे सुख दए ॥

अधरन अंजन कहूँ पीक पलक लीक और न सों चित छिन बहु भांतन सों लए।
तानसेन के प्रभु बांही पांव धरिए जहां किए नेह नए ॥१८७॥

मोहन मैं वारी वार डारी नार जिन करो कपट की बातें।
रहत ज्ञान ध्यान तिहारे नाम को सुमरन है दिन रातें ॥
घड़ी पल छिन रहो न जात मोपै कपट रहत तेरी बातें।
तानसेन प्रभु कृपा करो मोपै नेक चितवो चहातें ॥१८८॥

मोहन लाल दयाल कृपाल कृपा कीजे तुम्हें कहां हम पावें।
जो अब कृष्ण कुबरी चाहे तें हमहूं कुबरी ह्वै आवें ॥
लिख लिख जोग पिटरिया भेजत काहे कूं पतिया लिखावें।
तानसेन प्रभु दासी ह्वैके हमहूं मथुरा जावें ॥१८९॥

मोहन सृष्टि के आधार तन को अब राख लीजे गोपाल।
नैन प्रान सुख दीजे तन तें दुख दूर कीजे इतनी विनती मेरी सुन लीजे हाल ॥
पतित पावन करुणा सिंधु दीन दुख भंजन अनेक रूप लीलाधारी भक्तवछल जुग जुग भए कृपाल।
मदन मोहन मधुसूदन मुरार गज सुदामा द्रोपदी सहाय करि तानसेन प्रभु भक्त प्रतिपाल ॥१९०॥

मोह लेत पिय को मन तेरे नैना प्यारे।
खंजरीट मृग मीन हीन तें बिन काजर कजरारे ॥
भौंह धनुक तिरछी चितवन नासिका सुकवारे।
चंद्रवदनी कटि केहरी रंभा जंघ संवारे ॥
तानसेन प्रभु प्यारे को रस बस कर लीनो जोबन भार संवारे ॥१९१॥

मोहे जागत भरे चैन न रही नैनन तामें ते सुपने में करा समाइए ॥
तानसेन प्रभु समझ कैसे कीजे भोग विलास कठिन सुध बुध सबहीं ले री सुनि
अमृत भेंट सोना दे रतन जड़ाइए ॥१६२॥

मौन दिन ख्वाजा नाम लेत दुख टरत सरस होत सुख परसत ही दरगाह ॥
रोशन जमीर दस्तगीर हाज़ी उनके करत मन चिते काजा ॥
चिश्ती चिराग़ अत दीनि उजारे भार तोरे रटन कीनो इसलाम कुफर भाजा ॥
तानसेन सेवक को रहम कर कीजे दीन इमान गरीब निवाज सी करता जा हिन
पतराजा ॥१६३॥

यह कमाल कुदरत कादिर तेरी स्वन ही कहो यल ली अला ॥
सबहीं में छायो याही ने पायो है कालु अला ॥
दो दो ते सब ही की दोउ आप बनाय राखे लेले के मरा मरद बिल्ला ॥
तानसेन प्रभु पै बिल्ला बिल्लानिल्ला सम बिल्ला ॥१६४॥

यह लराई लरो रे गुनी ज्ञानी सुर समसेर मजलिस मैदान ।
अलाप चारों तुरंग चढ़ के धुरपद नंगी तरवार ता रशी पर कर रसना कटारी काढ़त
जब सुख ज्ञान ॥
छहों राग उमराव नाद गढ़ को परीक्षक छतीस भार्या तुपक भर धरान ।
धारु बाण धोवा माठा जंबु सुर दार तानसेन यह प्रमान ॥१६५॥

या अल्ला मोमन तूं आपसो गुस्से कर लगा ॥
हों हीन मत तूं प्रवीन सुमत दे कुमत भगा ॥
जिन तेरो नाम लियो तिनको दुख गयो तुअ ध्यान पगा ॥
तानसेन मांगे सुख संपत संतत तानन रंग रंगा ॥१६६॥

रंग जुगन सों गाय सुनावै ताल मूल सुर संगत आवै ॥
दुगन तिगुन चौगुन सो भेद बजावै जब लागडाट रप मान न देखावै ॥

अपने मुख ते न गुनी कहावै ताल मूल को ब्योरो न पावै ॥
तानसेन कहे होवै गुनी जन छत्रपति अकबर को रिझावै ॥१९७॥

रहत न अटके नैन अपनो सों दुराव कियो चाहत होवो देत जनाय ॥
जाके रंग रस रिझै भीजे समझाऊं नाहीं समझत हिल मिल देत वाही तानसेन
बनाय ॥१९८॥

री या तन की मत कर मान मन में नहीं चाहे मन मन करत हो मान ।
मानो मेरी मति मो हनी माननी मो मति मन में मान मत करो मोहन सो मान ॥
मुर मुर चितवत मन ही भन भावन को माधो मुकुंद वे हैं मथुरापति
मुरार मरदान ।
मानरी मान मेनका सी माधुर्य तानसेन प्रभु मन मोहन को मान ॥१९९॥

रूप निरंजन अजन रहत ताहि बरनबे कूं उदित भए छहो शास्त्र अठारहो पुरान ॥
ताको भेद नहीं पावत शिव शनकादिक ब्रह्मा नारद शेष रटत केउ ब्रह्मा शिव घट
घट व्यापक को काट ब्रह्मा रचत देख लें हो बुधवान ॥
आदि अंत मध्य दोही त्रइलोक चराचर वाही की इंछा ते करत बिनान ॥
तानसेन के प्रभु सब जग व्यापक हो पूरन ब्रह्म अबिनासी निरंकार अबिनासी
भगवान ॥२००॥

रूम झूम भर आए री नैना तिहारे ।
बिथुरी सी अलकें स्याम घन सों लागत झपक झपक उघरत मेरे जान तारे ॥
अरुन बरन नैना तेरे तामें लाल डोरे तापर अंबुज वार वार डारे ।
कहे मीयां तानसेन सुनो साह अकबर उपमा कहांलों दीज्ये बिन अंजन
कजरारे ॥२०१॥

रेमन जब लग पिंड प्रान तब लग जग नातो सबहिंन सों व्यवहार ।
जब लग जीजिए तब लग हरि नाम लीजिए रागरंग कीजिए यह तन मन नैन
प्रान जात न लागे बार ॥
बालापन तरुणापन और वृद्ध अवस्था पुन पुन जनम मरन होत संसार ।
तानसेन कर ले ध्यान विश्वंभर को यही पूंजी यही जमा यही है सार ॥२०२॥

रैन विहाय गई भोर भयी होरी कहां खेलै प्यारे ।
कौन नवल तिय पिय बिलमाए गिनत बीते मोहे सब निसि तारे ॥
कहूं कज्जर कहूं पीक लीक अधरन अंजन भाल महावर धारे ।
तानसेन प्रभु तुम बहु नायक सांझ के गए हो सिधारे ॥२०३॥

लंगर बटमार खेले होरी ।
बाट घाट कोउ निकस न पावै पिचकारिन रंग बोरी ॥
मैं जू गई जमुना जल भरने गह मुख मींजी रोरी ।
तानसेन प्रभु नंद को ढोटा बरज्यो न मानत गोरी ॥२०४॥

लंबोदर गजानन गिरिजा सुत गनेस एकरदन प्रसन्नबदन अरुण भेस ।
नर नारी गुनी गंधर्ब किन्नर यक्ष तुंबर मिलि ब्रह्मा बिष्णु आरत पूजवत महेस ॥
अष्ट सिद्ध नव निद्ध मूषकबाहन विद्यापति तोहि सुमिरत तिनको नित सेष ।
तानसेन प्रभु तुमही कूं ध्यावे अबिघन रूप विनायक रूप स्वरूप आदेस ॥२०५॥

लाल अरसाने भोर ही आए ।
कौन बाम हित चित सों चाहे सगरी रैन जगाए ॥
ढिग ढिग काजर फैल रहो है जावक अधिक सोहाए ।
तानसेन के प्रभु वहां ही सिधारो नवल तिया मन भाए ॥२०६॥

लाल मया के बोलाई सौतन दुख पायो ।
जे मेरी हितू तिनके आनंद भयो मृदंग बजायो मन भाए मंगल गायो ॥
पिया की मया मोपै कहि न परत है सब तियन छाड़ मेरे गेह आयो ।
तानसेन के प्रभु पलकन सो मग झारी जीवन जनम सुफल करायो ॥२०७॥

वा दिन के बल बल जैए री जा दिन पीतम ते होय मिलन ।
तन मन धन नोछावर करहूं चरण कमल पांवड़े बिछौहूंगी नैनन पलन ॥
अनेक दिनन से प्यारे मोहे मिलहैं लेऊंगी बलैया दोउ करन ।
तानसेन के प्रभु सुधा की दृष्टि करि मोर मुकट की हलन ॥२०८॥

वा दिन के बल जइए री जा दिन पीतम होय मिलन ।
तन मन धन सब वारूंगी इन चरन कमल पर पांवड़े बिछाऊंगी नैन पलन ॥
कारन मोहन अपनों ही गरे डार लैहें सरस रस ललित अधरन ।
कहे मीयां तानसेन कबधों मिले आय दरस परस इन संजोगन ॥२०९॥

शब्द प्रथम ओंकार वर्ण प्रथम आकार जाति प्रथम ब्राह्मण प्रणाम कर लीजिए।
देव प्रथम नारायण ज्ञानी प्रथम महादेव क्षमा प्रथम धरनी तेज प्रथम भान
लिख लीजिए ॥
नदी प्रथम गंगा पर्वत प्रथम सुमिर साज प्रथम बीण भक्त प्रथम नारद
कहि दीजिए ।
गीत प्रथम संगीत नर में प्रथम स्वयंभू मनु राजन प्रथम राजाराम तानन प्रथम
तानसेन उनचास कोट रस पीजिए ॥२१०॥

शाके को बिक्रम देवे को कुल करन बेद सम नहीं ज्ञान ।
बल को भीम पैज को परसराम बाचा को युधिष्ठिर तेज प्रताप को भान ॥
इंद्रसेन राज मूरत को कामदेव मेरु समान ।
तानसेन कहे सुनो साह अकबर राजन में राजाराम नंदन बिरहभान ॥२११॥

शिव शक्ति अनादि आदि भवानी दयानी दया करो दीजे दरस इन नैन दारिद्र दरन ।
तीनों लोक में जानि मृडानिए सो प्रसाद दीजे दुख दंद दूर होत सुख शरीर आनंद करन ॥
महामाया भद्रकाली कल्याणी शिवानी मैनात्मजा दुखहरन ।
चंड मुंड महिषासुर मर्दनी तानसेन सेवक सुख करनी तूंही जगत पोषन भरन ॥२१२॥

श्रीनंद को नंदन खेले जी हो होरा ।
ग्वार बाल सब संग सखा ले ब्रज की बीथन ही डोरा ।
ताल पखावज आवज बाजत ढोलक और तंबोरा ।
वीणा रबाब मुरज डफ मुरली मधुर मधुर ध्वनि थोरा ॥
कुंकुम केसर चंदन बंदन अबीर गुलाल भर झोरा ।
तानसेन प्रभु फाग रच्यो है खेलत किसोर किसोरा ॥२१३॥

शुभ नखत तखत बैठो राजत छाजत है सब मूलक खलक जे बिधना किए सब छत्र धरे ते सब लागे सब सेवा करन ।
धन धन चक्रवर्ती नरेस अकबर दुखहरन तानसेन एसो सुरपुरी नर नरेंद्र नरन ॥२१४॥

शेष फरीदी गंज शकर जाकर पइयत हे न्यामत मो मन को मुराद भरत तुंबर ।
दोउ जहान कबूल मकबूल अब सेवक सेवाकर पावत एक पावत
तत छिन नाम लेत तरंग एसी पाटांबर बस्तर जर ॥
मो मन को मुराद देत और एक जाहर बातन सों हिल मिल रहे एते पर सुमरन करे सब नारी नर ॥
बात यह जान तानसेन बिनती करत दीपक खेम कुसल आनंद गुनवर ॥२१५॥

सकर गंज गंज बकस सेष फरीद आलम पीर नाम एसे के लीजे निवाज रहे जग
में भाज जाए तन तें रंज ।
जेइ जेइ मांगिए तेइ तेइ फल पाइए तन को करत दारिद्र भंज ॥
तानसेन कहे एते ही मांगिते तुमपै जो हो मद तन पुंज ॥२१६॥

सघन बन छायो द्रुमबेली मध भुवन अति प्रकास बरन बरन पुष्प रंग लायो ।
कोकिला खंजन कीर कपोत अति आनंदकारी चहूं ओर झर बरसायो ॥
सप्तसुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना उक्तयुक्त लागडाट कर देखायो ।
तानसेन कहे सुनो साह अकबर प्रथम राग भैरव गायो ॥२१७॥

सपनेहूं न बिसरिए हो हरि सों मन यों बांछे ।
स्याम सुंदर बहुनायक सुखदायक सबहिंन को मोहि कबहूं न पूछे री आछे ॥
नंद नंदन जू अनत रस कीन्हों काम जरावत री सौत साले दूजे ताछे ।
तानसेन प्रभु के बिछुरे ज़रद भई मोहिं निहोर न आवे री जो कोऊ पाछे ।।२१८॥

सब समूह करिहै तूं नर नारी रहसन ले चले करन लाड़ लरे को मंगन की ।
सहनाई एक कर लिए और टकोरन बीन रबाब नगारन की झांझ झन कारन की ॥
बाजत ए धूम धाम धावत याके अनेक दल गजदल पैदल अश्वदल संगन की ।
तानसेन सब नगर नर नारी प्रफुलित भए गुनी जन गावत छिरकत अतर गुलाब
सुबास आवत सुगंधन की ॥२१९॥

समझ समझ आली प्रान जात प्यारे मोहन बिन ।
बहुर न यह रंग बहुर न यह रूप बहुर न रहे आली यह दिन ॥
अंजुरन जल घटत छिन छिन तेरे री मान बढ़े चौगन ।
तानसेन के तुम प्रभु बहु नायक मान न कीजे आली छिन छिन ॥२२०॥

सर्बमणि अल्ला बड़ेन मणि खुदाई जोत मणि नूर थिरता मणि आकास कारन
मणि करता भोगन मणि भुगतो सृष्टिकरन ।
बेदन मणि सामबेद मारन उचाटन मणि अथर्बन नादन मणि अनहद पंचम
बेद कल मणि कलमन पुरानमणि भागवत भाषा मणि अरबी बनन मणि बृंदावन ॥
आसानमणि अरस कुरस नरन मणि नारायण वृत्तन मणि कलपवृत्त रसिकन मणि
रासबिहारी भूषन मणि कोस्तुभ मणि ।
सुखमणि संतोष लाभन मणि हरि नाम जात मणि ब्राह्मण धर्म मणि इमान तानन
मणि तानसेन अखिल मणि भगवान ॥२२१॥

सर्बमणि ब्रह्म ताको रच्यो संसार पुरुष मणि पुरुषोत्तम अवतार ।
बर्ण मणि ब्राह्मण नाम मणि राम नाम पुराण मणि भागवत ज्ञान मणि
कर बिचार ॥
भक्त मणि प्रहलाद पंछिन मणि गरुड़ बनन मणि बृंदावन रसिक मणि मुरार ।
तानन मणि प्रभु तानसेन ज्ञान मणि महादेव प्रेम मणि नारद बालक मणि
सनत कुमार ॥२२२॥

सरस्वती आदि रूप नाद ब्रह्म बीना बजावत ।
मनावत पूरन गुनी मन इंछा फल पावत ॥
मनि को मंदिर सोने को कलसा जगमग जोग लागी धाता पग ध्यावत ।
इड़ा देवी बाकबानी सारदा तानसेन को दीजे
स्वर ताल राग रंग सुध मुद्रा गावत ॥२२३॥

सरस्वती सुप्रसन्न होय मोकूं बाकबानी ।
खरज ऋषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषाद गुरुमुख प्रसाद आवत तान सानी ॥
रूप की निधानी दयानी बिद्यादानी जगत जननी सारदा संतन मन मानी ।
तानसेन मांगे ताल स्वर अक्षर राग रंग संगत सो गावै इंछा फलदानी ॥२२४॥

साधो बिद्याधर गुननिधान गुनदाता सरस्वती माता को कर आदेस ।
नमो नमो रिद्धि सिद्धि के स्वामी सकल बिद्या प्रबेस ।।
जो इनकूं ध्यावै मन इंछा फल पावै दूर होत तन तें कलेस ।
तानसेन प्रभु तुम ही को ध्यावै ब्रह्मा बिष्णु महेस ॥२२५॥

सावन आयौ आली मोतो विरह सतावन चहूँ ओर ते घन उमड़ घुमड़ आयो
मन भावन बोलत चातक मोर पपीहा रटत पीऊ बिरह बिरहनी करत मान तान-
सेन प्रभु के कैसे करै दिन रैन गननी बन ॥२२६॥

साह अकबर को रिझायले री मान कि एतें कहा पावेगी ।
पिय की चोंपमतू उठ चल हे तो दिन ही भावेगी ॥
होत मेरे कहे कहे देखे री नातर सोरह सेंगी ।
तानसेन पीको मन मोहें तासें तू हट निवार फेर पछतावेगी ॥२२७॥

सुंदर अति प्रबीन महा चतुर चल राज करो रवि ससि जौलों भूमि पर ।
चिर चिरंजी रहो जौलों ध्रुव धरन तरन पवन पानि राजन मनि राजा रामचंद्र
रघुबर ॥
तोसों तूंही और दूजो नाहीं मेरे जान सब जग को बिश्वंभर ।
तानसेन तेरी अस्तुत कहालों बखाने भक्तबछल तोहैं ध्यावत सुरनर
मुनिवर ॥२२८॥

सुंदर छबि छाजत राजत मोहन कहा कहो रूप की निकाई मोसों बरनी न जाई
आस्ती औंसे श्याम कन्हाई ।
श्रवन कुंडल मकराकृत कटि पीत बसन हाथ लकुट मुख मुरली मधुर धुन गाव
अतत सुहाई ॥
सप्त स्वर और तीन ग्राम ले बाइस सुरत उनचास कोट तान लाग डाट
सकल छाई ।

ओडव खाडव संपूर्ण आतक खातक स्वरांतक बादी बिवादी संबादी अनुबादी
तानसेन ले रिझाई ॥२२९॥

सु नजर भई अपने प्यारे को काहे कूं चिह्न दुरावत मोने तब ही जानी
तेरी चतुराई ।
रात को जागि पागि पीतम संग छिपावत गात नैन उनींदे तेरे लेत जंभाई ॥
सुंदर मृगनैनी बोलत पीक बैनी प्यारी रंग भरी मूरत मन समाई ।
तानसेन पिय बस कर लीनों धन-धन महारानी सुखदाई ॥२३०॥

सुनत ही बुलावन की बातें आंखन के जोर धाई हो आगे जो रजा ।
मनकी फूलन सों अंग अंग अंक की सुरन मिलाय हो आगे जो बजा ॥
सूरत देखाई मन लाई चाही आभरन सजा ।
मन बस कर लीनो तानसेन प्रभु रस बस कर ले लजा ॥२३१॥

सुमरन ताकों करो क्यों न ज्यों है सतार ।
यह सुन ले कान और निहचे जान मान एक पाकर परवरदिग़ार ॥
जोइ जोइ धावै सोइ मुराद पावै एसो है गव्वार ।
तानसेन को दीजे अन धन लछमी यह मांगत बार बार ॥२३२॥

सुमरन हरि को करो रे जासो होवै भव पार ।
यह सीख जान मान कह्यो है पुरान मों भगवान आप करतार ॥
दीनबंधु दयासिंधु पतितपावन आनंदकंद तोसे कहत हूं पुकार ।
तानसेन कहे निरमल सदा रहिए नर देही नहीं बार बार ॥२३३॥

सेप बहावदीन गोसल आलम सेदी ही सरमस्त ।
अष्ट सिद्ध नव निद्ध पइयत मन बिच कर मकर के अल्ल रसूल परस्त ॥

दारिद्र भंजन और अंजन की जे उपज मेरी बरज़स्त ।
तानसेन की औलाद लों सहत दामन होवै बरग़स्त ॥२३४॥

सोवत उठ रैन रस लेत अति सुंदर सोहत बदन प्यारी को ।
ले दर्पन मुख देखत अपने मन में सोच सकुच रही नैन होत लजोहें नारी को ॥
सुकमल बदनी मन हरनी मोहनी मूरत पिय रस बस कर काम आतुर चित
हारी को ।
तानसेन प्रभु संग रंग रात जागी पागी आलस जंभात गात तिरछे नैन
निहारी को ॥२३५॥

सोहत कामिन उत्तम रूप पहरत संवार चीर ओपै बढ़ाय कुंदन अंग ।
टीके को कियो उदोत तातें तिमिर फटो सिरन परे पाछे सीसफूल युत
असमान श्रवण कुंडल कवरी अचक कटाछ आप जाते बन रहो दोउ अनंग ॥
दृग अंजन दिए खंजन बस कर लिए कर दर्पन हार सुख देत सुख पैयेअन निरखे
उड़ जात यह बरनन गुनी गावै मानक हीरा कपोल मुक्त लर मुक्तमाल भुज विशाल
कर कमल बाजूबंद फुंदन लटक-लटक अलि जुग संग ॥
काम किरन उपज्यो नवल बिचित्र कंचुकी मधु अतंग अधर सुंदर त्रिवेली तेरे
बाट रनन झनन ठनन ।
अमृत नाभ और लीप पीला रस लेत अत जात तानसेन के प्रभु साह अकबर
सों बन रहे जैसे पारबती महादेव अरधंग ॥२३६॥

सोहत बनी बाल भाल चंद्र भुव धनुष नेत्र कमल श्रवण कुंडल सुंदर कपोल
विलोकत रंभा रे ।
नासिका कीर विद्रुम अधर दाड़म दसन चमक सुंदर बीजरी सी चौंधत स्वरन
मानों कंठ कोकिला रे ॥
ग्रीव कपोत कुच श्रीफल नाम कटि केहर कदली खंभ जंघ रच के धरे री ।
तानसेन निरखि मैन रति लजित भई आवत गज मत चाल मनकूं हरे री ॥२३७॥

सोहत भीनें बार चंद्र बदन धनक सी बनी ठनी श्रवन कुंडल सीसफूल कपोल लोचन रतनारे ।
नेत्र कमल नासिका सुंदर अधर बिद्रुम दसन दाड़म चिबुक सुंदर सुघर कंठ कोकिला के शब्द सों प्यारे ।।
भुज भाए एसे उतारे कुच कंचन के बनाए सांचे में ढारे ।
उदर अलपलंक छीन कट केहर कदली जंघ तानसेन एसी प्यारी पर सर्वस वार डारे ।।२३८।।

सोंहे खात तोतरात बात कहत अरसात आए भए प्रात डगमगात गात ।
एंडा जंभात धक धकात मुरझात धरधरात भर भरात ।।
वहां जी जावो जहां नवल तिय संग जागे सारी रात ।
याही तें मुसकात मेरो मन मनात बात कहात हंसात मोहे न सोहात तिहांही सिधारिए जाकी मन ललचात ।।
तानसेन के प्रभु मीठे बचनन बतरात झूठी झूठी सौंहे खात तेरी सों तेरी सौं मैं अब नहीं जात ।।२३९।।

हज़रत अली कों सुदिष्ट भली मोपर जो दुख जाय सब तन तें भाज ।
हों सेवक तिहारो तुम जात पाक करोम करम कीजे राख लीजे यह जगत में मेरी लाज ।।
बेचुन बेंच गुन बेसुभे बेनमून पाक जात रियाज न्याज ।
तानसेन रब रहमान करीम रहीम बिनती सुनिए आवाज ।।२४०।।

हमारे लला के सुरंग खेलौना खेलत कृष्ण कन्हैया ।
अगर चंदन को पलनो बनो है हीरा लाल जवाहर जरैया ।।
भ्रमरी भौंरा चट्टा बट्टा हंस चकोर मोर चिरैया ।
तानसेन प्रभु जसुमत झुलावै दोउ कर लेत बलैया ।।

हमारे बबा के दामोदर पछैया ताकि हौं लेहौं बलैया ।
जीयो जागो कोट बरस लों जौलों ध्रुव चरन तरन रवि सहित रैया ॥२४१॥

हारी हमेल सों नीकी लागत और गोरे चूरीहरी ।
कंठ कपोत बदन जोति कानन बीरी और बेसर केसर की खोर तापर लटपटात
लटकत लट सुथरी ॥
भुज मृनाल श्रीफल से कुच कट केहरी जंघ कजरी ।
चंद्रबदनी सावक नैनी बोलत अमृत बैन धजरी ॥
तानसेन प्रभु रिझाय लायो सोलहो सिंगार बतीस आभरन सजरी ॥२४२॥

हिंदनी कबहूं जनन कहो रे तुरका संग तुरकानी भयेली ।
अनुपम चाल चलत मतंग गत मानो पग परत पवेली ॥
ज्यों जल में प्रतिबिंब देखियत चंद किरन तैसी जे हर बेली ।
ते रस बस कियो तानसेन प्रभु खानखाना पिय पाक अकेली ॥२४३॥

हेली चलो देखो री चितचोर ।
रैन अंधेरी कारी बिजरी चमकत मोर करत अति सोर ॥
ब्रज गोपन सब सुख मदमाती कित रजनी कित भोर ।
बृंदाबन की कुंज गलिन में मदन जगी चहूं ओर ॥
नंद महर को ढीठ सांवरों हम सों भयो कठोर ।
मन ब्याकुल बिन दास स्याम के चंचल चित मन जोर ।
तानसेन दरसन दीजे श्रीबल नंद किसोर ॥२४४॥

है कालिंदी पति प्रताप वरे औंधा तरी सरस्वती मिल भई त्रिबेनी ।
पीछे तें आवत जमुना स्याम रूप भरन घोर रूप बरसत पाषाण तोर गुमान ते
चली जम के बेनी ॥

अरुन बरुन सरस्वती गुप्त प्रगट होत चंद्र किरन जोत आकास पर छूवत
भुज तेनी ।
तैसे बन बन तेहू मिलन चली लाल अति रंग भीनी ॥
भागीरथ तूं री भगत तारन सगर उधारन सारानी ।
सब भुव पावन पै धार तीरथ प्रयाग वे तारी जलौधापति धरनी तरनी ॥
तोलों उत्पति नर नारी ब्रह्मा विष्णु मकर न्हावत करत अस्तुत गावत भर तानसेन
गुनी ॥२४५॥

है यह माननी मनायवे को अत ही हुलास जिय मनहूं न मानों पिय कैसे
के मनाइए ।
बहुत ही सौंह दई उठ चल प्यारी वाके पोय पग धरि सीस नवाइए ॥
माने न मनायो नेक रच पच हारी कैसे कर वाको समझाइए ।
तानसेन प्रभु प्यारे आप नेक चलिए बल पांयन में सिर नाय बिनती
कराइए ॥२४६॥

हौं ओंकार महादेव शंकर तुम सकल कला पूरन करत आस ।
निहचेही धरत ध्यान सुमरन कर मनमान देखत दर्शन गई त्रास ॥
हरे दुख दंद सोहत जटा गंग रुंड माल सोहौं बाघंवर बास ।
तानसेन वाके ध्यावै तव मन इंछा फल पावै होय कैलास निवास ॥२४७॥

कवि-परिचय

अमीर ख़ुसरो

अमीर ख़ुसरो का जन्म सन् १२५३ ई० (६५१ हिज़री) में एटा ज़िले के पटियाली गाँव में हुआ था जब ये ७ वर्ष के थे तभी इनके पिता का देहांत हो गया और इनकी माता तथा इनके नाना नवाब एमादुलमुल्क ने इनका लालन-पालन किया। ख़ुसरो का यथार्थ नाम यमीनुद्दीन मुहम्मद हसन था। ख़ुसरो उनका उपनाम था।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद ख़ुसरो ग़यासुद्दीन बलबन के बड़े लड़के मुहम्मद सुलतान के दरबार में नौकर हो गए। १२८४ ई० में जब दीपालपुर की लड़ाई में सुलतान मारा गया तो शत्रुओं ने ख़ुसरो को भी पकड़ लिया और दो वर्ष बाद ये उनके पंजे से छूट सके। इसके बाद ख़ुसरो कुछ दिन के लिए अवध के सूबेदार अमीर अलीमीर के यहाँ नौकर हुए और वहीं अपना 'अस्पनामा' नामक ग्रंथ लिखा। वहाँ से आने पर ये कैक़ुबाद के दरबार में रहे और गुलाम वंश के पतन के उपरांत जलालुद्दीन खिलजी के दरबार में आए। १२९६ ई० में अलाउद्दीन जब अपने चचा को मार कर गद्दी पर बैठा तो इनका वेतन एक सहस्र कर दिया और इन्हें 'ख़ुसरुए शाअरा' की पदवी दी। ख़ुसरो ने इनके नाम पर कई पुस्तकें लिखी जिनकी इतिहास की पुस्तक 'तारीख़े अलाई' अधिक प्रसिद्ध है। सन् १३१७ ई० में क़ुतुबुद्दीन मुबारक शाह गद्दी पर बैठा तो ख़ुसरो ने उसे क़सीदा सुनाया जिस पर प्रसन्न होकर हाथी के तौल इतने सोने से इन्हें पुरस्कृत किया। खिलजी वंश के नाश के उपरात पंजाब का ग़ाजी खाँ ग़यासुद्दीन तुग़लक नाम से जब गद्दी पर बैठा तो उसने भी इनका पर्याप्त सम्मान किया और उन्होंने उसके नाम पर अपना अंतिम ग्रंथ तुग़लकनामा लिखा।

१३२४ ई० में इनके गुरू निज़ामुद्दीन औलिया का देहांत होगया। यह समाचार सुनते ही ख़ुसरो औलिया के क़ब्र के पास पहुँचे और,

गोरी सोये सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।

नामक दोहा कहकर बेहोश होकर गिर पड़े। कहा जाता है कि उन्होंने उसके बाद अपना सब कुछ लुटा दिया और उसी वर्ष (१३२५ ई०) इनका देहांत हो गया। इन्हें इनके गुरू की कब्र के पास ही गाडा गया जहाँ १६०२ ई० में ताहिर बेग ने एक मक़बरा बना दिया।

खुसरो एक योग्य विद्वान, कवि, इतिहासकार, संगीतज्ञ और रेनानी थे। इन्होंने अपने जीवनकाल में सात राजाओं की सेवा की।

खुसरो की प्रसिद्धि का विशेष कारण कविता एवं संगीत के क्षेत्र में उनकी देन है। कहा जाता है कि इन्होंने लगभग १०० पुस्तकें लिखीं जिनमें अब २२ फ़ारसी ग्रंथ तथा कुछ फुटकर हिंदी कविताएँ ही प्राप्त हैं।

खुसरो ने ईरानी संगीत से यथोचित चीजें लेकर भारतीय संगीत को समृद्ध बनाने का पूरा प्रयास किया। इनके युग के प्रसिद्ध भारतीय संगीतज्ञ गोपाल नायक से इनकी होड़ लगी थी जिसमें ये विजयी रहे। भूमिका भाग में इसका कुछ विस्तार से उल्लेख किया जा चुका है।

कुछ लोगों का अनुमान है कि इन्होंने संगीत के विषय में भी कई पुस्तकें लिखी थीं जो आज उपलब्ध नहीं है।

भारतीय संगीत को खुसरो की देन चार क्षेत्र में है—

१. वाद्ययंत्र—सितार तथा तबला।

२. राग—ज़ीलफ़ सरपरदा तथा गारा आदि।

३. ईरानी संगीत के अंदाज पर हिंदुस्तानी रागों में तराना कौल तथा नकशोगुल आदि गीतों की रचना।

४. ताल—झुमरा तथा सूलफाक आदि।

खुसरो नाम के एक संगीतज्ञ तानसेन के समय में भी थे जो कुछ लोगों के मत से ये तानसेन के दौहित्र लगते थे। प्रसिद्ध सितारिया फीरोज़ खां इन्हीं के पुत्र थे। फीरोज़ खां के ही पुत्र मसीत खाँ के नाम पर विलंबित

लय के मसीतखानी बाजा का प्रचलन हुआ। सितार आविष्कार के संबंध में इन दोनों ख़ुसरों में बहुत विवाद है। कुछ लोगों के अनुसार अमीर ख़ुसरो ने ही सितार का आविष्कार किया था जैसा कि उल्लिखित है। कुछ अन्य लोगों के अनुसार ख़ुसरो द्वितीय ने आविष्कार किया था। तथ्य यह है कि इस संबंध में प्रमाणिक सूत्रों का इतना अभाव है कि निश्चय के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता। एक तीसरे ख़ुसरो का भी पता चलता है।

गोपाल नायक

अन्य बहुत से कलाकारों एवं संगीतज्ञों की भाँति गोपाल नायक के जीवन के विषय में भी प्रामाणिक सामग्री का बहुत अभाव है। यों अधिकतर विद्वान इसी बात से सहमत हैं ये अलाउद्दीन खिलजी के समकालीन थे और दक्षिण के तत्कालीन यादव वंशी राजा के दरबार में देवगिरि में रहते थे। सन् १३१० ई० में जब अलाउद्दीन ने देवगीरि के राजा को पराजित कर अपने कब्जे में कर लिया तो ये उत्तरी भारत में चले आये। इस संबंध में कई तरह की किंवदंतियाँ कही जाती हैं। एक के अनुसार अलाउद्दीन स्वयं बहुत कला प्रेमी था और गोपाल नायक को अपने साथ लाया था। दिल्ली पहुँचने पर अलाउद्दीन के दरबारी कवि एवं संगीतज्ञ ख़ुसरो से इनमें मुठभेड़ हुई जिसमें ख़ुसरो की चालाकी से गोपाल नायक को मुंह की खानी पड़ी इस घटना का कुछ विस्तार से उल्लेख भूमिका भाग में किया जा चुका है। एक दूसरे मत से अलाउद्दीन ने जिस समय वहाँ लूट मचायी वे वहाँ वृंदावन चले आये। एक तीसरे मत के अनुसार गोपाल नायक किसी छोटी जाति में उत्पन्न हुए थे और लड़कपन से ही इनमें संगीत के प्रति विशेष अभिरुचि देखकर बैजू बावरा ने इन्हें अपने साथ रख लिया था। बैजू बावरा से ही इन्होंने संगीत की शिक्षा प्राप्त की और शीघ्र ही चारों ओर इनकी ख्याति हो गई। ख्याति के कारण इनमें कुछ अहंभावना आ गयी और एक दिन किसी कारणवश अपने गुरु बैजू बावरा से रुष्ट होकर ये चले गये और विजयनगर के दरबारी गायक हो गये।

राजा ने उसकी संगीत साधना से चकित होकर इनके गुरु का नाम पूछा पर इसका उत्तर गोपाल नायक ने यह दिया कि उसका गुरु कोई नहीं है, मुझमें यह गुण सहजात और ईश्वर प्रदत्त है। राजा को इस पर विश्वास न हुआ पर जब उनके बार बार पूछने पर भी बैजू ने यही कहा तो राजा ने रुष्ट होकर कहा कि ठीक है, पर यदि तुम्हारे गुरु का पता चल जायगा तो तुम्हें फाँसी की सजा दी जायगी।

संयोगवश गोपाल को ही खोजते उसके गुरु बैजू बावरा दर्बार में पहुँचे और राजा को इसका पता चल गया। राजा ने गोपाल से पूछा पर उसने फिर वही बात दुहरायी। राजा ने इसका प्रमाण देने को कहा गोपाल ने गाना शुरू किया और इतना सुंदर गाया कि उसके चारों ओर हिरन का झुंड आकर खड़ा हो गया। गोपाल ने एक हिरन के गले में एक माला डाल कर गाना समाप्त कर दिया और सब हिरन चौकड़ी भरते हुए चले गये। गोपाल ने गर्व पूर्ण स्वर में बैजू से कहा कि यदि तुम मेरे गुरु हो तो माला मँगा दो। बैजू गाने लगा और फिर सब हिरन आ गये। इन हिरनों में वह भी था जिसके गले में माला थी। राजा यह देख कर बैजू पर बहुत प्रसन्न हुआ और गोपाल नायक को फाँसी पर चढ़ा देने की आज्ञा दी। बैजू ने अपने शिष्य को छुड़ाने का प्रयास किया पर वह सफल न हो सका और गोपाल को फाँसी दे दी गई। इस किंवदंती के विषय में निश्चय के साथ कुछ कहना इसलिए संभव नहीं है कि प्रायः लोग बैजू को तानसेन का समकालीन एवं तानसेन के गुरु हरिदास का शिष्य मानते हैं। अतएव उसका ख़ुसरो कालीन गोपाल का गुरु होना संभव नहीं लगता। यों कुछ लोग इस मत के भी हैं कि गोपाल ख़ुसरो का समकालीन न होकर उसका परवर्ती था।

लोगों का कहना है कि गोपाल का विवाह हुआ था और उसे एक मीरां नाम की पुत्री भी थी जो स्वयं बड़ी ख्याति नामा संगीत विशारदा थी। 'मीरां की मल्हार' उसी की देन है। कुछ लोग इसका संबंध प्रसिद्ध भक्तिकालीन कवियित्री भी मीरां से जोड़ते हैं, पर शायद यह ठीक नहीं है।

संक्षेप में गोपाल के संबंध में किंवदंती रूप में प्रचलित प्रधान बातें ये ही हैं। इनमें अधिकांश विश्वसनीय नहीं जान पड़तीं।

हरिदास

स्वामी हरिदास के जीवन के संबंध में प्रामाणिक सूत्रों की बहुत कमी है। कुछ लोगों के अनुसार इनका जन्म हरिदासपुर में हुआ था और इन्हीं के नाम पर उसका उक्त नाम रखा गया। कुछ लोग इनका जन्म हरियाना में मानते हैं और हरियाना नाम का संबंध हरिदास से जोड़ते हैं। कुछ अन्य लोग इन्हें मुल्तान या होशियारपुर में उत्पन्न मानते हैं। 'श्री निबार्क माधुरी' के अनुसार स्वामी हरिदास का जन्म वृंदावन से एक मील की दूरी पर राजापुर ग्राम में हुआ था। 'केलिमाल' की भूमिका में श्री सुदर्शन सिंह ने इनके जन्मस्थान के संबंध में विभिन्न मतों पर बड़ी विद्वत्ता से विचार किया है और वे अंत में इसी मत पर पहुँचे हैं कि स्वामी हरिदास का जन्म अलीगढ़ ज़िले के 'हरिदासपुर' नामक स्थान में हुआ।

स्वामी जी के जन्म संवत के संबंध में भी कम विवाद नहीं है। अपने मथुरा मेमायर्स में मिस्टर ग्राउज़ ने 'भक्तसिंधु' नामक ग्रंथ का उल्लेख किया है और उसके आधार पर स्वामी हरिदास का जन्म सं० १४४१ बतलाया है, पर वहीं ग्राउज़ ने इसका खंडन भी किया है। श्री सहचरिशरण की 'गुरु प्रणालिका' में इनका जन्म सं० १५३५ दिया गया है, पर यह भी प्रामाणिक नहीं माना जाता। श्री किशोर दास ने 'निजमत सिद्धांत' में इनका जन्म, भाद्र शुक्ल ८ सं० १५३७ माना है और इन्हीं के अनुकरण पर बाद के 'मिश्रबंधु विनोद' में वियोगी हरि 'ब्रज माधुरी सार' में तथा बिहारी शरण के 'श्री निंबार्क माधुरी' में माना है। कुछ अन्य लेखकों ने सं० १५३७ में ही इनके उत्पन्न होने का उल्लेख किया है, परंतु स्वामी जी के जीवन की अन्य घटनाओं को सामने रखने पर इस संवत की संगति नहीं बैठती। 'मिराते सिकंदर' और 'मिराते अकबरी' एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ है जो अकबर के समय में पूरा हुआ था। इसकी छठीं जिल्द में स्वामी

हरिदास के संबंध में काफी बातें दी गयी हैं जो विद्वानों की राय में सभी दृष्टियों से ठीक हैं। इसके अनुसार स्वामी जी का जन्म पौष शुक्ल १३ भृगुवार सं० १५६६ में हुआ था। इसके पिता का नाम आशुधीर तथा माता का नाम गंगा देवी था। यों कुछ लोगों ने इनके पिता का नाम गंगाधर तथा माता का नाम चित्रा देवी लिखा है पर यह अप्रामाणिक हैं। स्वामी जी सारस्वत ब्राह्मण थे।

स्वामी जी के रक्त में ही भक्ति के संस्कार थे। २५ वर्ष की वयस में ही ये विरक्त हो गए और वृंदावन आकर निधुवन में अपनी कुटी बनायी और रहने लगे। भक्तों में स्वामी जी राधा की सखी ललिता के अवतार माने जाते हैं।

स्वामी जी के संप्रदाय के विषय में भी लोगों में बहुत मतभेद है। राधावल्लभीय संप्रदाय के लोगों ने इन्हें अपने संप्रदाय का घोषित किया है तो निंबार्कियों ने अपने संप्रदाय का। इसी प्रकार टट्टी तथा विष्णुस्वामी संप्रदाय का भी इनको बतलाया गया है। पर यथार्थ यह है कि ये सच्चे भक्त थे। इनकी भक्ति माधुर्य भाव की थी जैसा कि इनके छंदों से स्पष्ट है।

स्वामी जी एक उच्च कोटि के भक्त कवि थे। इनकी पुस्तक 'केलिमाल' है जो प्रकाशित हो चुकी है। इसके अतिरिक्त कुछ फुटकर छंद भी इनके मिलते हैं।

स्वामी जी के संबंध में भक्तों तथा संगीतज्ञों में अनेकानेक अंध-विश्वास पूर्ण जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं। इनमें से कुछ का उल्लेख इनके प्रसिद्ध शिष्यों तानसेन तथा बैजू बावरा के परिचयों में अन्यत्र किया जा चुका है।

प्रवाद है कि अकबर ने एक बार तानसेन की संगीत कला से प्रसन्न होकर उससे पूछा कि संसार में क्या कोई तुमसे अच्छा भी गा सकता है। तानसेन ने उत्तर दिया—जहाँपनाह मेरे गुरु हरिदास की कला के आगे

मेरी कला तो कुछ भी नहीं है। अकबर हरिदास का संगीत सुनने के लिए लालायित हो उठा और तानसेन की सलाह से वह वेष बदलकर संगीत सुनने के लिए चल पड़ा। वहाँ अकबर तो कुटी के बाहर रहा पर तानसेन भीतर गया। कुछ देर बाद स्वामी जी की आज्ञा से तानसेन ने गाना प्रारंभ किया और जान बूझ कर उसने अशुद्धि की। अपने शिष्य की अशुद्धि ठीक करने के लिए स्वामी जी ने स्वयं गाना प्रारंभ किया जिसे सुन कर अकबर दंग रह गया। संगीत के समाप्त होते ही वह स्वामी जी के चरणों पर आ गिरा और अपना परिचय देते हुए कुछ आज्ञा देने का आग्रह करने लगा। स्वामी जी उसके भाव को समझ गये और उन्होंने कहा कि मैं जिस घाट पर नहाने जाता हूँ उसका एक कोना टूट गया है, उसे बनवा दो। अकबर को इस बात से अपना कुछ अपमान होना, लगा। इतने बड़े सम्राट से इतनी छोटी बात माँगना! कोई ऐसी चीज़ कहनी थी जिसमें दो-चार लाख का खर्च हो। स्वामी जी के आग्रह पर अकबर वह घाट देखने गया पर घाट देखते ही उसके होश उड़ गये। उसे ऐसा दिखायी पड़ा कि घाट में बहुत ही मूल्यवान पत्थर लगे हैं और उसका एक कोना बनवाना उसके लिए तो क्या उस जैसे दस बीस राजाओं के लिए मिल कर भी संभव नहीं है। अकबर ने लौट कर स्वामी जी से क्षमा माँगी। अंत में स्वामी जी वृंदावन के मोरों और बंदरों के पोषण करने का आदेश दिया जिसे सम्राट ने सहर्ष स्वीकार किया।

कहा जाता है कि स्वामी के किसी शिष्य ने उन्हें एक बार पारस पत्थर दिया जिसे उन्होंने यमुना में फेंक दिया। इस पर वह व्यक्ति कुछ दुखी दीख पड़ा। स्वामी जी यमुना से उसे जैसे अनेकानेक के पत्थर निकाल कर बाहर रख दिये तब कहीं उसे ज्ञान हुआ और उसने क्षमा माँगी। इस प्रकार की और भी बहुत सी चमत्कारपूर्ण कथाएँ कही जाती हैं जिनसे स्वामी हरिदास की महत्ता प्रकट होती है। इन सब किंवदंतियों का केवल इतना ही अर्थ है कि स्वामी जी बड़े ही निर्लेप और विरक्त व्यक्ति थे।

९५ वर्ष की आयु में सं० १६६४ में स्वामी हरिदास का देहांत हुआ।

बैजू बावरा

गोपाल नायक की भाँति ही बैजू बावरा के विषय में भी अनेक जनश्रुतियाँ हैं। पर जन्म एवं मृत्यु के सन्-संवत् जाँति-पाँति जन्म-स्थान शिक्षा दीक्षा आदि के विषय में प्रामाणिक सूत्रों का अत्यंत अभाव हैं।

बैजू बावरा का यथार्थ नाम बृजलाल था। ये एक साधु थे और वृंदावन में यमुना के किनारे रह कर भक्ति में तल्लीन रहते थे। इनकी तल्लीनता के कारण ही लोग इन्हें बावरा कहा करते थे।

जनश्रुतियों के आधार पर बैजू बावरा के समय के संबंध में कई प्रकार की बातें कही जा सकती हैं। एक यह कि अमीर खुसरो से होड़ लेने वाले गोपाल नायक को यदि बैजू बावरा का शिष्य होने की बात स्वीकार की जाय तो इनका समय १३वीं-१४वीं सदी ठहरता है। पर एक जनश्रुति यह भी है कि ये तानसेन के गुरु हरिदास के शिष्य थे और तानसेन से इनसे प्रतिद्वंदिता थी। इसे ठीक मानने पर ये अकबर के समय के सिद्ध होते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार ये तानसेन के कुछ पहले हुए थे। यह एक तीसरा मत है और इसके अनुसार उनका समय उपर्युक्त दोनों के बीच में है।

तानसेन और बैजू बावरा के संबंध में जो जनश्रुति है, उसमें सच्चाई तो शायद कुछ भी नहीं है, पर मनोरंजक होने के कारण उसे यहाँ दिया जा रहा है।

कहा जाता है कि तानसेन के संगीत को सुनकर अकबर बहुत ही प्रसन्न हुआ था और उसके प्रति आदर प्रदर्शित करने के लिए यह आज्ञा दे रखी कि नगर में कोई न गावे। यदि कोई गाता मिलेगा और वह तानसेन से अच्छा न गायेगा तो उसे फांसी की सजा दी जायेगी। एक बार कुछ साधु गाते हुए नगर में पहुंचे और वे इसी अपराध में गिरफ्तार कर लिये गये। उनमें सबको तो फांसी दे दी गयी पर एक आठ वर्ष के लड़के को

अबोध जान कर छोड़ दिया गया। उस बालक (जो बैजू था) को यह बात लग गयी और घूमता-फिरता तानसेन के गुरु हरिदास के पास पहुँचा और उनसे पूरी घटना बतला कर अपने को शिष्य बनाने की प्रार्थना की। हरिदास स्वामी ने उसे शिष्य तो बनाया पर तानसेन के विरुद्ध बदले की भावना को दिल से निकाल देने की शर्त पर। बैजू ने इसे स्वीकार कर लिया। कई वर्षों के अभ्यास के उपरांत बैजू तानसेन के नगर में पहुँचा और गाने लगा जिसके फलस्वरूप पकड़ कर दर्बार में ले जाया गया। बादशाह के पूछने पर उसने गाने की इच्छा प्रकट की। तानसेन भी बुलाये गये। बादशाह ने पहले तानसेन का गाने को कहा। तानसेन ने आरंभ किया और कुछ देर बीतने पर वहाँ झुंड के झुंड हरिन आ गये। तानसेन ने अपनी माला उनमें से एक के गले में डाल दी और चुप हो गए। मंत्र मुग्ध हरिन संगीत समाप्त होते ही भाग गए। अकबर ने बैजू से तानसेन की माला लौटाने को कहा। बैजू ने गाना शुरू किया और थोड़ी ही देर में हरिन फिर आ गए। बैजू ने उसके गले से माला निकाल कर तानसेन को दे दी। अब बैजू की बारी थी। उसने गाना प्रारभ किया और ऐसा गाया कि सामने रखा हुआ पत्थर पिघल गया। बैजू ने अपनी वंशी (किसी किसी मत से अपना मजीरा) उस पिघले पत्थर में डाल कर गाना बंद कर दिया और फलस्वरूप पत्थर पुनः पूर्ववत् हो गया। अब तानसेन से वंशी लौटाने को कहा गया। तानसेन ने लाख प्रयास किया पर ऐसा न हो सका। अकबर बैजू से बहुत प्रसन्न हुआ और उसका परिचय पूछा। बैजू ने साधुओं की हत्या की पूरी कहानी उसे सुना दी। अंत में अकबर ने कहा कि इसका आशय यह है कि तासेन तुम्हारा शत्रु है। तुम उसे फाँसी दिलवा सकते हो। बैजू ने तुरंत उत्तर दिया, जहाँपनाह कला जीवन के लिए है, जीवन हरण के लिए नहीं! मैं केवल यही चाहता हूँ कि आप नगर के भीतर किसी को गाने न देने का प्रतिबंध हटा लें। अकबर इस महान् आत्मा के अप्रतिम व्यक्तित्व पर आश्चर्य चकित रह गया और बैजू गाता हुआ वहाँ से चल पड़ा।

तानसेन

प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन का जन्म शिवसिंह सेंगर के अनुसार सं० १५८८ में हुआ था।[1] इसके विरुद्ध डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने इनका जन्म सन् १५२० ई० माना है।[2] डॉ० सरयू प्रसाद अग्रवाल ने[3] अकबरनामा में दी गयी एक तिथि, उस युग के प्राप्त तानसेन के दो चित्रों के आधार पर इन दोनों तिथियों की प्रामाणिकता और अप्रामाणिकता पर विचार किया है और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि सेंगर जी की तिथि ही अधिक समीचीन है। ऐसी स्थिति में सं० १५८८ ही तानसेन का जन्म-काल ठहरता है।

तानसेन का जन्म बेहट गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम मकरंद पांडे था। इनके अपने मूल नाम के विषय में निश्चय के साथ कुछ कहना संभव नहीं। कुछ लोगों के अनुसार इनका आरंभ का नाम त्रिलोचन मिश्र था। यह बात विचारणीय है कि जब पिता पांडे थे तो इनके नाम के साथ मिश्र क्यों जोड़ा गया। त्रिलोचन से बिगाड़ कर लोग इन्हें 'तन्ना' कहते थे और आगे मुसलमान होने पर इसी 'तन्ना' के आधार पर इन्हें तानसेन कहा गया। एक किंवदंती के अनुसार इनका बचपन का नाम तन्नू था। पर इनमें किसी का भी कोई प्रामाणिक आधार नहीं है। प्रामाणिक ग्रंथों में इनका तानसेन ही मिलता है, जो निश्चय ही मूल नाम नहीं है।

तानसेन ब्राह्मण से मुसलमान कैसे हो गये इसका भी कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। इस संबंध चार-पाँच संभावनाएँ हो सकती हैं।

(क) किसी ने उन्हें बलपूर्वक मुसलमान बना लिया हो जैसा कि डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने लिखा भी है।[4]

---

[1] शिवसिंह सरोज, पृ० ४२१ [2] ऋतम्भरा, पृ० ११० [3] अकबरी दरबार के हिंदी कवि, पृ० १००-१ [4] ऋतम्भरा, पृ० ११३

(ख) किसी मुसलमान कुमारी के प्रेम में उन्होंने धर्म-परिवर्तन कर लिया हो।

(ग) धन के लोभ में मुसलमान हो गये हों।

(घ) इस्लाम धर्म को श्रेष्ठ समझकर उसे स्वीकार कर लिया हो।

(ङ) किसी प्रभावशाली मुसलमान के संपर्क से मुसलमान हो गये हों।

अब इन पाँचों पर अलग-अलग विचार किया जाना चाहिए। बलपूर्वक मुसलमान बनाए जाने की बात डॉ० चाटुर्ज्या ने लिखी है पर अकबर के समय में इस प्रकार की किसी घटना का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। अतएव यह घटना संभव नहीं लगती। प्रेम के संबंध में दो किंवदंतियाँ मिलती है। एक के अनुसार तो तानसेन का प्रेम अकबर की पुत्री मेहरून्निसा से हो गया था और दूसरे के अनुसार किसी अन्य मुसलमान कुमारी से। इन दोनों में अकबर की पुत्री से संबद्ध घटना तो संभव नहीं ज्ञात होती। यदि ऐसा हुआ होता तो इसका कहीं न कहीं उल्लेख अवश्य ही मिलता। दूसरी किसी अन्य मुसलमान कुमारी से प्रेम की घटना की संभावना हो सकती है। धन के लोभ से तानसेन का धर्म परिवर्तन भी असंभव-सा है। एक तो इतने बड़े कलाकार के लिए धन का कोई विशेष आकर्षण नहीं हो सकता था, दूसरे रीवां नरेश रामचंद्र के दरबार में वे पहले थे और बाद में अकबर के यहाँ स्वभावतया दोनों ही स्थानों पर उन्हें धन की कमी न रही होगी। इस्लाम धर्म को श्रेष्ठ समझकर उसे स्वीकार करने की बात भी तानसेन के लिए संभव नहीं लगती। उनकी कविताओं से यह स्पष्ट है वे मुसलमान होने के बाद भी हिंदू धर्म के प्रति श्रद्धा रखते थे। किसी प्रभावशाली व्यक्ति के संपर्क में आने के कारण मुसलमान होने की बात भी कुछ संभव है। कहा जाता है कि बचपन से ही ये ग़ौस मुहम्मद के साथ रहते थे। एक किंवदंती के अनुसार इन्होंने अपने गुरु ग़ौस मुहम्मद का जूठा पान भी खा लिया था। संभव है इस कारण से ही हिंदू धर्म छोड़ मुसलमान बनना पड़ा हो।

इस प्रकार किसी मुसलमान कुमारी के प्रेम, या गुलाम ग़ौस के संपर्क के कारण ही तानसेन के मुसलमान बनने की अधिक संभावना है।

तानसेन की शिक्षा ग़ौस मुहम्मद और स्वामी हरिदास इन दोनों व्यक्तियों के यहाँ हुई थी। बालकाल में ये ग़ौस मुहम्मद के साथ रहे। ग़ौस मुहम्मद जब अपना सारा ज्ञान इन्हें दे चुके तो उच्चतर संगीत की प्राप्ति के लिए स्वामी हरिदास के पास भेजा।[1] हरिदास स्वामी उस युग के सर्व श्रेष्ठ संगीतज्ञ थे। कहा जाता है कि एक बार अकबर ने तानसेन से पूछा कि क्या कोई तुमसे भी अच्छा संगीतज्ञ है। इस पर तानसेन ने स्वामी हरिदास का नाम लिया। पहले तो अकबर ने हरिदास को दरबार में बुलाने का प्रयास किया पर इसमें जब वह सफल न हो सका तो तानसेन के साथ हरिदास की कुटिया में गया। उनका अप्रतिम संगीत सुनने के उपरांत अकबर ने तानसेन से स्वामी हरिदास के गायन के श्रेष्ठ होने का कारण पूछा तानसेन ने कहा था "श्रीमान् मैं शाहंशाह को खुश करने के लिए गाता हूँ पर वे शाहंशाहों के शाहंशाह के लिए गाते हैं।"

इतिहासकार स्मिथ के अनुसार तानसेन की शिक्षा राजा मानसिंह द्वारा स्थापित संगीत विद्यालय ग्वालियर में हुई थी।[2] शिक्षा समाप्त करने के बाद सबसे पहले तानसेन शेरशाह सूरी के पुत्र दौलत खां के दरबार में आए। उनकी मृत्यु के बाद ये रीवां के राजा रामचंद्र के यहाँ गये। वहीं से इनकी ख्याति चारों ओर फैली और तब अकबर ने इन्हें अपने यहाँ बुलवाया। राजा रामचंद्र इन्हें वहाँ जाने देना तो नहीं चाहते थे पर विवश होकर उन्हें भेजना पड़ा और अकबरनामा के अनुसार ये सं० १६१६ में अकबर के दरबार में आये। उस समय इनकी वयस २७ वर्ष की थी।[3]

स्मिथ के अनुसार तानसेन प्रसिद्ध भक्त कवि सूरदास का मित्र था। उस युग के अन्य भी बहुत से प्रसिद्ध व्यक्ति इनके घनिष्ठ मित्र थे।

---

[1] अमर कलाकार तानसेन, बिलावल अंक, संगीत कला, पृ० ५६

[2] अकबर द ग्रेट मुग़ल, पृ० ४३५ [3] अकबरनामा, भाग १, पृ० २७६-८०

तानसेन के विषय में अनेकानेक जनश्रुतियाँ तथा किंवदंतियाँ प्रचलित हैं बैजू बावरा से संबंधित जनश्रुति का उल्लेख 'बैजू बावरा' के परिचय के साथ दिया गया है। अन्य जनश्रुतियों में 'दीपक राग' संबंधी जनश्रुति अधिक प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि अकबर को किसी से पता चल गया कि तानसेन दीपक राग गाता है जिससे बुझा दीपक भी जल उठता है। एकमत से तानसेन के एक विरोधी ने अकबर को यह बात बतलायी जो तानसेन के पूर्व अकबर के दरबार का सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ था। यह सुनकर अकबर ने तानसेन का दीपक राग गाने की आज्ञा दी। तानसेन ने उसे समझाया कि मैं गा तो सकता हूँ पर गाने के बाद मेरा फेफड़ा जल जायगा और फिर मेरा जीना असंभव हो जायेगा अकबर ने एक न सुनी और तानसेन को दीपक राग गाकर बुझे दीपक जलाना पड़ा। पर उसके बाद वही हुआ जो तानसेन ने कहा था। अकबर इससे बहुत दुःखी हुआ। बड़े-बड़े वैद्य और हकीम बुलाये गये पर कुछ न हुआ। अंत में तानसेन दक्षिण गया और वहां किन्हीं दो स्त्रियों ने बादल राग या मेघ राग गाया और तब तानसेन स्वस्थ हो सका।

तानसेन एक उच्च कोटि के संगीतज्ञ होने के साथ-साथ कवि भी थे। संगीत के क्षेत्र में कई दृष्टियों से इनकी देन अप्रतिम है। कुछ लोगों के अनुसार तानसेन ने भारतीय संगीत का बड़ा अपकार किया और उनके बाद से ही उत्तरी भारत की परंपरा के पतन का प्रारंभ हुआ। पर, यथार्थतः यह बात नहीं है। तानसेन के कारण संगीत की उन्नति हुई न कि अवनति। इन्होंने कई नवीन रागों या राग के नवीन प्रकारों को जन्म दिया। राग मल्लार में इन्होंने ही कोमल गांधार और दोनों निषाद को स्थान दिया। मल्लार के इस रूप को तानसेन के ही नाम पर 'मियां की मल्लार' कहते हैं इसी प्रकार 'मियां की तोड़ी' तथा 'दरबारी कानड़ा' भी इन्हीं की देन है।

तानसेन की मृत्यु सं० १६४६ में ६८ वर्ष की अवस्था में हुई।[1]

---

[1] अकबरनामा, भाग ३, पृ० ८१६

आधार ग्रंथ-परिचय

'संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ' में संगृहीत कविताएँ श्री कृष्णानंद व्यास देव द्वारा संकलित 'संगीत राग कल्पद्रुम' के आधार पर हैं। प्रस्तुत संग्रह में 'राग कल्पद्रुम' के जीर्ण-शीर्ण प्रथम संस्करण को मूल आधार बना कर उपयोग किया गया है और दूसरे संस्करण से भी सहायता ली गयी है।

श्री कृष्णानंद व्यास देव प्रथम संस्करण के अनुसार 'गौड़ ब्राह्मण मेवाड़ देश उदैपुर देवगढ़ कोट के रहने वारे' थे। परंतु दूसरे संस्करण के सपादकीय परिचय के अनुसार वे राजस्थान के उदयपुर के जौहैनी नामक स्थान में रहते थे। वे गोकुल-वृंदावन में संगीतशास्त्र की शिक्षा दिया करते थे। उनकी संगीत विद्या से मुग्ध एवं प्रभावित होकर गोकुल के सुप्रसिद्ध संगीताचार्यों सर्वश्री दामोदर गोस्वामी, गिरिधर गोस्वामी एवं कल्याण राय आदि ने उन्हें 'राग सागर' की उपधि दी थी।

श्री व्यास देव ने ३२ वर्षों तक लगातर पूरे भारत में पर्यटन कर "द्वादस लक्ष पचीस हज़ार राग रागिनि के ध्रुवपद, विष्णुपद, ख्याल, टप्पा गीत छंद प्रबंधादि, व्याकरणादि लेकर सर्व शास्त्र संग्रह किया। संस्कृत और सर्वदेश भाषा गान तथा ग्रंथ सज्जन विद्वजनन के आनंदार्थ जानबे के लिए प्रकाश किये हैं।" उन्होने 'कल्पद्रुम' राग के विभिन्न खंडों के प्रकाशन का विवरण इस प्रकार दिया है—

१. सन् १८४२ ई० में राग कल्पद्रुम की सूचना और प्रथमांश 'रंगीन गान मजमूवा' प्रकाशित हुआ।
२. 'सूचनिका के शेष' १६ मार्च सन् १८४२ ई० में प्रकाशित हुआ।
३. 'रंगीन गान मजमूवा' के शेष संवत् १८६६ चैत्र बदि रवि को प्रकाशित हुआ।
४. 'शास्त्रनाम सूचनिका के शेष' २० अप्रैल सन् १८४२ को प्रकाशित हुआ।
५. 'रागरागिणी विवेकाध्याय के शेष' २४ अप्रैल, सन् १८४३ ई० को प्रकाशित हुआ।

६. 'बंगला भाषा रंगीन गान' २३६ पृ० के शेष २६ मार्च, सन् १८४४ ई० में प्रकाशित हुआ।

७. 'ध्रुपद, विष्णुपद, ख्याल आदि गान का शेष' सन् १८४५ में प्रकाशित हुआ।

८. कबीर बीजक के शेष सन् १८४६ ई० में प्रकाशित हुआ।

श्री कृष्णानंद व्यासदेव के अनुसार इसमें ४५ विभिन्न भाषाओं के गीत संगृहीत है। परंतु उन्हें इतनी भाषाओं की जानकारी रही होगी, इसमें संदेह है।

सर जार्ज ग्रियर्सन ने हिन्दुस्तानी भाषा का इतिहास लिखते समय 'राग कल्पद्रुम' का उपयोग किया था। प्रकाशित राग कल्पद्रुम अधूरा ही है। ग्रियर्सन ने मेटकाफ हॉल से उसकी संपूर्ण प्रति प्राप्त की थी।

'राग कल्पद्रुम' को संगृहीत करने की प्रेरणा राजा राधाकांत देव कृत शब्द कल्पद्रुम से उन्हें मिली थी।

श्री नागेन्द्र नाथ वसु के शब्दों में 'रागकल्पद्रुम' कोई "प्रकृत इतिहास या साहित्य ग्रंथ नहीं है, तौभी इस विराट संग्रह ग्रंथ में इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों, धर्माचार्यों और समाज पतियों के नाम मिलने से इसकी आलोचना द्वारा मुसलमान और हिन्दू समाज के विभिन्न समय का अनेक अज्ञात पूर्ण ऐतिहासिक तत्वों को उद्धार हो सकता है।"

परिशिष्ट

अमीर ख़ुसरो

आधो नाम बाप का खुसरो कौन देस की बोली ।
वाका नाम जो पूछा मैंने अपने नाम न बोली ॥१॥
एक नार तरुवर से उतरी मां सों जनम न पाय ।
बाप का नाम जो उससे पूछो आधो नाम बताय ॥२॥
खालिक बारी सरन पनाह ।
गदा भिखारी ख़ुसरो शाह ॥३॥
ख़ुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग ।
तन मेरो मन पीव को दोउ भये एक रंग ॥४॥
गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस ।
चल ख़ुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस ॥५॥
फारसी बोली आईना, तुर्की बोली पाईना ।
हिंदी बोलूं आरसी आये, ख़ुसरो कहे न कोई बताये ॥६॥

तानसेन

अहो टेढ़ी पागरी नागरी नारि सीस धरे जैसे टेढ़ी पाग कूं राखे रहतु कि चिकनिया ।
दुरि दुरि मुरि मुरि बतियां अगिली पछिलिन सों ।
दोउ कर तारी मारति एकनि सों नैनन सों नव बनिया ।
लाही की लहंगा पचरंग चूनरी कंठा छुरा और ताबीज मनिया ।
तानसेन प्रभु रीझि चकित भए तूंही सबनि में धनि धनिया ॥१॥

तुअ मुख और चंद्रमा बिरंचि तुलाकारी तोल्यो
ओछो अकास गयो धुकि धरनी रही निकाई को भारो भरो री पला ।
याहीतें ससि घटत बढ़त है देखि देखि तेरी बदन निर्मला ॥
तो सम नाहिंन पूजिए सब मिलि कलंकी नाम धर्‌यो
निसि भ्रमत फिरत न रहे अचला ।
तानसेन प्रभु रस बस कर लायो रूप आगरी रूपकला ॥२॥

संक्षिप्त सहायक ग्रंथ-सूची

[हिंदी]

अकबरी दरबार के हिंदी कवि	:	सरयू प्रसाद अग्रवाल
ऋतम्भरा	:	सुनीति कुमार चाटुर्ज्या
कालिदास का भारत, भाग २	:	भगवत शरण उपाध्याय
केलिमाल	:	सुदर्शन सिंह
खलजी कालीन भारत	:	रिज़वी
मारिफ़ुन्नग़मात	:	नवाब अली
रागकल्पद्रुम (प्रथम और द्वितीय संस्करण)		कृष्णानंद व्यास देव
संगीत मकरन्द	:	नारद
संगीत शास्त्र, भाग २	:	महेश नारायण सक्सेना
हिंदू सभ्यता	:	रा० कु० मुकर्जी

[संस्कृत]

महाभारत

लघु कौमुदी

[अंग्रेजी]

A Short Historical Survey of the Music of Upper India: V. N. Bhatkhande.

A Treatise on the Music of Hindustan: Capt. Willard.

Folk element in Hindu Culture: B. K. Sarkar.

Hindu Civilization: R. K. Mukarjee.

Indian Concept of the Beautiful: K. S. Ramaswamy Sastri.

Life and work of Amir Khusro: M. V. Mirza.

Music of Southern India: Capt. Day.

Prehistoric Civilization of Indus Valley: K. N. Dikshit.

Ragas and Raginis: O. C. Gangoly.

The Music of India: A. Begum Fyzee Rahmain.

The Pre-Mughal Persian in Hindustan: M. A. Ghani.

Universal History of Music: Surendramohan Tagore.

पाठ संबंधी भूल-सुधार

शुद्ध	अशुद्ध	पृष्ठ	पद
अटल्ल	अल्लट	४६	७
जानत	जनत	४७	८
डागुर	डागर	५१-५६	१-२४
जिन	जिव	५२	८
कूं	कों	५४	१६
तेरा	नेरा	५६	२३
तिरसूल	तरसुल	५६	२४
त्रिपुरारी	त्रपुरारी	५६	२४
रहें	है	८६	७
घन	धन	६२	३४
ढीठ	ढीट	६३	३६
जब	जन	१२८	१६७
चोंप तुम	चोंपमतू	१३४	२२७
दिल	दिन	१३४	२२७
ना तरसो रहसेगी	नातर सोरह सेगी	१३४	२२७

इनके अतिरिक्त ह्रस्व-दीर्घ जैसी अनेक भूलें हैं जिन्हें सुधी पाठक कृपया सुधार लें। इसी प्रकार तानसेन के पदों में दो स्थलों पर ४५ वें और १२७ वें पद के बाद क्रम संख्या संबंधी भद्दी भूल हुई है जिसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।